॥રામ॥

॥ रामकथा ॥

मोरारि बापू

मानस-नागर

जूनागढ (गुजरात)

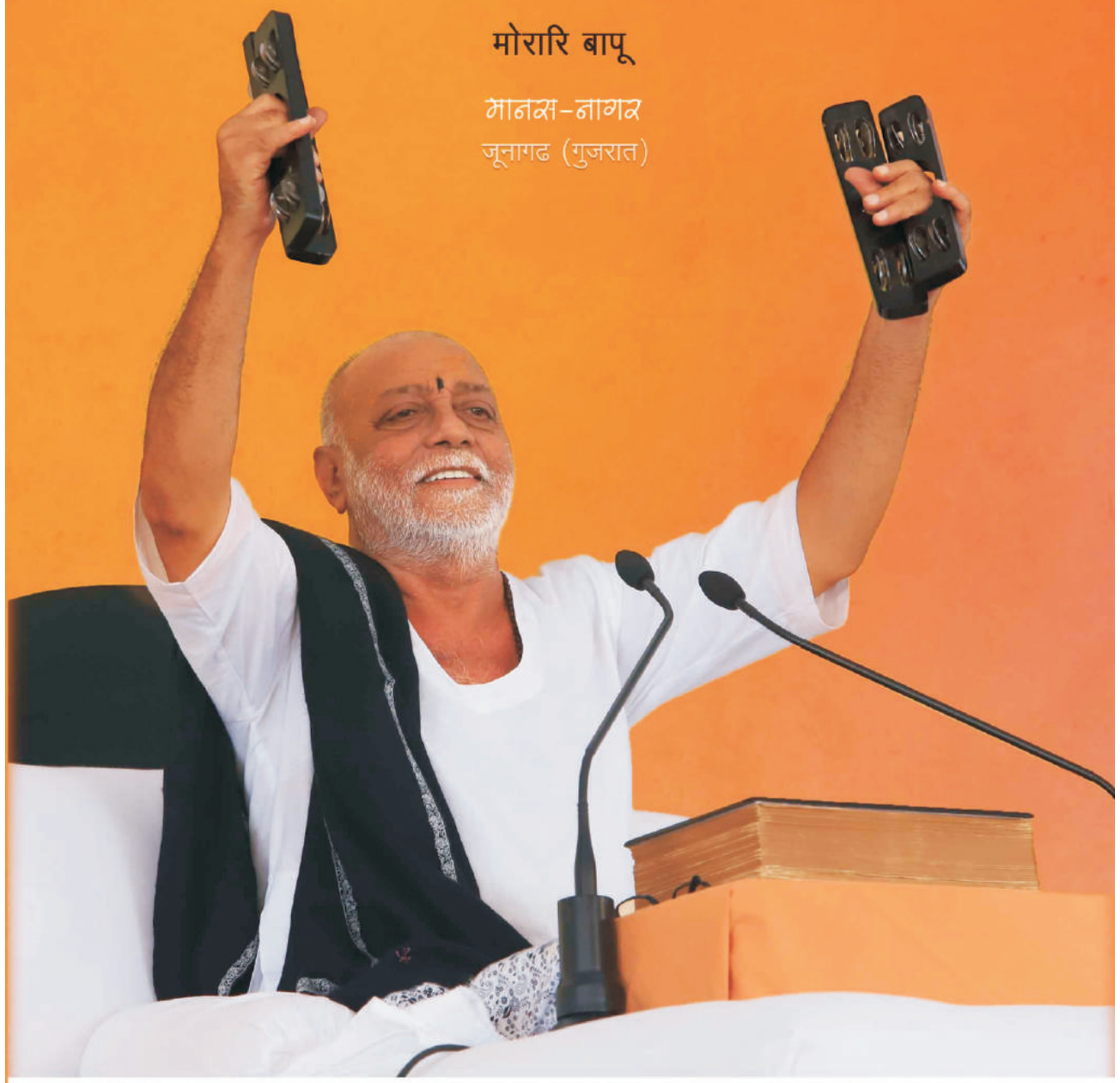

गुन सागर नागर बलबीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा।।

बिनय सील करुना गुन सागर। जयति बचन रचना अति नागर।।

।। रामकथा ।।
मानस–नागर
मोरारिबापू
जूनागढ (गुजरात)
दिनांक : ७-१०-२०१७ से १५-१०-२०१७
कथा–क्रमांक : ८१९
प्रकाशन :
मार्च, २०२२

प्रकाशक
श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट,
तलगाजरडा (गुजरात)
www.chitrakutdhamtalgajarda.org

कोपीराईट
© श्री चित्रकूटधाम ट्रस्ट

संपादक
नीतिन वडगामा
nitin.vadgama@yahoo.com

रामकथा पुस्तक प्राप्ति सम्पर्क–सूत्र :
ramkathabook@gmail.com
+91 704 534 2969 (only sms)

ग्राफिक्स
स्वर एनिम्स

प्रेम–पियाला

गुजराती भाषा के आद्य कवि नरसिंह मेहता– नागर नरसैंया की भूमि जूनागढ (गुजरात) में मोरारि बापू ने दिनांक ७–१०–२०१७ से १५–१०–२०१७ के दिनों में रामकथा का गान किया। 'मानस–नागर' विषय पर केन्द्रित हुई इस कथा में बापू ने विशिष्ट अर्थघटन करते हुए व्यापक फलक पर नागर की पहचान कराई।

कथा के आरंभ में ही बापू ने कहा कि मेरी व्यासपीठ ने पिछले पौने दो साल में दो शिखर सर किये। एक रूखड और दूसरा नागर। इकट्ठे तो दोनों एक ही जगह होनेवाले हैं, लेकिन एक की परंपरा मार्गी है और एक की परंपरा गार्गी। बापू ने ऐसा कहा कि रूखड भी नागर हो सके और नागर भी अनुभव करते–करते रूखड हो सके। और ये दोनों होने की जिनकी तैयारी हो उनको ही अध्यात्ममार्ग में कदम रखना चाहिए।

बापू ने 'भगवद्‌गोमंडल' अंतर्गत दिये गये 'नागर' शब्द के विभिन्न अर्थ प्रस्तुत किये, तदुपरांत बापू ने कहा नागर एक विचारधारा है। कुशल, कोविद, निपुण और विदग्ध को नागर कहा गया है। जो नगर का है वह नागर। सभ्य समाज को नागर कहा जाता है। विवेकी समाज को नागर कह सकते हैं, लेकिन विचारधारा की दृष्टि से देखें तो उज्जवल विचारधारा का नाम नागर है।

नागर को वैश्विक विचार के रूप में अर्थघटित करते हुए और 'नागर' शब्द की अर्थच्छाया को विस्तृत करते हुए बापू ने कहा कि अपने पास रही कला में जो परिपूर्ण कुशल हो उसे नागर कह सकते हैं। कोई बहन–बेटी खाना पकाने में कुशल है तो वह नागर है। कोई गायक गाने में निपुण हो तो वह नागर है। कोई कवि कविता के शास्त्रीय रूप में रहकर कविता का अद्‌भुत सृजन करे तो वह कवि नागर है। कोई चित्रकार केनवास, पींछी और रंग का मर्मज्ञ हो और अपने चित्र में पूरा उतरकर चित्रांकन करे तो वह नागर है।

नागर को केवल एक ज्ञाति के रूप में देखने के बजाय बापू ने एक विचारधारा के रूप में प्रस्तुत किया। 'मानस' के जो पात्रों में यह विचारधारा चरितार्थ होती है ऐसे भगवान शंकर, महाराज जनक, राम–लक्ष्मण, नल–नील, अंगद आदि को नागर का दर्जा दिया और उनमें कहां, कब और कैसे नागरत्व प्रकट होता है वह भी उद्‌घाटित किया।

'मानस–नागर' रामकथा के प्रारंभ में हररोज़ नरसिंह मेहता के एक पद का गान एवम् एक विचारप्रेरक वक्तव्य प्रस्तुत होता था। तदुपरांत कथा के अवसर पर 'कुळ एकोतेर तार्यां रे' नामक प्रदर्शन का आयोजन हुआ था; ग्यारह विरल विभूतियों की वंदना हुई थी और 'कुंवरबाईनुं मामेरुं' नाटक का मंचन भी हुआ था।

जिन्होंने दत्त और दातार के बीच सेतु निर्मित किया है ऐसे नागर नरसिंह के नगर में– गिरनार की गोद में आयोजित 'मानस–नागर' रामकथा में भाव का भीगापन और दर्शन की दिव्यता का सुमधुर सुयोग हुआ।

– नीतिन वडगामा

गागर में सागर समा दे उसका नाम नागर

गुन सागर नागर बलबीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा।।
बिनय सील करुना गुन सागर। जयति बचन रचना अति नागर।।

बाप! भगवान गुरुदत्त की जहां बैठक है और दत्त और दातार के बीच मुझको और आपको पता नहीं चले ऐसे एक सेतु को रच जानेवाला अपना नागरश्रेष्ठ नरसिंह, उसकी ये नगरी है। अभी हाल में ही नवरात्रि का उत्सव पूरा हुआ। मैं भी विंध्यवासिनी की एक शक्तिपीठ में कथा गा रहा था। मुझको कहने में थोड़ा भी संकोच नहीं है कि वैष्णवजन भक्ति की कोई पीठ है तो वो जूनागढ़ है। यहां कथा गाने का मेरा अपना मनोरथ था। मैं जब व्यासपीठ से अचानक ऐसा कहता हूं कि मुझे इस विषय पर, इस जगह पर गाना है, तब समझना चाहिए कि ये मनोरथ तलगाजरडा का है। कोई आकर पूरा करता है, वो मेरे लिए हरि की कृपा है। इसलिए 'मानस-नागर' का बीजारोपण कैसे हुआ वो परम स्नेही आत्मीय भद्रायुभाई ने बात की।

ये नागरी गंगा जूनागढ़ में उतरनेवाली है, इसको धरनेवाला मिला है मुझे जयंती चांद्रा। ये धारा है। गंगा हिमालय से निकली है, ये गिरनार से निकली हुई गंगा है। जयंतीभाई और उनका पूरा 'अतुल परिवार' तो गेंद को पकड़ने के लिए तैयार ही रहता है। मैं गलत गेंद फ़ेंकता हूं इसलिए पकड़ नहीं सकते, बाकी तो सभी कथा ले लेने की उनकी तैयारी होती है। इस यजमान परिवार को नागरी आशीर्वाद है। मुझे बहुत हर्ष हो रहा है। एक तो गिरनार की तराई, जहां दत्त बिराजते हैं और अपने नागरा का नगर है। प्रेमानंद के आख्यान परंपरा का एक टुकड़ा-

नागर नरसिंह मेहतो, जूनागढ़मां भूधर नो भक्त,
कथा कहुं हुं तेनी रे, तमे सांभळजो प्रीते।

सौराष्ट्र का अपना ये संत। उसके लिए आख्यानकार ने लिखा उसमें भी मराठी साखी है। ये सेतुबंध कितना गज़ब का है! तो बाप! इतने पवित्र चरण यहां बिराजमान हैं। किस-किस का नाम लूं? पूरी गिरनारी विभूतियां यहां बैठी हुई हैं। व्यासपीठ से उन्हें मेरा प्रणाम। भिन्न-विभिन्न क्षेत्र के सभी अपने आदरणीय वरिष्ठ इस नागरसभा में आये हुए सभी श्रावक भाई-बहनों, यह नागरसभा है, विधानसभा नहीं है; लोकसभा नहीं है; चुनावी सभा भी नहीं है। इन सभी सभाओं में आचारसंहिता लागू पड़ती है, इसमें आचार और विचार का सर्जन होता है। इस नागरीसभा में आये हुए भाई-बहनों को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम। जय सियाराम।

तो बाप! पौने दो साल के समयावधि में दो शिखरों को पकड़ा है मेरी व्यासपीठ ने। एक रूखड और दूसरा नागर। इकट्ठा तो दोनों एक जगह होंगे ही, परन्तु एक की परंपरा मार्गी है और एक की परंपरा गार्गी। ये लड़की कितना सुन्दर गाती है! व्यासपीठ की प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। समस्त आयोजन के साथ जो अलग-अलग विचारधारा जुड़ी है उसका मैं स्वागत करता हूं। ये 'कुळ एकोतेर तार्यां' ने जो विचार रखा है। साधु, साधु, साधु! मैं बहुत खुश हुआ हूं। ये सब मुझको विशेष प्रसन्नता देता है। और रोज़ एक पद का गान होगा वो भी अपने मेहता का और मेहता के विषय में विद्वान, साक्षर, विवेचक जिन्होंने मेहता पर स्वाध्याय, अध्ययन, अभ्यास किया है वे हम सबको पन्द्रह-पन्द्रह मिनट गागर में सागर समा देंगे। नागर की एक व्याख्या ये भी है कि गागर में सागर समा दे उसका नाम नागर। इसको प्रास में गिने तो प्रास में और ऐसे सात नागर 'रामचरितमानस' में से तलगाजरडा ने खोजा है, जिन्होंने इस विचारधारा को पूरेपूरा जीया है। उनकी बातें मैं आपके साथ नरसैया नागर की अध्यक्षता में करूंगा। कहूंगा 'रामायण' के पात्रों को, पर उसका अध्यक्ष इस नौ दिन के

लिए मेरा नागरा नरसिंह है। वैष्णवजन भक्तिपीठ का आचार्य नरसिंह है।

परम पूज्य आचार्य पुनिताचार्यजी पधारें हैं। मैं खुश हुआ। इन सभी संतों की आशीर्वादक उपस्थिति हैं। उनके मौन आशीर्वाद हमें मिले हैं। उनकी प्रसन्नता हमें अधिक प्रसन्न कर रही हैं। तब रूखड था। और अनुभव से मुझे लग रहा है कि रूखड़ भी नागर हो सकता है। और नागर भी अनुभव करते-करते रूखड़ हो सकता है। ये दोनों होने की जिसकी तैयारी है उसको ही अध्यात्म मार्ग में पैर रखना चाहिए।

इकहतर पीढ़ी का यहां प्रदर्शन है। मैं व्यासपीठ की ओर से प्रार्थना करता हूं कि आप कथा तो सुने और प्रसाद भी लें। समस्त जूनागढ़ को, आसपास के क्षेत्र को निमंत्रित करता हूं कि इसकी फैक्टरी बिकवा दो! इसकी फैक्टरी में मेरा भाग नहीं है! बहुत-से लोग ऐसी अफवाह फ़ैलाते हैं कि ये मोरारि बापू की इतनी कथा करवाता है तो 'अतुल ओटो' में मोरारि बापू का हिस्सा होगा! ये व्यासपीठ से बोल रहा हूं, 'रामायण' पर हाथ रखकर कहता हूं, मेरा भाग नहीं, पर मेरा भाग्य अवश्य है कि ऐसे समर्पित व्यक्ति मेरे व्यासपीठ के पास नतमस्तक बैठे हैं। इसके पास क्या भाग रखूं? समस्त दुनिया जब मेरी है। मैंने अधिकतर कहा है कि मैं जगा नहीं होता हूं तब ये आदमी मेरी कुटिया के बाहर पोछा मार रहा होता है!

तो बाप! रूखड़ से प्रारंभ हुई ये एक अलग ही प्रकार की यात्रा आज 'मानस-नागर' तक पहुंची है इसका मुझे व्यक्तिगत बहुत आनंद है। ऐसा सुन्दर आयोजन है। इसमें कितनी आहुतियां दी हैं इन सबने! और गागर में सबने अपनी-अपनी क्षमतानुसार सागर जैसा आनंद अनुभव किया है। गागर में सागर अर्थात् साईझ में नहीं कह रहा हूं। तुलसी ने जहां-जहां राम को नागर कहा है तब भद्रायुभाई, उसके साथ सागर जोड़ा है। सागर का गागर के साथ संबंध है और ऐसा एक कुंभज जो गागर में से जन्मा है और अगस्त्य सागर पी गये हैं वैसे कुंभज 'रामचरित' को पी गये हैं। उस कुंभज को मैं नागर गिनता हूं। उसकी बात मैं आनेवाले दिनों में करूंगा। सात नागर हैं 'मानस' में।

मेरा तो क्या हुआ जो सात कुल तैर गया! जीवणदास मेहता मूलतः नागर थे। मेरा मूल तो यहां है इसलिए मुझे लगाव है। जीवणदास मेहता कोंजणी के नागर और वो ध्यानस्वामी बापू एक अद्‌भुत संत सौराष्ट्र में आयें। उनके पास जाकर दीक्षा ली, पर उन्होंने कहा कि जीवणदास मेहता यानी नागर हो, एक ज्ञाति में आबद्ध हो परन्तु मैं तो जाति या पाति नहीं, 'हरि केरा देशमां' ऐसा साधु हूं इसलिए दीक्षा तो दूंगा पर एक शर्त पर, तुमको विरक्त नहीं रहना है, तुम्हें गृहस्थ बनना है। कोंजणी में पूरा मेहता परिवार है। कल तक योगेन्द्रभाई मेहता, योगिनीबहन मेहता, जो थियोसोफिस्ट थे। कोंजणी में अभी तक नागर परंपरा के लक्षण है। कोंजणी यानी तलगाजरडा से दो किलोमीटर दूर, बीच में वाया पीठोरिया हनुमान। भीखुदानभाई, वहां कोई बीडी नहीं पीता था। वहां नागर परिवार के सिवाय कोई पान नहीं खाता था। ये लक्षण मैंने अपनी नज़रों से देखा है। अब तो सभी सब कुछ पीते हैं!

वो जीवणदास मेहता मूलतः नागर पुरुष थे। हमारी सात पीढ़ी तैर गई! इकहत्तर तो नहीं परन्तु सात तैर गई। जीवणदास मेहता गृहस्थ हुए और उनके यहां जन्मे नारायणदास बापू, उनके यहां जन्मे प्रेमदास बापू, प्रेमदास के यहां जन्मे रघुराम बापू, उनके यहां जन्मे त्रिभुवनदास दादा और त्रिभुवनदास दादा के यहां जन्मे प्रभुदास बापू और उनके यहां ये मोरारि बापू। हमारा तो सात कुल तैर गये! 'मानस-नागर' में मैं तो नरसिंह मेहता का बड़ा भंडारा करने आया हूं। पूरा जूनागढ़ जिमे। मेरा अनुभव है कि मेहता की तो एक ही हूंडी स्वीकारी होगी। तलगाजरडा की तो मेरे ठाकुर ने अनेक हूंडियां स्वीकार की हैं, उसका इक्कीसवीं सदी में अपना अनुभव आपको कहता हूं।

मुझे जूनागढ़ कोलेज करने की किस लिए इच्छा हुई? जूनागढ़ की अपेक्षा भावनगर नज़दीक था, पर मेरे मन में कहीं था कि आगे पढ़ना है तो जूनागढ़ में पढ़ना है क्योंकि वहां मेरा नागर हुआ। ये मेरी चेतना की आतुरता थी। भले ही बहाउद्दीन कोलेज ने मुझे एडमिशन नहीं दिया! जैसे नरसिंह मेहता पिता के श्राद्ध के लिए जूनागढ़ की बाज़ार में घी लेने निकलें और जब व्यापारियों को पता चला कि इसके पैसे महीनों दिन के बाद वापस आयेंगे, इसलिए फट से मना कर देते थे, उसी तरह बहाउद्दीन कोलेज के प्रिन्सिपाल ने मुझे फटाक से ना कह दिया कि इतना कम मार्क्स और कोलेज! फिर मोरारि बापू ने निश्चित किया कि जूनागढ़ की कोलेज हमें न पढ़ायें तो कोई बात नहीं परन्तु जूनागढ़ जिल्ला में तो पढ़ना है, जहां मेरी नागरी चेतना घूम रही है। इसलिए मैं शाहपुर में पढ़ा। जूनागढ़ जिल्ला ने मुझे पी.टी.सी. बनाया, डीग्रीधारी बनाया। पी.टी.सी. कोई जैसी-तैसी बात है? इसलिए ऐसा मत मानना कि मैं बिलकुल ठोठ हूं! डीग्रीधारी आदमी हूं। डीग्री व्यवहार जगत में चलती है। अध्यात्म जगत में डीग्री नहीं, वृत्ति चलती है।

जेनी सूरता शामळिया ने साथ।

इसीलिए जूनागढ़ के साथ चैतसिक नाता है। अमुक तो ऐसी बात कहनी है जो कभी कही नहीं है। नागर की एक विचारधारा के नाते मैं जब यहां जूनागढ़ आया, शाहपुर से आता था उससे पहले लीली परिक्रमा करने आता था। गिरनार मुझको प्रिय है इसलिए चाहे जब आता तब एक

बार नागरवाडा में से गुज़रना तो होता ही था। मेरे लिए वो गलियां तीर्थ जैसी है। मुझे लगता है कि किसी जन्म में ये जीव यहां लोटापोटा होगा।

गांव के रूप में मुझे तलगाजरडा पसंद आता है वैसा कोई दूसरा गांव नहीं है। दूसरे गांव मुझे माफ़ करें और इस धरती के गोले पर जूनागढ़ नगर पसंद आता है वैसा कोई नगर पसंद नहीं आता। ये मेरे हृदय के उद्‌गार है बाप! इस पर बाद में भाष्य किया करना! समग्र नरसिंह के साहित्य में से कोई एक ही पंक्ति ग्रहण की हो तो, क्योंकि पहले से ही मुझे पता चल गया था कि लोगों की शुभेच्छा बढ़ेगी, संतों का आशीर्वाद बढ़ेगा; गुरु की कृपा बढ़ेगी; थोड़ा-बहुत भजन बढ़ेगा; गुरु के दिए बल से उस दिन दुनिया न कहने जैसा बोलेगी! तब नरसिंह कि एक पंक्ति रटता रहता था कि-

एवा रे अमो एवा, तमे कहो छो वळी तेवा रे,
भक्ति करतां जो भ्रष्ट कहेशो तो करशुं दामोदरनी सेवा रे।

इसने (पोथी ने) बहुत बल दिया है मुझे। अभी भी नागरवाडा में से मैं अकेले निकल जाऊं यदि मुझे जाने दे तो। परन्तु अब कोई मुझे जाने नहीं देगा, नहीं तो नागरवाडा का रास्ता मुझे पता है। कोई चेतना मुझ को खींचती रहती है, जो हो सो! जीवणदास मेहता का प्रताप है। हमारी पीढ़ियों के पूर्वज नागर हैं उसका भी थोड़ा खींचाव होगा और फिर रूखड़ अवस्था। इसलिए यह मार्गी और गार्गी का युगपद निर्वाह मेरी व्यासपीठ कर रही है।

यहां मेरे लिए पांच 'ग' का आकर्षण है इसलिए मेरी व्यासपीठ 'मानस-नागर' को लेकर आई है। मैं सबकुछ दिल से ही कहता हूं, पर यहां बहुत-सी बातें करनी हैं आपके साथ। और सभा भी नागरी सभा है, कुछ विशिष्ट सभा है। यहां के पांच 'ग' ने मुझको प्रभावित नहीं किए, स्वाभाविक किए है। किसी के प्रभाव में आना ये अच्छा नहीं है। अपने स्वभाव में जीना उत्तम है। पहला 'ग' गुरुदत्त का 'ग।' इतनी ऊंचाई पर पहुंचने पर जहां से शुभ मिले लेने की तैयारी। चौबीस लोगों के पास से मिले तो वहां से ले लेना चाहिए। 'आनो भद्रा क्रतवो यन्तुविश्वतः।' ऐसा गुरु मुझे पसंद है। शिखरस्थ भगवान गुरुदत्त का 'ग' मुझको पसंद है। तलगाजरडा का 'ग' तो मूल में है ही।

दूसर गगन का 'ग' मुझे बहुत पसंद है। कल मैं गिरनार की परिक्रमा में गया था। पोथीजी को मैंने परिक्रमा करवाई। पहले तो लीली परिक्रमा मैंने नियमानुसार की है। चलकर की थी। कंकूद लगे थेपला खाये थे! फिर अमरदास बापू और हमारी की हुई उसमें थोड़ी चलते हुए और थोड़ी-थोड़ी गाडी में गये थे, ऐसी परिक्रमा की थी। गतकल हमने गाडी में पूरे गिरनार और दातार की परिक्रमा की तब मैंने कहा था कि जंगल में चबूतरा है वहां चटाई डालकर मुझे कोई सोने दे तो मैं ज़िंदगीभर उसका ऋणी रहूंगा। क्योंकि मुझे गगन का 'ग' पसंद है। 'छांदोग्य उपनिषद' कहता है, हमको अल्प में रस नहीं है, हमको विशाल में रस है। 'न अल्पे सुखम् अस्ति।' इस जगत में गगन से विशाल दूसरा क्या है? इसलिए अपना सवा भगत कहता है, रमण करना है तो इस मैदान में नहीं, वहां ग्राउन्ड में नहीं परन्तु गगनगढ़ में रमण करने आओ।

'ग' गुरु का पसंद है; गगन का 'ग' पसंद है। समग्र शब्द का दूसरा 'ग' पसंद है वो है 'नागर।' जिसमें बीच में 'ग' आता है। तीसरा अक्षर 'ग' आता है जूनागढ़ का वो पसंद है। अंतिम 'ग' आता है वो है 'राग।' और राग है केदार। केदार का गोत्र, उसकी जाति किसी संगीतज्ञ से पूछे तो बता सकता है परन्तु मेहता ने गाया तब से वो वैष्णवी राग बन गया। यानी अमुक 'ग' का आकर्षण यहां एकत्रित हुआ है इसलिए 'मानस-नागर' है। भद्रायुभाई ने कहा कि मीरां ने कृष्ण को नागर कहकर संबोधित किया है, मेहता ने उन्हें नागर कहा। बहुतों ने उनको नागर कहा है। तुलसी ने राम को नागर कहा परन्तु वैष्णव के जो अठारह लक्षण बताएं जब कि व्यासजी तो कृष्ण की विभूति के वर्णन में कहते हैं कि कृष्ण बोले, वैष्णवों में शंकर मैं हूं। तो शंकर भी नागर है न? शंकर तो दोनों है। रूखड़ और नागर। युगपद निर्वाह है। महादेव नागर है, हाटकेश्वर नागर है। मैं आज सब जगह दर्शन कर आया हूं। पोथीजी गिरनार की सीढ़ी पर गई वहां हनुमानजी बैठे हैं। फिर भवनाथ मंदिर और वहां दामोदर कुंड में आचमन किया जहां मेरा मेहता नहाता था, वहां ठाकुरजी के मंदिर में पोथीजी को ले गए। वहां से हाटकेश्वर भगवान का दर्शन करने हम आयें।

बड़ौदा में आखिर में मुझे नरसिंह मेहता पर बोलना था तब मैंने कहा कि नरसिंह मेहता को नागर जाति ने बिरादरी से बाहर किया! गांधीजी को उनके सबने जाति से बाहर किया! साधु बावा बन जाओ, कोई जाति से बाहर ही नहीं करेगा! आप वर्ण में रहोगे तो ज्ञाति बाहर करेंगे। जाति-पाति में रहोगे तो तो बहुत संभावना है। साधु बावा को, साधु को कोई बाहर कर ही नहीं सकताा। साधु कोई जाति-पाति ही नहीं है, वर्ण ही नहीं, वो सबसे बाहर है। मैंने वहां कहा और सभी जगह कहा कि जितने भी महान हुए हैं उनको उसके समाज ने या तत्कालीन समाज ने, ज्ञाति ने बिरादरी से बाहर किया है कि ये आदमी ठीक नहीं है।

मेहता को छः सौ वर्ष हुए। उस समय इतनी बड़ी सामाजिक क्रांति करना ये इस नागर के सिवा कौन कर सकता था? आखिरी आदमी के घर जाकर भजन करता, पर उसने कर दिखाया। फिर जो कुछ हुआ और उनको जाति से बाहर निकाला गया। परन्तु मुझे हमेशा लगता है

अंत:करण की प्रवृत्ति रूप में कि नागर समाज ने नरसिंह मेहता को जाति से निकाला उसमें हाटकेश्वर की इच्छा थी क्योंकि 'रामचरितमानस' में ऐसा लिखा है, 'बुद्धि प्रेरक शिव।' बुद्धि को प्रेरणा देता है उस परमतत्त्व का नाम शंकर है। तो भगवान शंकर ने समाज को ऐसी बुद्धि दी होगी कि ये एक जाति या वर्ण में समायें ऐसा नहीं है! इसको अपने घेरे से बाहर निकाल दो, इसको वैश्विक बना दो। और नागर समाज को प्रेरणा हाटकेश भगवान ने दी होगी और नरसिंह को जाति से बाहर किया। वो नागरवाडा से निकल कर वैश्विक बन गया और जो रह गया था उसको गांधी बापू ने उनके पदों को समस्त विश्व के चौक में रख दिया।

तो हम सब केदार की बात कर रहे थे। उस 'राग' का 'ग'कार भी मुझे पसंद है। जिस राग से कृष्ण आते हैं! आज बहुत-से लोग कहते हैं कि ऐसा हुआ होगा? क्यों नहीं हुआ होगा! कुछ वस्तु बुद्धि से नहीं स्वीकृत होती। केदार को पूरा वैष्णवी राग बना दिया। संगीतज्ञ तो इसका गोत्र मूल अलग-अलग कहते हैं। एक मेहता ने गाया इससे वो कृष्ण का राग बन गया। इसलिए महत्त्वपूर्ण राग है। इस भूमि में मेहता ने ऐसा गाया कि हरि को आना ही पड़ा। तो यह राग इस भूमि ने ऐसा सिद्ध किया है कि परमशुद्ध- परमतत्त्व को प्रगट होना पड़ा। अर्थात् अमुक 'ग'कार इस भूमि के है जो मुझको खींचते हैं। इतने वर्षों से संतों की कृपा और आशीर्वाद से कथाएं गा रहा हूं पर किसी भी कथा में मैं आठ रात्रि ही रहता हूं। कभी अगली रात्रि को चला आता हूं तो बढ़-बढ़ के नौ रात्रि होती हैं। यहां मैं ग्यारह रात्रि रहनेवाला हूं।

तो ऐसी वैष्णवी भक्तिपीठ का जो परम आचार्य है ऐसे नरसैया की भूमि पर 'मानस-नागर' कथा आरंभ हुई है। 'नागर' का बड़ा लक्षण हेमंतभाई, ये है कि किसी नागर को आप भीख मांगते हुए नहीं देखेंगे। देश-काल कभी-कभी असर करता है। ब्राह्मण को भिक्षुक कहते हैं, परन्तु नागर मांगता हो ऐसा नहीं दिखेगा। वो मांगेगा तो हाटकेश से मांगेगा। रामादेव से मैं मांगूगा? मांगूगा तो हाटकवाले देव से ही मांगूगा, स्वर्णिमदेव से मांगूगा।

'हाटक' भी सोना की लंका है इसका प्रमाण मेरे पास नहीं है पर अंत:करण की प्रवृत्ति को यदि प्रमाण माना जाएं; अब तो मैंने अंत:करण की प्रवृत्ति भी बंद कर दी है। अपने अंत:करण का क्या भरोसा? इसलिए अब मैंने नवीन अनुभव व्यक्त करना शुरू किया है कि साधु के अंत:करण की प्रवृत्ति ही प्रमाण नहीं, साधु के भजन का प्रमाण श्रेष्ठ है। और ऐसा कोई अधिकार संतों की कृपा से है तो मैं कह सकता हूं कि भगवान शंकर नित्य जब सोने की लंका में पुजवाने जाते होंगे तब कभी रावण ने कहा होगा कि आज आप कैलासेश्वर नहीं पर हाटकेश्वर है, क्योंकि आप सोने की लंका में है अभी, और आपका मैं चेला हूं। और मैं भी ऐसे हाटकेश्वर की आराधना करता हूं। इसका प्रमाण नहीं है। इसका प्रमाण शायद मिलेगा सही, कहीं से निकलेगा ज़रूर, चाहे देर से मिलेगा। न निकले तो तलगाजरडा को पर्याप्त समझना।

कैसी धारा को संभाला है! मैं हाटकेश्वर भगवान के दर्शन करने गया तब पूछा कि कितने वर्ष हुए हैं? तो बोले, इतने वर्ष हुए हैं। तो मैंने कहा कि नरसिंह मेहता भी कभी जल चढ़ाने आते होंगे न यहां? हरिहर धारा है यहां। कितनी धारा का सेतु बना है ये नागरा! 'नागरा' कह रहा हूं, माफ़ करना, पर मेरे हृदय के शब्द है। मेरा अपना मानकर कह रहा हूं। नहीं तो किसी को शिष्टता में ऐसा लगेगा कि ये नागर को नागरा क्यों कह रहे हैं! मुझे ऐसा हुआ था, 'कबीरा-कबीरा' कहता था इसलिए एक कबीरपंथी की आंख तिरछी हुई! डाकोर की कथा की बात है। कबीर मुझे पसंद है साहब! ये नागर मुझे इसलिए पसंद है कि मेहता का कुल है मतलब धारा में मिलाना चाहिए, एक ज्ञाति के रूप में हो तो भी मुझे नागर पसंद है। नागर के प्रति मुझे पक्षपात नहीं पर प्रेमपात है। साधु को कोई पक्षपात नहीं होता परन्तु प्रेमपात है, एक भावधारा बहती है उसे मैं क्यों रोकूं? अधिकतर बहुत-से लोग ऐसी बातें करते हैं कि हमें तो चुप होकर सुनना ही पड़ता है! मेरी उपस्थिति में ऐसा कहते हैं कि मैं और मोरारि बापू साथ में पढ़ते थे इस जगह! हराम यदि मैं वहां पढ़ा होऊं तो! पर हमारी हाजिरी में ही ऐसा कहते हैं तो चुप रहकर सुना करता हूं और हंसना पड़ता है! मेरी गैरहाज़िरी में तो क्या-क्या कहते होगें!

अभी-अभी मुझे दो दिन से पता नहीं ऐसा कुछ-कुछ होता है कि मुझको एक बार ऐसा करना है कि कोई अच्छी से अच्छी गाली दे, इससे बाकी के सभी अपमान होगें वो छोटे लगने लगेगें। हमको कहते कितनी देर लगती है कि 'अेवा रे अमे अेवा रे, तमे कहो छो वळी तेवा रे।' 'तुल्यनिन्दा स्तुतिर्मौनी।' पुलिस विभाग को न आती हो, देवीपूजकों को न आती हो ऐसी गाली दे, ऐसा मनोरथ है! वैसे भी पीछे से तो सब देते ही हैं! पर उसमें मज़ा नहीं आता क्योंकि शास्त्र कहते हैं कि पीठ से अधर्म जन्मा है, छाती से धर्म जन्मा है। सामने आकर कहता है उसका सन्मान होता है, पीछे से तो अधर्म जन्मा है।

तो बाप! अपना बहुत ही आनंद व्यक्त करता हूं। जिस तरह कथा को रूप दिया है। मुझको पहले ही दिन लगता है कि ऐसा ही रूप देना चाहिए 'मानस-नागर' को। ऐसा सुन्दर आयोजन हुआ है। यहां नागर परिवारों का आशीर्वाद हैं, लोगों को उत्साह हैं। मेरे पास मांग तो ऐसी आई कि पूरी दुनिया तरसती है कि हिन्दी में करना कथा। पर मेरे आद्यकवि की भाषा गुजराती है और गुजराती में कहूंगा तो ही ओर अच्छा लगेगा। और मैंने पूरी दुनिया को गुजराती सुनना तो सीखा दिया है! वो मेरी गुजराती समझ सकते हैं इसलिए अड़चन तो नहीं आयेगी। थोड़ी देर मुझको भी लगा कि हिन्दी में कहूं, परन्तु अपनी भाषा का आद्यकवि और उसी भाषा में उसको वंदन करने के लिए हम सब एकत्र हुए हैं। बाप! आप सभी को, निमित्त मात्र यजमान परिवार को प्रणाम। और मेरी व्यासपीठ न्योता देती है कि कथा सुनने आना, सुनाई दे उतना सुनना, नहीं तो बगल में ही रसोई है, उसका लाभ भरपूर लेना। सभी को एक साथ न्योता है। संख्या के लिए नहीं कह रहा हूं। संख्या मैंने बहुत देख ली है। चित्रकूट में पांच आदमी बैठे हो और एकाद घंटे बातें करें वहां मेरी एकाद कथा हो जाती है, जिसको मैं गिनती में नहीं लेता। मेरे यज्ञकुंड के पास तीन आदमी बैठे हो और बीतती रात में बातें कर रहे होते हैं तो मेरे लिए कथा जितना ही महत्त्व है। संख्या के साथ मुझे लेना-देना नहीं है। फिर भी आप इतनी संख्या में कथा श्रवण के लिए लालायित है ये भी एक आनंद है। आप सभी आना।

ये नागरसभा है, नागरी कथा है इसलिए हम नौ दिन तक 'मानस-नागर' को लेकर बात करेंगे। कदाचित् तेरह बार 'मानस' में 'नागर' शब्द का तुलसी ने प्रयोग किया है। भूल-चूक माफ़ करना। उसमें सात बार 'नागर' के साथ 'सागर' शब्द जुड़ा हैं। अर्थात् सागर के जितने लक्षण हैं उतने नागर के लक्षण हैं। और नागर के लक्षण है उतने सागर के लक्षण हैं। ये सभी निभाया जा सके ऐसे लक्षण हैं। हम पहुंच न पाएं वैसे नहीं है, पर हमको ही वामन रहना हो तो परमात्मा बचायें। थोड़ा ऊंचा उठें, थोड़ा ठाकुरजी हमको ऊंचा करेंगे तो हम उस फल तक पहुंच सकेंगे।

एक प्रवाही परंपरा के अनुसार मंगलाचरण करके आज की कथा को विश्राम दूंगा। 'रामचरितमानस' के विषय में किसको पता नहीं होगा? इससे कौन अनजान होगा? लेकिन पहले दिन जिस सद्ग्रंथ की कथा होती है उसका माहात्म्य कहा जाता है। इसका अर्थ तलगाजरडा ने ऐसा किया है कि वक्ता को जिस सद्ग्रंथ की बात करनी है उस ग्रंथ का परिचय देना होगा। चमत्कारपूर्ण नहीं, साक्षात्कारपूर्ण। ग्रंथ का परिचय चमत्कार में भी दिया जाता है। परन्तु चमत्कार में मेरी रुचि नहीं है ये पूरी दुनिया जानती हैं। साक्षात्कार कराना कि इसके पात्र और प्रसंग कैसे हैं, ग्रंथ कितने विभाग में विभक्त हैं? वाल्मीकि ने जो लिखा उसका नाम 'रामायण' है। तुलसी ने जो ग्रंथ लिखा, जिसके आश्रय में मैं बोल रहा हूं वो 'रामचरितमानस' है। तुलसी लिखते हैं-

रामचरितमानस एहि नामा।
सुनत श्रवन पाइअ बिश्रामा।।

'रामचरितमानस' का श्रवण करने में चोकलेटरूपी चमत्कार नहीं बताएं, स्वर्गप्राप्ति, पुण्यप्राप्ति के लिए कथा नहीं शुरू की, केवल प्रेमप्राप्ति के लिए कथा शुरू की है। प्रेम भी कमाना नहीं है, प्रेम देना है, इसलिए ये कथा आरंभ हुई है। इसका नाम 'रामचरितमानस' है। आदिकवि

वाल्मीकि ने लिखा वो 'रामायण' संस्कृत में है। वो 'श्लोक' और ये 'लोक।' भगवान शंकर अनादि कवि इसके सर्जक हैं। भगवान शंकर ने व्यवस्था की कि मेरे द्वारा रचित ये 'रामचरितमानस' ग्रंथ अलमारी में रखोगे? छोटा-सा गुटका अपने पर्स में रखोगे? इस ग्रंथ का ठिकाना है हृदय। अपने हृदय में इसको रखना, इसको एतबार की अलमारी में रखना, इसको भरोसे के भवन में स्थापित करना।

मैं तो खुल्लेआम कहता हूं कि आप कथा सुनोगे यानी आपको स्वर्ग मिलेगा ही नहीं। स्वर्ग की इच्छा ही आपकी खत्म हो जाएगी। कथा सुनोगे यानी पुण्य कमाओगे? पुण्यशाली तो है ही इसलिए कथा में आए हैं। तुलसी कहते हैं, इसे आप कान से सुनोगे तो आपको विश्राम ज़रूर मिलेगा। कितना मिलेगा वो हमारी कक्षा है। परन्तु श्रोताओं को विश्राम मिलता ही है, नहीं तो सुनने नहीं आते। आज लाईव टेलिकास्ट है फिर भी लोग क्यों यहां आते हैं? घर पर पैर पसारकर चाय पीते-पीते नहीं सुनते? लेकिन अभी भी मंडप में ही सुनना है। इसका अर्थ है लोगों को सुनने में रुचि हैं। आलोचक भले ही कहे कि कथा में क्या मिलता है? वो लोग बेचारे आये ही नहीं! तो बाप! विश्राम मिलेगा। रूपाला साहब ने ठीक ही सुध लिया कि ये माध्यम बहुत बड़ा काम कर रहा है। विश्राम मिलता है, हमको तो भरपूर मिलता है।

सात सोपान हैं। वाल्मीकि ने उसे 'कांड' नाम दिया है। हम सब कहते रहते हैं कि प्रथम कांड 'बालकांड', पर तुलसी में 'कांड' शब्द नहीं, सोपान है। एक सीढ़ी है साधना की, ऊर्ध्वगति की। परम तक पहुंचने के लिए सात पायदान की ये सीढ़ी हैं। तुलसी ने घर-घर ये सीढ़ी लगा दी है कि पहुंच जायेगा और पाकर उसी सीढ़ी से समाज के बीच आकर जो पाया है उसको बांटता होगा। ऐसी सुन्दर ये सीढ़ी है, जिसमें ऊर्ध्वगति भी है और समाज के बीच में भी रहना है।

ऐसे सात सोपान रचे हैं। उसमें पहला सोपान जिसके मंगलाचरण में सात श्लोक संस्कृत में लिखे हैं। शंकर भगवान की वंदना है; माँ भवानी को याद किया है; गणेशजी को, हनुमानजी को, सीता-राम को याद किया है, किन्तु मुझको दो बातें बहुत ध्यान खींचती है कि शुरूआत की तब पहले वाणी को नमन किया है, 'वन्दे वाणी विनायकौ।' आज तक वेदवाणी से लेकर संतों तक ये वाणी चलती है। हनुमानजी तो प्रधान श्रोता है। इसमें भी तुलसी ने जब वंदना की तब पहले कवीश्वर को नमन किया है, फिर कपीश्वर को। वाणी और कवि को प्रधानता दी है।

सात मंत्रों में वंदना की है। फिर श्लोक को लोक तक उतारने के लिए तुलसी ने लोकबोली का आश्रय लिया। जिस प्रकार कबीर साहब सधुक्कड़ी में बोले; भगवान तथागत बुद्ध अपनी भाषा में बोले; महावीर अपनी भाषा में बोलकर लोक तक पहुंचे, वैसे तुलसी ने पांच सोरठे में लोकबोली में कथा का प्रारंभ किया है। पंचदेवों की स्तुति की। आदि जगद्गुरु शंकराचार्य का विचार वैष्णव ग्रंथ में लाकर तुलसी ने सेतु किया। गणेश, दुर्गा, शंकर, भगवान विष्णु और सूर्य इन पांचों का स्मरण किया। पांचों जिसमें आ जायें यदि निष्ठा और भरोसा हो तो ऐसे गुरु की वंदना की। आश्रित के लिए गुरु गौरी है। व्यक्ति रूप में नहीं किन्तु पद की तो बहुत बड़ी महिमा है। और गुरु व्यक्ति में थोड़ा समायेगा? वो तो 'गगनसदृशं' है। आकाश जितना फैला होता है इसीसे व्यक्ति में विकसित हो रहा व्यक्तित्व अस्तित्व तक पहुंच जाये तब समझना चाहिए कि हमको कोई त्रिभुवन गुरु मिल गया है। ऐसी गुरु की महिमा तुलसी ने 'रामचरितमानस' के पहले प्रकरण में गाई है, जिसको तलगाजरडा 'गुरुगीता' कहता है। उसकी पंक्तियां-

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा। सुरुचि सुबास सरस अनुरागा।।
श्रीगुरु पद नख मनि गन जोती। सुमिरत दिब्य दृष्टि हियँ होती।।

'मानस' का प्रथम भाग जो चौपाई में शुरू होता है उसमें गुरु महिमा का गान है। तुलसी कहते हैं, अपने गुरु की चरणरज से अपने नेत्रों को शुद्ध करके मैं 'रामचरितमानस' का वर्णन करने जा रहा हूं। वचन की छूट उसीको है जो गुरुकृपा से नयन को शुद्ध किया हो। जिसके नयन शुद्ध नहीं है उसके वचन भी भ्रामक होंगे। प्रभाव डालेगा पर स्वभाव का दर्शन नहीं कराएगा। अपने गुरु की रजमात्र कृपा से अपने नेत्रों को शुद्ध करके रामकथा गाने जा रहा हूं। पर गा नहीं सके। कितना बड़ा प्रकरण बीच में आ गया! संकल्प होता है रामकथा गाने का, पर पहले पृथ्वी के देवताओं को, ब्राह्मणों को प्रणाम किया है। समाज के सज्जनों को, महाजनों को वंदन किया। फिर साधु समाज को वंदन किया। साधु समाज की प्रयाग के साथ तुलना करके उसकी बातें की। दुर्जनों, सज्जनों, असुरों, निशिचर, खल, शठ, सभ्य, असभ्य सबको तुलसी ने प्रणाम किया।

मुझे दो वस्तु बहुत दृढ़ होती जा रही हैं। एक वस्तु तो बहुत पहले से दृढ़ हुई थी कि हमको दूसरा कोई निकृष्ट है और श्रेष्ठ है, असुर है और सुर है ऐसा दिखता है तब तक पहली वस्तु निश्चित करना चाहिए कि अपनी आंख पवित्र नहीं हुई है। और अब कहना शुरू किया है कि जब तक हमको दूसरा हल्का दिखता है तब तक समझना चाहिए कि अपना मन संपूर्ण पवित्र नहीं है, नहीं तो नरसैया ऐसा न कहता, 'सकल लोकमां सहुने वंदे।' मुझे कहने में बिलकुल भी अतिशयोक्ति नहीं लगती कि तुलसी की अपेक्षा मेहता आगे है। उन्हें छः सौ होने जा रहा हैं। तुलसी साढ़े-चार सौ या पांच सौ के बीच हैं। इसीसे नरसिंह मेहता के

कितने ही सूत्र तुलसी ने अपनी चोपाई में उतारा है ये कहने में मुझे बिलकुल तकलीफ़ नहीं है। और चैतसिक योग कहां के कहां होता है वो पता नहीं। तुलसीदास गुजराती में आये या नहीं ये मालूम नहीं पर गुजरात के घर-घर में 'रामायण' आई है, पूरी दुनिया में गई है। किन्तु महापुरुषों का कहीं न कहीं योग होता है।

परदुःखे उपकार करे ने मन अभिमान न आणे रे।
पर उपकार बचन मन।

नरसिंह महेता की सभी पंक्तियों को 'रामायण' के गायक के रूप में आपकी कृपा से कहूं तो नरसिंह के पदगान की छाया में आई होंगी ऐसा कहने में मुझे थोड़ी भी तकलीफ़ का अनुभव नहीं है। अपनी पसंद का सद्ग्रंथ हो उसका बिलकुल झूठा बखान करके सर्जक को बड़ा नहीं करना चाहिए। इसमें तुलसी प्रसन्न होंगे। तुलसी की तथाकथित परंपरा कदाचित् प्रसन्न न भी हो। मैं गिन-गिनकर आपके समक्ष रखूंगा कि नरसिंह की बहुत-सी पंक्तियां और 'रामायण' की चौपाई समान है। मैंने एक जगह प्रवचन किया है। सभी सूत्रों को तुलसी की चौपाई के साथ रखा है। बड़ाई नहीं करनी चाहिए पर स्वीकार करना चाहिए। आध्यात्मिक जगत में मुझसे कोई पूछेगा तो कहूंगा कि स्वीकार जैसा कोई महामंत्र नहीं है। इन्कार में घर्षण है, स्वीकार में शांति है। हमें अपना विचार प्रस्तुत करना चाहिए। सामनेवाला आदमी कहे कि मैं नहीं मानता तो बात छोड़ देनी चाहिए हमें। स्वीकार कीजिए।

सकल लोकमां सहुने वंदे।

नरसिंह महेता का है, पर मूल तो 'उपनिषद' में से आया होगा न? 'सर्व खलु इदं ब्रह्म।' ये सब ब्रह्ममय है। शास्त्र तो कहते हैं, यहां जिसकी आंख खुल गई उसको अशुभ दिखता ही नहीं, सब शुभ हैं। नयनदोष होगा वो ऐसा कहेगा कि इसका रंग पीला है। जिसका नयन शुद्ध है उसे पीला रंग नहीं दिखता। उसको वस्तुतः जो रंग होगा वही दिखेगा। पूरा जगत तुलसी को ब्रह्ममय भाषित हुआ हैं। तुलसी ने सभी को वंदन किया और फिर इस ग्रंथ का और मुख्य पात्रों का परिचय देते-देते सबसे पहले परिचय माँ कौशल्या का दिया है।

तो बाप! पूरा जगत ब्रह्ममय लगता है। और मैं अपने श्रोताओं को हृदयपूर्वक कहता हूं कि जब तक दूसरा आपको आपसे छोटा दिखता है कि ये मेरी अपेक्षा कम पढ़ा है, या इसकी पदवी नीची है; या जाति-पाति नीची है, तब तक याद रखना कि आपका या मेरा मन शुद्ध नहीं हुआ। जब मन शुद्ध होगा तब पूरा जगत ब्रह्ममय भाषित होगा। जिसकी आंख खुलती है उसे पता है कि सबकुछ शुभ है। अशुभ कुछ नहीं है। तुलसी को यह ब्रह्ममय दृष्टि मिली। उसने सबका वंदन किया।

माँ कौशल्या को तुलसी ने प्राची दिशा कहा है। ये महिला नहीं पर महिमा है। मेरे देश की माँ महिमावंत होती है। तुलसी ने उसे पूर्व की दिशा कहा है। और कदाचित् ये ही विचार आया-

उगमणा ओरडावाळी, भजुं तने भेळियावाळी,
सोनल मा आभकपाळी, भजुं तने भेळियावाळी।

चैतसिक संबंध कहां-कहां आता है वो देखिए! जिसका कपाल ऐसा होगा उसमें तो चन्दा भी छोटा पड़ेगा, सूरज भी छोटा पड़ेगा। अविनाश व्यास भी नागर। वो तो उसका कंकु झरे यानी सूरज उगे-

माडी तारुं कंकुं खर्युं ने सूरज ऊग्यो,
जग माथे जाणे प्रभुताए पग मूक्यो,
कंकुं खर्युं ने सूरज ऊग्यो।

तो कौशल्या की महिमा गाई। अन्य रानियों को प्रणाम किया। दशरथजी को रामप्रेमी की भांति स्थापित किया और फिर महाराज जनकजी का परिचय दिया कि जिसने अपने योग को भोग में छिपा रखा ऐसे विदेहराज जनक को प्रणाम करता फिर संत भरत को, लक्ष्मण को, शत्रुघ्न को वंदन किया। सीता-राम को अंत में प्रणाम किया है। बीच में हनुमान को प्रणाम करते हैं। पहले दिन की कथा हनुमंत वंदना से पूरी करता हूं। तुलसीदासजी हनुमानजी की वंदना करते हैं-

महाबीर बिनवउँ हनुमाना।
राम जासु जस आप बखाना।।
प्रनवउँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यान घन।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर।।

तुलसी की 'विनयपत्रिका' का पद-

मंगल-मूरति मारुत नंदन। सकल अमंगल मूल निकंदन।।

तो वंदना प्रकरण में हनुमानजी की वंदना की। तत्पश्चात् क्रम में सखाओं की वंदना हैं। फिर सीता-रामजी की वंदना की। और नौ दोहे में अर्थात् बहत्तर चौपाई में नाम महिमा गाई है।

पौने दो साल की अवधि में दो शिखरों को पकड़ा है मेरी व्यासपीठ ने। एक रूखड और दूसरा नागर। इकट्ठा तो दोनों एक जगह होंगे ही, पर एक की परंपरा मार्गी और एक की परंपरा गार्गी। नागर की एक व्याख्या ये भी है कि गागर में सागर समा दे उसका नाम नागर। इसे प्रास में गिनो तो प्रास में और ऐसे सात नगर 'रामचरितमानस' में से तलगाजरडा ने खोजा है, जो इस विचारधारा को भरपूर जी गये हैं। उनकी बातें मैं आपके साथ नरसैया नागर की अध्यक्षता में करूंगा। कहूंगा 'रामायण' के पात्र पर उसका अध्यक्ष ये नौ दिन के लिए मेरा नागरा नरसिंह है। वैष्णवजन भक्तिपीठ का आचार्य नरसिंह है।

नरसिंह मेहता सभी मतों को एक में समाकर बैठे हुए प्रेमाद्वैती है

'मोंघामूलनां मानवी', ऐसे एक सुन्दर खूबसूरत ग्रंथ का विमोचन हुआ नरसिंह की भूमि पर। मेरी दृष्टि से जिसने यह ग्रंथ अर्पित किया वो व्यक्ति भी बहुमूल्य मनुष्य है। उसका सौजन्य, विद्वत्ता के साथ दो कदम आगे चलनेवाला विनय; 'जय माताजी' कहता हूं बाप! बहुत प्रसन्न हुआ हूं। एक ही व्यक्ति में एक साथ बहुत कुछ हो ये बहुत कम होता है। और ऐसी एक मौजूदगी, आदरणीय मेरे परम स्नेही वसंतभाई गढवी है। अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं; विनय को वंदन करता हूं। हंसते-हंसते गणेश जैसा कद लेकर संचालन कर रहे है ऐसे अपने भद्रायुभाई; उनकी नागरी संचालन के तहत कल बहन गार्गी ने सुन्दर गान किया और आज बहन धैर्या ने नरसिंह की एक कृति का गान किया है। खुश रहो बेटा! अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। उसी क्रम में बहन मार्गी हाथी, उन्होंने खूब अभ्यासपूर्ण, खूब स्वाध्याय करके पन्द्रह मिनट में गागर में सागर हम सबकी समक्ष प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि नरसिंह संज्ञा नहीं, नाम नहीं परन्तु तीर्थ है। मुझको अच्छा लगा। जिस मनुष्य ने ऐसा कहा है कि 'सकल तीरथ एना तनमां रे।' ऐसा गानेवाला स्वयं में एक तीर्थ है। सुन्दर प्रवचनों का हमें लाभ मिला।

'मानस-नागर' में 'मानस' के सात नागर हैं, उनमें एक नागर जनक है। बिलकुल वे नागर है। ज्ञाति के रूप में नहीं। वर्ण के रूप में हमें 'नागर' शब्द को संकुचित नहीं करना है। उस ज्ञाति का, नागर समाज का मुझे गौरव है, अवश्य है। परन्तु हम जिसको गौरव कहते हैं उसको संकुचित नहीं होने देना है; उसकी विशालता ज्यों की त्यों बनी रहे इसका ध्यान रखना है।

सात नागरों का पुण्य स्मरण करना हैं। जनकपुर में सीताजी का स्वयंवर रचा जाता है तब तमाम राजा-महाराजा रंगभूमि में आयें। शतानंद नाम के जनक के कुलगुरु निमंत्रण देने जाते हैं महाराज विश्वामित्र को कि अयोध्या के राजकुमारों को साथ लेकर मुनिगणों के साथ आप रंगभूमि में पधारिए; मिथिलेश जनक आपकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। जानकी के जीवन का निर्णय होनेवाला है, आप पधारिए। महर्षि कौशिक यानी कि विश्वामित्र, राम-लक्ष्मण और मुनिगण के साथ रंगभूमि में प्रवेश करते हैं तब गोस्वामीजी ने एक चित्र प्रस्तुत किया। उसमें एक चौपाई है-

राजकुअँर तेहि अवसर आए। मनहुँ मनोहरता तन छाए।।
गुन सागर नागर बर बीरा। सुंदर स्यामल गौर सरीरा।।

जगतभर की मनोहरता ने आकर राम के शरीर पर निवास किया कि तुलसी को कैसा लगा वो कहने के लिए ये चौपाई लिखी है। गुण के सागर ऐसे दो भाई जो नागर हैं; तुलसी कहते हैं, वो दोनों सुन्दर हैं। एक श्यामल और एक गौर। दोनों ने प्रवेश किया। कविता के रूप में लीजिए साहब! और नौ रस के प्रसंग 'मानस' में देखना हो तो पहला प्रसंग है ये। भगवान राम जब मंडप में प्रवेश करते हैं तब किसको कैसे लगते हैं? शूरवीर बैठे थे उन्हें मानो वीररस आ रहा हो ऐसा लगा। जनक राजा, उनकी रानी और परिजनों को वात्सल्य रस उमड़ा। अपनी-अपनी रुचि अनुसार राम का अनुभव कर रहे हैं। कहीं शृंगाररस भरपूर था, कहीं भयानक, तो कहीं अद्‌भुत रस था। नौ के नौ रसों का मिश्रण था। तुलसी लिखते हैं, जिसके मन में जैसा भाव था वैसी राम की मूर्ति दिखाई दी। शूरवीरों को वीररस, रसिकों को शृंगाररस; विनोदी मनुष्य थे उन्हें हास्यरस; किसी को बीभत्सरस; किसी को भयानकरस दिखाई दिया। उस वक्त की पंक्ति व्यासपीठ यहां उठा रही है कि दोनों भाई गुण के सागर हैं, नागर हैं। उसी रंगभूमि में, तुलसी जैसा त्रिगुणातीत साधु बोलता है कि राम कैसे दिखते हैं? और दूसरा संबोधन राम का किया वो त्रिगुणातीत नहीं पर तमोगुण से भरे परशुराम ने किया है। सात्त्विक वृत्ति का आदमी किसी को

नागर कहता है तो समझे पर तामसी वृत्ति का मनुष्य ऐसा कहे कि मुझको इसमें नागर दिखता है तब समझना चाहिए कि नागरपना सच है।

धनुषयज्ञ शुरू हो चुका था। हजारों राजा कुछ नहीं कर सके और जनक ने थोड़ा संताप व्यक्त किया। विश्वामित्र ने राम से कहा, 'उत्तिष्ठत जाग्रत प्राप्य वरान्‌निबोधत।' 'उपनिषद' का मंत्र देखिए, कहां लागू पड़ता है? 'उत्तिष्ठत' ये राम को कहा; 'जागृत' ये लक्ष्मण को कहा, क्योंकि वो जाग्रत पुरुष है। जिस काम को लेकर हम आयें हैं वो काम सिद्ध करो; कठीन है, खड्ग की धार है। 'क्षुरस्य धारा निसिता दुरत्यया दुर्गं पथतत् कवयो वदन्ति।' विवेकानंदजी का मूल मंत्र है।

उठहु राम भंजहु भव चापा।

राघव, ऊठो। उस मंच की जितनी ऊंचाई होगी उतने ऊंचे पहाड से सिंह उतर रहा हो इस तरह राम उतरते हैं। तो भगवान धनुष तोड़ने आते हैं। धनुषभंग का तो पूरा स्वतंत्र प्रसंग है।

तेहिं अवसर सुनि सिवधनु भंगा।
आयउ भृगुकुल कमल पतंगा।।

वो कड़ाका सुना और तपस्या में बैठे तमोगुण प्रधान महामुनि, अपने अवतार परंपरा के आवेशावतार जिसको शास्त्र कहता है ऐसे परशुरामजी दौड़ते हुए आते हैं आवाज़ की दिशा में कि ये कड़ाका किसका है? रंगभूमि में जब वो नागरवाली पंक्ति आई कि दो वीर आयें तब तुलसी लिखते हैं-

उडगन महुँ जनु जुग बिधु बिधु पूरे।

उडगन के बीच दो चांद उदित हुआ हो वैसे ये दो नागर आयें। यहां तुलसी ने कविता में दो चांद बताया हैं और अब-

उदित उदय गिरि मंच पर रघुबर बालपतंग।

धनुष तोड़ने के लिए मेरे राघव खड़े हुए तब सुबह का उदित हुआ सूर्य लगते हैं। और परशुराम आते हैं तब 'भृगुकुल कमल पतंगा।' के मध्याहन का सूर्य लगते हैं। आज दो सूर्य को एकत्र किया हैं! निरंकुश होता है कवि; उसको जहां युति करना होता है वहां कर डालता है। 'हे जड जनक, इन सबको क्यों इकठ्ठा किया है?' जनक राजा ने पूरी बात बताई कि बापजी, ऐसा हुआ है। 'शिव धनुष किसने तोड़ा?' परशुराम को जनक कैसे बताएं? उनकी बेटी के सौभाग्य का सवाल है और ये आक्रमक मनुष्य! फिर तो विश्वामित्र ने दोनों भाईयों को पैर लगवाया। राम को देखकर परशुराम स्तंभित हो गये कि ये कौन है? विवाद-संवाद खूब हुआ पर जब राम के प्रभाव का ख्याल आया, राम की वाणी से राम का स्वभाव जब जाना; धनुष तोड़ा ये बल का प्रयोग है और परशुराम के सामने शील का प्रयोग है; फिर परशुराम ने जो स्तुति की उसमें राम को उन्हों ने नागर कहा है। धनुष तोड़ा तब तू कदाचित् नागर नहीं पर शूरवीर होगा, पर आज मेरे साथ जिस तरह से बात की उसमें तू नागर है। इस तरह नौ बार 'जय' शब्द का प्रयोग करके परशुराम आक्रमकता मिटाकर बिलकुल बदल गये हैं। सतपुरुषों का संग मनुष्य को पूरा बदल डालता हैं। गनी दहींवाला की गज़ल है-

बदलाई बहु गयो छुं, तमने मळ्या पछी।
मारो मटी गयो छुं, तमने मळ्या पछी।

कहां परशुराम की तामसता और कहां राम के समक्ष उनकी मृदुता? राम का शील देखने के बाद परशुराम के बुद्धि का द्वार खूल गया है।

तो 'मानस-नागर' में मैं और आप अपने आंतरिक विकास और विश्राम के लिए बातें कर रहे हैं। व्यासपीठ सात्त्विक चर्चा करती है तब मानना चाहिए कि 'मार्गी' मार्ग है और तात्त्विक चर्चा करती है तब समझना चाहिए कि गार्गी मार्ग है; वो दोनों जहां मिल जायें वहां मार्गमुक्त मार्ग हैं। जे. कृष्णमूर्ति कहते हैं, पाथलेस पाथ; न राइटिस्ट, न लेफ्टिस्ट; बुद्ध का मध्यममार्ग; न उपर, न नीचे। दुनिया के किसी कोने का नहीं ऐसा मार्ग है।

युवा भाई-बहनों, आप पैसा खर्च करते हैं कथा में; अपना समय देते हैं; थक जाते हैं इतनी सेवा करते हैं; ये सब आपका व्यर्थ नहीं जाएगा। सत्य की मात्रा बढ़ायें मैं और आप सभी। वर्ष का हिसाब कहां याद रहेगा, पर आज सुबह से कल सुबह तक का आय-व्यय निकालो कि पूरे दिन में हमने कितना झूठ बोला है? साधना मानो यही है, दूसरा क्या है? ये तीनों की मात्रा बढ़ती जाएगी उसको अस्तित्व हुंकार देगा। तो ऐसा मार्ग ही मार्गमुक्त मार्ग है। अब मुझे लगता है कि अपने देश में बहुत-सारे पंथ खड़े करने की ज़रूरत नहीं है। मैं ऐसे मार्ग की खोज में हूं जिसका मार्ग न हो और वो निकले वहां से कोई पंथ खड़ा न करे, कोई संप्रदाय या ग्रूप खड़ा न करे पर वो निकले वहां नये-नये मार्ग उसके लिए खड़े हो। बहुत संशोधन चाहिए। सभी परंपराओं में संशोधन होना चाहिए।

मुझसे किसीने पूछा कि आश्रम बहुत बड़े होते जा रहे हैं! हमें क्या उसमें? आश्रम, आश्रम ही रहे गेस्टहाउस नहीं बनना चाहिए। आश्रम साधकों के लिए होने चाहिए। जो विषयी है वे रहें होटल में; रिसोर्ट में रहें। अतिथि के लिए व्यवस्था होती है। मेरी दृष्टि से सबमें संशोधन की ज़रूरत हैं। हमारे हर्ष ब्रह्मभट्ट साहब ऐसा कहते हैं-

श्रम करो ओ संतजी आश्रम नहीं।

हे संत, तुम श्रम करो, आश्रम नहीं। 'आश्रम' बहुत ही पवित्र शब्द है। सबकी अपेक्षा बड़े से बड़ा आश्रम अपना गृहस्थाश्रम है। सभी आश्रमों को अपने पास आना पड़ता है। ब्रह्मचर्याश्रम को आना पड़ता है; वानप्रस्थ को आना पड़ता है और संन्यासी अग्नि को छू नहीं सकते हैं ऐसा नियम है

इसलिए उन्हें भिक्षा के बहाने आना पड़ता है। हम सब फिर आश्रम में इतना फ़ंस जाते हैं कि मेहमान की व्यवस्था में ही रह जाते हैं और भजन भूल जाता है!

तो संशोधन करना ज़रूरी है। मेरे शब्द नहीं है; प्रस्तूति मेरी है। 'वेदशास्त्र विशुद्धिकृतं।' 'श्रीमद्भागवत' के माहात्म्य में लिखा है कि वक्ता कैसा होना चाहिए? समय-समय पर शास्त्रों का संशोधन करे। अनेक मार्ग हमारे समक्ष आये हैं। कबीर साहब के समय में ऐसा रहा होगा इसलिए उन्होंने कहा होगा कि मुझे वो मार्ग देखना है जो हकीकत में मार्ग न हो।

तो बाप! 'मानस-नागर' की चर्चा चल रही है। शब्दकोश के आधार पर 'ना' का अर्थ होता है 'नाभि।' दो अर्थ हैं; 'ना' अर्थात् नाभि; ना अर्थात् 'मनुष्य।' 'ग' का अर्थ होता है गीत, गान करना और सप्तसूर का तीसरा सूर 'गांधार।' 'र' का अर्थ है तेज, शीघ्रता, वेद, उजाला, प्रकाश। इसका अर्थ व्यासपीठ को ऐसा सूझता है कि नाभि से जो गाता है और सभी को सुख देता है उसका नाम नागर। 'ना' यानी नाभि, 'ग' यानी गाना और 'र' मानी कभी द्रुतगति कभी विलंबित गति; पर लोगों को सुख दे। भर्तुहरि ने मंगलाचरण किया तब कहा, 'नमः शान्ताय तेजसे।' दंतालीवाले सच्चिदानंद बापू मंगलाचरण में बोलते हैं कि 'नमः शान्ताय तेजसे।' इस शांत तेज को मैं नमन करता हूं। ये नाम-रूप सब निकाल डाला। मूल भर्तुहरि का है। हम सब उग्र तेज को नहीं नमन करते। हम को तेज चाहिए, परन्तु शांत तेज चाहिए। अतिशय तेज आंखें होने पर भी कहां देखने देता है? तो नाभि से कोई गीत गाया जाये और ऐसा वेगवान बने, ऐसी गति से जाये कि सभी को सुख दे दे। ऐसी प्रक्रिया जिसमें शुरू हो जाये उसे एक अर्थ में 'नागर' कहना चाहिए।

कल मैं सहज ही बोला कि 'गागर में सागर' क्योंकि पंद्रह मिनट में सब बोलना होता है। और नागर भले ही ज्ञातिपरक हो पर नागर है वो बहुत समझदार होगा; वो थोड़े ही में अपनी बात रख देगा। अब मुझे आपसे कहना है गागर के पांच लक्षण। पहला लक्षण; मेरे साथ सत्तर वर्ष पीछे आओ। अपने यहां गागर अधिकतर तांबे की ही होती है। फिल पित्तल की आई, स्टील की आई, ठीक है? मैंने बचपन में देखा है कि सावित्री माँ के पनसाल में जो गागर और हंडा रहता वो तांबा का ही रहता था। तांबा पवित्र धातु है। सोना, चांदी, लोहा, कांसा, पित्तल जितने प्रकार की धातुएं होगी वो नागर नहीं है। धातु के जगत में कोई नागर है तो वो तांबा है। वो नागर, तांबे की गागर में से जमुनाजल से नहाता था और नागर का गागर से मिलन होता था। तांबा की गागर नागरपना का संस्कार लाती है। मंदिरों में पहले कलश चढ़ता था वो तांबा का ही चढ़ता था। चांदी का और सोने का कलश बाद में लोग चढ़ाने लगे; वो चढ़े तो हम प्रसन्न होंगे, पर तांबा नागर है धातुओं में। अपने उपयोग की वस्तुओं में भी कहीं-कहीं नागर छिपा है; उसका नागरपन खोजें और वो नागरपन हममें कैसे आएगा इस दर्पण दर्शन के लिए ये कथा शुरू हुई है।

दूसरा लक्षण; गागर नीचे नहीं होगी, वो हंडे के उपर ही होगी। हंडा बड़ा, उसका पेट और मुंह बड़ा परन्तु उसे नीचे ही रहना पड़ता है। हंडे को छलकने से किसी ने रोका हो तो वो गागर है। उसको फेविकोल से चिपकाया नहीं था पर हंडे के मुंह को, तू भरा है इसलिए छलकना मत, ऐसी सीख किसी ने दी हो तो वो समाज की नागरी गागरों ने दिया है। राधाजी को 'नागरी' कहा है। अपने वैष्णव मार्ग के पद को लीजिए, उसमें राधाजी और गोपियों को नागरी कहा हैं। 'नागर नंदजीना लाल।' इसमें कृष्ण तो 'नागर' है ही किन्तु गोपियों को भी 'नागरी' कहा है। हंडे को वो छलकने नहीं देती। हंडा भरा हुआ है इसकी उन्हें ईर्ष्या नहीं होती, किन्तु तू छलकेगा तो तेरे साथ मेरा जोड़ है और इसलिए तेरी कोई टीका करेगा वो मुझे पसंद नहीं होगा कि थोड़ा-सा मिल गया इतने में छलकने लगा! तू छलक न पड़े इसके लिए तेरे रूप में भी वृद्धि करता हूं और तेरी छलकन को भी मैं रोक लेता हूं। तीसरा लक्षण; गागर पर बड़ा-सा ढ़ंकना होता है।

हेल भरी हालुं उतावळी रे,
ए मारे हैडे हरख न माय,
मारे घेर मेहमान आव्यां।

गागर हंडे की शोभा बढ़ाती है। हमारे वैष्णव साधुओं का मंडप लगता है उसमें केवल हंडा नहीं होता, गागर भी होती है। और एक समय था कि तांबा का ही घड़ा रखा जाता था। तीसरा लक्षण है, हंडे से पानी नहीं निकलने देता पर स्वयं छलकता है। और वो क्या बताता है कि हम छोटे हैं इसलिए छलक जाते हैं। एक समय था जब हम सबके घरों में तांबा का कलश भी नहीं था। कर्मकांड में तांबा का कलश पुरोहित बाबा ही लेकर आते थे। कलश स्थापन होता तब हम देवता के स्थापन में गागर रखते थे। हंडे को गेंडुरी की ज़रूरत होती है, गागर को गेंडुरी की ज़रूरत नहीं पड़ती। आरोग्य शास्त्र भी कहता है कि तांबे की गागर का पानी जो पीता है उसे कई प्रकार के रोग नहीं होते हैं। युवान बच्चों, पूरी रात तांबे के घड़े में पानी रखकर सुबह उसे पीना चाहिए। वह पानी फिर पानी नहीं रहता, जल बन जाता है। पानी को जल बनाने की कोई एक दीक्षित प्रक्रिया है वो तांबे में होती है। ये पांच लक्षण जिसमें होता है वो नागर रूप है। ये धातु ही पवित्र है। देशकाल तो सभी को लागू पड़ गया है परन्तु नरसिंह मेहता जिस कुल में आयें

वो पवित्र होगा इसलिए उसने गाया होगा कि 'एना कुळ एकोतेर तार्यां।' कुळ से महान है ये गागरतत्त्व।

ब्राह्मणों में सभी पूजनीय और प्रणम्य हैं। गतकल मैंने कहा था कि नागर भिक्षुक नहीं दिखेगा आपको। ब्राह्मण देवता या हम सब बावा-साधु आटा मांगते हैं ये कोई खराब नहीं है। भिक्षा ये गज़ब का मार्ग है! तलगाजरडा होता हूं तब प्रत्येक दिन रामजी मंदिर पर जाता हूं। मैंने कहीं कथा में कहा था कि मुझको फिर तलगाजरडा में एक बार आटा मांगने निकलना है। और मैं जो कहता हूं वो भगवान पालन करवाता है। तो मेरे मन में ऐसा हुआ कि हम भूल न जाएं इसलिए एक बार आटा लेने निकलना चाहिए। हमारे गांव में अब कोई ब्राह्मण देवता आटा मांगने नहीं निकलता है और हममें से कोई आटा लेने जाता नहीं। अतीत गोसाई हमारे त्रिलिंग महादेव के पूजारी हैं, उसमें से एक भाई रोज़ निकलते है। साधु, ब्राह्मण लगभग सुबह ही आटा लेने निकलता है और गोसाई निकलते हैं सायंकाल को, ये नियम है। सुबह मैं दर्शन करने जाता तो वे नहीं होते, इसलिए मैं कहता कि तांबडी में जो आटा इकठ्ठा होता है उसमें से दो रोटी बनाकर सायंकाल दे जाना; गंगाजल देता; फिर वो ले आते।

ब्राह्मण भिक्षा मांगता है पर नागर ब्राह्मण एक उत्तम धातु है। जाति के रूप में ले तो भी। फिर देशकाल की बात अलग है। बाकी तो वो तांबा है; वो गागर की शोभा है। दूसरा, सभी बड़े-बड़े पदों पर नागर की गागर बैठी है। कहीं दीवान नागर, कहीं बड़े पद पर नागर, कहीं कलेकटर नागर; एक समय में तो नागर ही सभी जगह थे। अपने को हाटकेश का सेवक मानें कि हम सब छोटे हैं, पर वे हंडे के उपर बैठे हैं। संख्या भले ही कम होगी गागरों की किन्तु बड़े से बड़े होद्दे पर बैठते हैं, वे हंडे पर बैठी हुई गागर है। प्रभाशंकर पट्टणी भावसिंह को छलकने नहीं देंगे। इन नागरों ने हंडे को छलकने नहीं दिया। जिन राज्यों को अच्छे दीवान मिले हैं उनका गुणगान कथाओं में गाया जाता हैं। हमारी गंगासती कह गई-

कुपात्रनी आगळ वस्तु न वहोरीए ने समजी ने रहीए चूप।
मरने आवीने धननो ढगलो करे, भले होय मोटा भूप।

नागरों ने पदों को सुशोभित किया। 'कुळ एकोतेर तार्यां।' इसमें पदवियां देखना। ये सभी पुण्यश्लोक हैं।

पुण्यश्लोको नलो राजा पुण्यश्लोको युधिष्ठर।

अब इसमें फेरफार होना चाहिए। ऐसे व्यक्तियों को पुण्यश्लोक कहने में परहेज़ न कीजिए। मैंने मानदादा को पुण्यश्लोक कहा; भावनगर के शिशुविहार का सेवक। प्रत्येक वर्ष जो अवोर्ड दिया जाता है उसमें मैं गया और मैंने कहा 'पुण्यश्लोक मानदादा।' उत्तम श्लोक तो कृष्ण के सिवा दूसरा कोई नहीं हो सकता। 'श्रीमद्भागवत' में शुकदेव कहते हैं, हमारा चित्त निर्गुण में लवलीन रहते हैं, किन्तु 'उत्तमश्लोक लीलया।' ये उत्तम श्लोक और लीला करनेवाला मेरा चित्त पकड़ लिया है; मेरी अवधूती अब खतरे में है। ये सभी पुण्यश्लोक के नये खिताब हैं। दूसरा खिताब भारत सरकार देती है; वो सुन्दर है। और मिलना ही चाहिए जो योग्य है उनको। किन्तु कोई-कोई तो पुण्यश्लोक सुबह में नाम स्मरण करने जैसे है। ये सभी हंडे के उपर की गागर है। हंडा यानी यही होद्दा; अपने यहां नागर जिस पद पर थे और सर्वकालीन जो कवि थे वो बड़े-बड़े रजवाडों को सच्ची सलाह देते थे। उनका तल बहुत पवित्र था। पेट बड़ा पर मुंह छोटा ये तीसरा लक्षण है। गागर का पेट बड़ा, मुंह छोटा होता है; अंदर बहुत भरा होगा पर बोल-बोल नहीं करता। बहुत-से लोग कुछ नहीं होता पर बोलने में चुप नहीं रहते! मुंह छोटा; वो आप बड़ाई नहीं करते, फिर भी छलकें तो स्वीकार कर लेते हैं कि हम तो छोटे हैं न बाप!

अमे तारां अंग कहेवाइए,
जीवण कोने आशरे जइए?

हम तुम्हारे अंग है और तू हमारा अंगी हैं। कैसी वेदांत की बात उतारते हैं मजादर! नरसिंह में वेदांत उतरता है।

एक प्रश्न है मेरे पास, 'बापू, नरसिंह को आप अद्वैतवादी गिनोगे, वेदांती गिनोगे? उन्हें किस वाद में गिना जाएगा?' नागर युवक द्वारा पूछा गया प्रश्न है। मैं नरसिंह मेहता को जहां तक जान सका हूं वहां तक कहने दीजिए मुझे; उसको जानना बहुत मुश्किल है; गिरनार चढ़ना सरल है। इस नागर की ऊंचाई बहुत है साहब! गिरनार पर तो बहुत बार चढ़े और उतर गये। नरसिंह मेहता अद्वैतवादी ही है। उनके अनेक पदों में अद्वैत आया है। नरसिंह मेहता अद्वैतवादी है; परन्तु नरसैया के अमुक पद विशिष्टाद्वैती है। उसमें आपको कुछ विशेष लगेगा। सभी आचार्यों का अवतार लगेगा आपको। छः सौ वर्ष पहले का ये वैष्णव भजनपीठ का आचार्य है; उसमें द्वैताद्वैत भी दिखेगा। इसलिए वो कह सकता है-

जागने जादवा, कृष्ण गोवाळिया।

मूलतः नरसिंह को तो अपनी आत्मा को जगाना है कि इन्द्रियां रूपी गायें दूसरे के खेत में न चली जायें इसलिए आत्मा में बैठे हे गोपाल, इन्दियों के रक्षक, तू जाग। इसमें विशिष्टाद्वैत भी दिखेगा। मुझको समय मिलेगा तो बीच-बीच में इसकी प्रमाण के साथ बात करूंगा। वो अद्वैतवादी है, विशिष्टाद्वैती है और उसमें शुद्धाद्वैत है, द्वैताद्वैत है। पर मोरारि बापू को यदि कहना हो तो इन सभी मतों को एक में समाकर बैठा हुआ वो मनुष्य प्रेमाद्वैती लगता है। उसका

द्वैत सही परन्तु रसाल है। मैंने नरसिंह अवोर्ड में भी कहा था कि नरसिंह मेहता को विषयी माने तो रस के कवि है।

ए रसनो स्वाद शंकर जाणे,
के जाणे शुकजोगी रे;
कोई एक जाणे व्रजनी वनिता:
भणे नरसैयो भोगी रे।

शरदपूनम का रास लीजिए तो उस रास का मनुष्य और महारस देखता हो तब 'रसो वै स:।' रास, रस और महारास ये तीनों में से छनता है। विषयी, फिर साधक, फिर सिद्ध और अंत में शुद्ध होकर नागर बाहर निकला है।

तो कुछ बोल बैठें, छलक उठें तो उसका पता है कि हम गागर हैं। वो कृष्ण को थोड़ा कठोर वचन कह देता है पर फिर अकेले में दामोदर कुंड के समीप बैठकर रो लेता है कि घर में संकट था! आखिरकार हम जीव हैं, दो शब्द कहा जाये तो माफ़ कर देना। आप कल्पना तो कीजिए उस दृश्य की कि बाप का श्राद्ध आयोजनपूर्वक पूरा हो जाता है; सभी भोजन करके चले जाते हैं और अंत में नरसैया को पता चलता है कि वो द्वारकाधीश मेरा सबकुछ पूर्ण करके चला गया है! और फिर तो वो भागा है दामोदर कुंड! मेहती, वो आकर जो सब पूरा कर गया वो कहां गया? पत्नी कहती है कि वो तुम्हीं थे और कह गये कि दामोदर कुंड नहा कर आऊं, मुझको थोड़ी थकान लगी है। और फिर करताल लेकर भागा होगा दामोदर कुंड की ओर! और फिर उसको आना पड़ता है! मैं चमत्कार में माननेवाला मनुष्य नहीं हूं। मेरी अपनी मस्ती है। पर ऐसा हो भी सकता है। हम न पहचान पायें ये बात अलग है।

श्रद्धानो हो विषय तो पुरावानी शी जरूर?
कुरआनमां तो क्यांय पयगम्बरनी सही नथी।
- जलन मातरी।

तो एक तो धातु पवित्र है। मुंह छोटा। बोल-बोल नहीं करता। नागर का मर्म, नागर की स्मित उसकी शैली है। तो जाति बहुत प्रिय है। गागर सभी बोल जाती है, हम छलक जाएं तो भी तेरे हैं। हमारी बैठक तो कितनी बड़ी है! तेरे आसन पर बैठे हैं, हमें क्षमा करना। ये तीसरा लक्षण है। देश-काल के अनुसार प्रभाव पड़ा होगा, क्योंकि अभी आदमी का मन मलिन हुआ है और काल भी मलिन है; ऐसे समय में धोखा नहीं करना चाहिए परन्तु मूल तत्त्व को तो जानना चाहिए।

तो बाप! पवित्रता में उसका स्थापन होता है। अनुशासन खूब है नागर में। आपने कभी देखा है, हंडे पर आम या अशोकवृक्ष के पत्ते रखें हो उस पर नारियल रखा हो? हंडे पर नारियल रहेगा ही नहीं, अंदर ही चला जाएगा! तांबा की गागर पर आम या अशोकवृक्ष के पत्ते रखे हो, उस पर नारियल रखा हो तो वो शोभित होता है। जिसकी शोभा बढ़ती ही जाए; बुद्धि की और शारीरिक भी, शील की, चतुराई की। ये शोभा बढ़ती जाए ये नागरपन है। होगी गागर पर समोदगी सागर। कहां गागर और कहां सागर! पर बड़ा भेद तो ये हैं सागर में पानी बहुत होता है और गागर में पानी जलरूप में दीक्षित हो जाता है।

सागर के पांच लक्षण संक्षेप में कहता हूं। एक तो गहराई अधिक। दूसरा, विशालता अधिक। तीसरा लक्षण, हमें ऐसा लगता है कि इस किनारे भाटा आ गया, पर दूसरी ओर ज्वार आ गया होता है। हमें ऐसा लगता है कि ये नागर है! परन्तु उसकी बाढ़ देखो; उसकी गर्जना देखो; उस पर हाटकेश की कृपा देखो; उस पर दामोदर की दया देखो! चांद को देखा नहीं कि गर्जन चढ़ा नहीं! ये चौथा लक्षण है। और पांचवां लक्षण, इतने सारे रत्नों को संग्रहित करके बैठा है। ये नागर के लक्षण है। उसकी पात्रता कैसी! फिर उसे जाति के रूप में कहता हूं, जगत में जिसकी समुद्र-सी गहराई होगी वो नागर है। भगत बापू कहते हैं-

सोसो नदियों उरमां समाणी,
सायर जळ गंभीर,
जगमां एनुं नाम फकीर।

तो गहराई अधिक होती है, जान नहीं सकते हैं। और विशालता भी अधिक। संकीर्णता नहीं, उदारता होती है। मूलत: नागरों में गहराई होती है। देशकाल अनुसार जो हो! ऐसा लगेगा कि नागर परास्त हो गया, पर दूसरी ओर वो उछल रहा होता है! चांद को देखकर पागल हो उठता है! वो दूसरा कोई चांद नहीं, कृष्णचंद्र। नागर की गरबी अलग; रास करने की शैली अलग होती है। उसका रास कुछ खास प्रकार का ही होगा। शब्दकोश में अर्थ दिया है कि नागर की बहन-बेटी निखालस अधिक होती हैं; खुलापन अधिक होता है; जैसे हैं वैसे रहते हैं। तो उदार है, हमें लगेगा कि पतन है पर दूसरी तरफ़ बाढ़ होगी। शरीर वृद्ध हो गया होगा, पर मन तरंगित होगा। मन वृद्ध होता है तब बुद्धि प्रज्ञा की ओर दौड़ती है और प्रज्ञा वैसी हो तब अहंकार में फिर से पतन आ जाता है। नागर के भीतरी भाग में सभी रत्न होते हैं ज़हर के सिवा। चौदह रत्नों में ये सभी रत्न न निकलेगें पर उसको मथने पर भी ज़हर नहीं निकलेगा; ऐसा सागरपन नागर में दिखता हैं।

'मानस-नागर' की थोड़ी सात्त्विक-तात्त्विक संवादी चर्चा करते-करते थोड़ा कथा का क्रम ले लूं। गोस्वामीजी के 'बालकांड' यानी प्रथम सोपान में जो वंदना प्रकरण चल रहा है उसी क्रम में सीता-राम की वंदना करने के बाद नाम की महिमा गाई है।

बंदऊ नाम राम रघुबर को।
हेतु कृसानु भानु हिम कर को।।

'मानस'कार गोस्वामीजी कहते हैं, रघुवर के अनेक नाम हैं पर उसमें से भी उनका 'राम नाम' है उसे मैं नमन करता हूं। जो नाम भी है और महामंत्र भी। 'रामनाम' मंत्र बुद्धि से जपते हैं तो परिणाम महामंत्र का और नाम बुद्धि से जपते हैं तो किसी बिधि-निषेध की ज़रूरत नहीं है। खड़े, बैठें, चलते-फिरते किसी भी तरह से ले सकते हैं रामनाम। दोनों में काम करता है ये राम। साधकों और सिद्धों के लिए महामंत्र है और हम सब जीवों के लिए एक नाम। परिणाम एक समान है।

भगवान शिव महामंत्र को बुद्धि से जपते हैं और जीव को काशी में बैठे-बैठे विश्वनाथ उसको नाम रूप में सबको भंडारे में देते हैं। तुलसी कहते हैं, रामनाम ॐकार और प्रणव का पर्याय है। राम में ब्रह्मा, विष्णु, महेश निवास करते हैं। उसके 'र' कार, 'अ' कार, 'म' कार की महिमा विद्वानों ने बहुत खोजा है; वो महिमा थोड़ी कठिन है। गांधी बापू कहते थे, मेरे जीवन की विशिष्ट सफ़लता में कोई है तो एक मात्र रामनाम है।

गणपति ने नाम की महिमा जानी और धरती पर 'राम' लिखकर परिक्रमा की तो जगत में प्रथम पूज्य बन गए। आदि कवि वाल्मीकि 'राम-राम' नहीं बोल सकते वो बुद्धि में नहीं उतरता। 'राम-राम' के बदले 'मरा-मरा' बोला ये केवल महामुनि की ओर से मुझे और आपको संकेत है कि इसको आप चाहे जैसे बोलो। 'राम-राम' बोलो या 'मरा-मरा' बोलो; नाभि की नाद से बोलेगें तो ब्रह्मांड का ताला खुल जाएगा।

त्रेतायुग में भगवान राम थे; अभी कलियुग में राम नहीं है पर साक्षात् अपने पास उनका नाम है। त्रेता में राम करते थे वो कलियुग में उनका नाम कर रहा है। भगवान राम ने अहिल्या को तारा; आज कलियुग में उनका नाम हमारी और आपकी रजोगुणी बुद्धि जो जड़ हो गई है उसका उद्धार करता है। भगवान राम ने तो एक बार शिव धनुष तोड़ा पर आज नाम मेरे और आपके अहंकार के तामसी धनुष्य को तोड़ डालता है। भगवान राम ने अपने लीलाकाल में शबरी, गीध ऐसे वंचित, उपेक्षित, तिरस्कृत जिसको कोई वेदवाला गिनता नहीं था उनको जो वेदपुरुष का स्थान रखते थे ऐसे अनेकों को अपने नाम से तार कर अपना कर बताया है। वेदविद परमात्मा राम हैं और उन्होंने लोगों को अपनी ओर मोड़ा हैं। सतयुग में लोग ध्यान द्वारा परमात्मा को पाते थे। प्रथम साधना ध्यान था। अपनी औकात है ध्यान करने की? मैं तो ध्यान नहीं कर सकता! हम किसी से पूछे कि क्या कर रहे थे? तो कहता है, मैं ध्यान में था! जब तक 'मैं' है तब तक ध्यान हो ही नहीं सकता! नरसैया तो डंके की चौट पर कहता है-

हुं करुं, हुं करुं एज अज्ञानता,
शकटनो भार ज्यम श्वान ताणे,
सृष्टि मंडाण छे सर्व एळी पेरे,
जोगी-जोगेश्वरा को'क जागे।

सतयुग में ध्यान होता था। मूंगफली जिस मौसम में होती है उसी मौसम में बोना चाहिए; दूसरे मौसम में बोओगे तो उतनी उपज नहीं होगी। त्रेतायुग में बड़े-बड़े यज्ञ होते थे पौराणिक मंत्रों और वेदमंत्रों के द्वारा। द्वापरयुग रजोगुण का काल कहलाता है, इसलिए इसमें घंटों तक लोग पूजा में समय व्यतीत कर परमानंद का अनुभव करते। कलियुग में विशेष मनुष्य जो ध्यान करते हैं उन्हें प्रणाम करता हूं; जो यज्ञ करते हैं वो प्रणम्य है; जो घंटों तक पूजा-अर्चना करते है वो प्रणम्य हैं, परन्तु हम जैसों के लिए तुलसी ने कहा है-

नहिं कलि करम न भगति बिबेकू।
रामनाम अवलंबन एकू।।

कलियुग में सरलमार्ग लीजिए, हरिनाम। आपके जो इष्टदेव हो उनका नाम। क्या फ़र्क पड़ता है!

कबीरा कुआ एक है, पनिहारी अनेक।
बरतन सब न्यारे भए, पानी सब में एक।।

तो कलियुग ये नाम का मौसम है। भाव से, दुर्भाव से, आलस से चाहे जैसे भी नाम का आश्रय कीजिए। तुलसी ने रामनाम की अतुलनीय महिमा गाई है। स्वयं राम अपनी महिमा गाने बैठें तो राम भी अपने नाम की महिमा नहीं गा सकेंगे, ऐसा प्रभु का नाम है, इसकी थोड़ी चर्चा की है।

एक प्रश्न है मेरे पास, 'बापू, नरसिंह को आप अद्वैतवादी गिनोगे, वेदांती गिनोगे? वो किस वाद में गिने जायेंगे?' नरसिंह मेहता अद्वैतवादी ही है। उनके अनेक पदों में अद्वैत आया हैं। नरसिंह मेहता अद्वैतवादी है; पर नरसैया के अमुक पद विशिष्टाद्वैती है। इसमें आपको कुछ विशेष लगेगा। सभी आचार्यों का अवतार लगेगा आपको। छः सौ साल पहले का ये वैष्णव भजनपीठ का आचार्य; उसमें द्वैताद्वैत भी दिखेगा। पर मोरारि बापू को यदि कहना हो तो इन सभी मतों को एक में समा करके बैठा हुआ मूलतः ये मनुष्य प्रेमाद्वैती लगता है। उसका द्वैत है पर रसाल है।

नागर एक वैश्विक विचार है

बाप! नागर नरसिंह मेहता की निरंतर ऊर्ध्वगमन करती हुई चेतना को केन्द्र में रखकर, शिखर पर बिराजित गुरुदत्त और दातार उसके आसपास में फैली तमाम चेतनाओं को व्यासपीठ से प्रणाम करते हुए तीसरे दिन की कथा 'मानस-नागर' का आरम्भ हो रहा है तब कथा में उपस्थित सभी पूज्य चरणों को मेरा प्रणाम। कला, विद्या और साहित्यजगत, समाजसेवा का जगत, आप सभी भाई-बहेनों, नागरसभा में उपस्थित सभी को, दुनिया के सभी देशों में इस कथा का श्रवण हो रहा होगा उन सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम।

गतदिन की तीन प्रसन्नता आपके समक्ष व्यक्त करता हूं। एक नागरनभ के विशिष्ट तारकों, उसमें से ग्यारह का चयन करके वंदन करने के लिए मंच पर हम सबने अपने हृदय के आदर और प्यार से सत्कार दिया। उसके प्रतिनिधि के रूप में जो आये उन्होंने हमारी वंदना स्वीकार की और सबने हृदय से प्रसन्नता व्यक्त की; सबने अहोभाव व्यक्त किया। ऐसे तो अनेकों नभतारक नागरमंडल में शोभायमान है, हम कहां पहचान सके हैं? कितने सारे रह जायेंगे, फिर भी हम जो विचार लेकर गति कर रहे हैं उसमें सब आ गये ऐसा समझना चाहिए। थोड़े में ज्यादा पढ़ना; पूजा मेरी मान लेना। इसे मेरी सेवा मान लेना।

कल मुझको आने में पंद्रह मिनट की देरी भी हुई; वैसे तो मुझे नुकसान हुआ पर उसकी अपेक्षा फायदा अधिक हुआ। नुकसान ये हुआ कि इस कथा में मुझे कुंवरबाई का मेहता द्वारा पूरित मामेरा का आख्यान करना था, पर भुजवाला ने सुंदर आख्यान प्रस्तुत किया। मैं करता तो इतना सुन्दर नहीं कर सकता था। उसके कुछ संवादों में आपत्ति तो नहीं लेकिन मेरा विचार हो सकता है। मैं उनसे एक वस्तु की बिनती करता हूं; कथा में पुरान के संदर्भ आते हैं; जितना मैंने देखा है; संतों और विद्वानों को सुना है; साहित्यकारों, कविओं, लोककविओं को सुना है, उसमें से कुछ पसंद है तो 'गमतांनो गुलाल' करता रहता हूं। जब आपको ऐसा लगे कि ये कहां होगा, तब मेरी जवाबदारी से समझना चाहिए कि ये तलगाजरडा का है। इसलिए तुलसी ने मुझे पहले ही कह दिया-

नानापुराणनिगमागमसम्मतं यद्।
रामायणे निगदितं क्वचिदन्यतोऽपि।

'रामयण' में आगम, निगम, आरण्यक, ब्राह्मणग्रंथ, महाकाव्य, साहित्यजगत सब आते हैं। उसके संदर्भ तुलसी ने रख दिया है, पर एक शब्द हमको प्रसन्नचित्त कर देता है, 'क्वचिदन्यतोऽपि।' तो थोड़ा ओर भी होगा जो कदाचित् कहीं न भी हो। उसकी वक्ता की अपनी जवाबदारी होती है, इसलिए वो 'अन्यकोऽपि' वहां मेरा तलगाजरडा है; वहां मेरी निजता है; मेरी जवाबदारी है। फिर आप उसका उपयोग क्या करते हैं वो आपकी जवाबदारी है।

मैं केदारनाथ की कथा में बोलता था। मुझको 'फूलछाब' के कौशिकभाई ने पूछा कि 'बापू, शासन के तीन वर्ष पूरे हुए हैं, तो वर्तमान सरकार के कार्यकाल के तीन वर्ष उसकी फलश्रुति स्वरूप आप क्या कहेंगे?' मैंने कहा कि मेरा राजकीय क्षेत्र नहीं है। फिर भी हम भारत में रहते हैं; भारत के नागरिक हैं और मैं तो सबके साथ डिस्टन्स रखता हूं। आप मेरे साथ फोटो खिंचवाये वो बात ओर है; नहीं तो मेरा बहुत प्रामाणिक डिस्टन्स है सबके साथ। मेरा तो प्रत्येक क्षेत्र के साथ डिस्टन्स है। उस समय मैंने कहा था कि दूसरा जो भी हो, मुझे पता नहीं पर इस व्यक्ति की राष्ट्रभक्ति पर कोई अंगुली नहीं उठा सकता। ऐसा मैं समझा था इसलिए मैंने कहा। मैंने ये भी कहा कि तीन वर्ष में ऐसा कोई घोटाला नहीं आया; जो अमुक वर्षों

में अनेक घोटालें आये वो नहीं आये। कोई अच्छा करता है तो मेरी आत्मा हामी भरती है, तब भारत के नागरिक के नाते वक्तव्य देता हूं। अब मेरे इस कथन को कोई तथाकथित पक्ष चुनाव प्रचार में उसकी क्लिपिंग फिराए तो आपने साधु का दुरुपयोग किया है।

एक बात जगत समझ ले कि साधु साधन नहीं हैं, साधु साध्य है। जिस-जिसने जगत में साधु को साधन बनाया है वो सफल नहीं हो सका है। मुझको किसी ने बताया कि केदार के शब्द पक्षीय स्तर पर चुनाव प्रचार में क्लिपिंग घूम रही है! बाप! सभी मेरे सम्मानीय है, देश मेरा है, आप मेरे हैं, पूरा विश्व मेरा है। अच्छा लगा वो मैंने कहा पर उसका इस तरह से उपयोग नहीं करना चाहिए। वैसे तो बहुत बार पसंद न हो ऐसा भी कहा है, वो भी घुमाओ न! मैंने लोकपाल बिल के विषय में टकोर किया है! उस दिन हम सभी चिल्ला रहे थे, अब क्यों इसका विचार नहीं होता? एक नागरिक के तौर पर तो कह सकता हूं। तरकीब इतनी सुंदर होती है कि खुद का फायदा होता है वैसे शब्द ले लेते हैं! कुछ लोग मेरे निवेदनों का बहुत सुन्दर उपयोग करते हैं! मैंने देखा वो क्लिपिंग। पूरा प्रवचन दिखाये तो सुन्दर पर सबको असर करे इतना सुन्दर एडिटिंग करते हैं ये चिरंजीवि! नहीं बाप! मुझे किसी पक्ष में मत घसीटो; फायदा नहीं होगा। साधु साधन नहीं, साधु साध्य है।

दूसरा, वोट्सएप का, फेसबूक का आप उपयोग करते हैं तो बिनती करता हूं कि दूसरे महापुरषों के कहे वचनों को मेरे नाम से मत चढ़ाओ। बहुत से लोग वाक्य ओशो का होता है और चढ़ाते हैं मोरारि बापू के नाम से! ये मैंने ओशो का आपराध किया माना जाएगा। और जो मेरा नहीं है उससे मैं व्याकुल होता हूं। आपको लिखना है तो मेरे बोले हुए शब्दों को लीजिए। वाक्य किसी साहित्यकार का हो और चढ़ा दो मेरे नाम से! आपके अहोभाव को नमन करता हूं। पर अहोभाव कहीं अपराध न बन जाये! मुझे नरसिंह मेहता कि वो पंक्ति याद आती है-

अमे अपराधी कांई न समज्यां,
न ओळख्या भगवंत ने।
जळकमळ छांडी जा रे बाळा!

यह मानव ऐसा कह रहा है कि जल और कमल दोनों छोड़ दे। यह बहुत क्रांतिकारी बात है। जल अर्थात् संसार, भवसागर और कमल अर्थात् संन्यास, असंगता। गिरनार चढ़ना सरल है, नरसैया चढ़ना कठिन है। ये मानव कहता है कि जल और कमल दोनों छोड़ दे। तुझको क्या संगता, क्या असंगता? इस पर विद्वानों को विचार करना चाहिए। हम क्या कहेंगे कि जल छोड़ दो, ये तो संसार है, इसमें डूब जायेंगे अर्थात् कमल जैसे बन जाओ। अच्छा है असग होना, पर कमल का बंधन, असंगता का बंधन अर्थात् गर्व आयेगा तो? दोनों से बाहर निकल जा। 'चिदानन्दरूपः शिवोऽहम् शिवोऽहम्।'

अमे अपराधी कांई न समज्यां,
न ओळख्या भगवंतने।
जळ कमळ छांडी जा रे बाळा!

तुम्हारी नई-नई निखरती हुई चेतना है, बाहर निकल जा इसमें से। उपनिषद तो ऐसा कहते हैं कि आदेश या तो पुत्र को दीजिए या तो शिष्य को दीजिए। उपदेश या तो वंश-परंपरा को दीजिए या तो नाद-परंपरा को दीजिए। मैं किसलिए युवकों को संबोधित कर रहा हूं? क्योंकि ताजी चेतना है। आप कथा में आइए। सिर्फ़ मेरी कथा में ही नहीं, जहां सत्संग और प्रभु की कथा होती हो वहां जाओ; अच्छा मुशायरा हो वहां जाओ; अच्छे नाटक देखो; अच्छे लेख और कविताएं पढ़ो। अखबार में उल्टा-पुल्टा पढ़ने के बदले उसके जो विशिष्ट लेख आते हैं उसे पढ़ो। किसी ने अंदर से मंथन करके अलग-अलग विषयों पर लिखा है उसको पढ़िए।

तो हे बालक! तू निकल जा। इसका अर्थ ऐसा नहीं कि बचपन में हम साधु और त्यागी-वैरागी बना दे। ये सब मुझको भी पसंद नहीं है। किसी की श्रद्धा तोड़ने का काम मेरा नहीं है पर किसी को तीव्र वैराग्य आ जाए तो भगवंत गुरुओं को, आचार्यों को मनाकर देना चाहिए कि बेटा, मैं तुझे दीक्षा दूंगा पर शादी कर ले; दो बालक हो जाए; संसार को ठीक से समझ ले फिर मैं ही तुझे दीक्षा दूंगा। ऐसा कहने की आचार्यों और गुरुओं में ताकत होनी चाहिए। आये वैसे ही मत मूंड डालो!

दामाकुंड पर मैं परसो दर्शन करने गया था। अच्छा है अभी तो सबकुछ। जूनागढ अथवा भवनाथ पंचायत अथवा कोर्पोरेशन, इन सबको दामोदर कुंड का जल स्वच्छ रखना ही चाहिए। प्रवाह किसी भी तरह से बहता रखना चाहिए। आप चाहे वहां नीर ला सकते हैं तो दामाकुंड में लाइए। उसमें तर्पण और हवन कीजिए, फूल डाले ये आपकी श्रद्धा है; श्रद्धा को में प्रणाम करता हूं। पर उस समय पूजा करनेवाले आचार्यों की फ़र्ज है कि बच्चा, इतने सारे फूल नहीं डालना है; एक ही फूल पधरा दो, एक ही चावल दाल दो। आचार्य कहेंगे तो बहुत शुद्धि होगी। यजमान को बुरा भी नहीं लगेगा और आपका कुछ नुकसान भी नहीं होगा। वो तो आप कहोगे तो मानेगा। उसको कहां विधि का पता है? ये सब गंदा करने में हम हिस्सेदार नहीं है? विधि कराने में हम सब बहुत-सी वस्तुओं का निषेध करते हैं इसका ध्यान रखना है।

ना कोई गुरु, ना कोई चेला।
मेले में अकेला, अकेले में मेला।

मजबूर साहब का शे'र है। उसके अनुसार मैं किसी का गुरु

नहीं, मेरा कोई चेला नहीं। कोई कहता है तो वो सत्य नहीं कहता है। मैं किसी का गुरु नहीं हूं, मेरा कोई शिष्य नहीं है। हां, तलगाजरडा की पगड़ी मेरे लिए शंकर की जटा थी और उसी से गंगधाराएं निकली है वो त्रिभुवनदादा नागर। मुझको बहुतों ने पूछा कि जीवणदास दादा से आप नागर-नागर कर रहे हैं! बाप! जीवणदास मेहता नागर थे। वो कोंजणी के सद्गृहस्थ थे, अभी शादी नहीं हुई थी। उन्हें वैराग्य आया। दीक्षा ली। परंतु ध्यानस्वामी बापा इतने वर्षो पहले प्रेक्टिकल थे, बोले, हे नागर, आप किसी के पुत्र है, मुझे लगता है कि आपकी जागृति नज़दीक है और आप आश्रित होना चाहते हैं तो मैं ज़रूर आपको अपना आश्रित बनाऊंगा पर आप शादी कीजिए। ये क्रांति है सेंजळ की। यह हकीकत है। नहीं तो वो नागर जो मूंड़ डालते और कितना गौरव मिलता कि नागर हमारा चेला है। ध्यानस्वामी बापा ने मना किया कि जीवणदास मेहता, तुम्हे साधु बना दूंगा पर पहले तुम गृहस्थ बन जाओ। दीक्षा लेकर गृहस्थ बनाया। वो जीवणदास मेहता साधु बने और 'हरिव्यासी' उसकी अटक दी; फिर कालांतर में वो शब्द अपभ्रंश हुआ और 'हरियाणी' हो गया उसका।

मैं पगड़ी का आश्रित हूं, उसका शिष्य हूं। मेरा शिष्य कोई बनना भी मत; घाटे का सौदा मत करना! मुझसे बहुत उद्घाटन भी मत करवाना; व्यापार नहीं चलेगा! बहुत लग्न में भी मत ले जाना; वर्षभर में ही तलाक हो जाएगा! चार हाथ हो उसकी पूजा होती है, प्रेम तो दो हाथवालें से ही होता है। विष्णु की पूजा करना चाहिए। विष्णु से प्रेम होता होगा! तो तो वो चक्र चढ़ायेगा। प्रेम तो दो हाथवालें मानव जाति को कीजिए। अमुक वस्तु की पहले से ही गांठ पड़ जाती है तो सुलझती नहीं। सदीयों से ये सूत्र चला है। लक्ष्मी और नारायण दोनों को चार-चार हाथ दिए है; एक हाथ से रूपया गिरता है; एक हाथ वरद होता है, एक हाथ में कमल होता है। लक्ष्मी-नारायण को आपने कभी प्रेम करते देखा है? नहीं, चार हाथवालें प्रेम कर ही नहीं सकते। मेरे राधा-कृष्ण दो-दो हाथवाले हैं, इसलिए कुंजगलियां अभी भी गुंजती हैं। मेरे राम-सीता दो हाथवालें हैं। वनवासी राम, वल्कलधारी राम, उदासीव्रत राम भी गृहस्थ हैं। दो-दो हाथवालें ईश्वर हैं।

'मानस' के 'अरण्यकांड' में लिखा है; पहला ही प्रकरण शृंगाररस से भरपूर; लक्ष्मणजी फल-फूल लेने गये हैं और जानकीजी को बगल में बैठाकर राम अलग-अलग पुष्प चुनते हैं और छोटी-सी सलाई लेकर पुष्टिमार्गी वैष्णव जैसे बीच-बीच में गेंठ बनाकर माला बनाते हैं वैसी वैष्णवी माला राघव ने बनाई है। जानकीजी की वेणी में गूंथा, दो बाजूबंध पहनी है, एक माला पहनी है। कितने प्रेम से बैठे हैं! अपने हाथ से रामने आभूषण बनाया है।

आपके पास जो कला है, उस कला में जो परिपूर्ण कुशल होता है उसको नागर कहते हैं। एक बहन-बेटी रसोई बनाने में कुशल है तो वो नागर है। एक गायक गाने में परम निपुण है तो वो नागर है। एक सर्जक कविता के नियम में रहकर कविता का अद्भुत सर्जन करता है तो वो कवि नागर है। एक किसान अपने खेत को ऐसा जोते, ऐसा खाद डाले, बीज डाले, ऐसी बाड़ को पानी सींचे, ऐसा ध्यान रखे और पुष्कल अनाज उगाये तो किसान नागर है। एक चित्रकार केनवास, अपनी अंगुलियों में पकड़े ब्रश और रंग का मर्मज्ञ है और अपने चित्र में पूरा डूबकर आलेखन करता है तो वो नागर है। पिकासो को नागर कहने में बाधा नहीं है। भले वो जाति में न हो। फिर से कहता हूं, नागर जाति लिए मेरे प्रेमपात्र है। पर बाड़े में बांध ले ऐसी अद्भुत विचारधारा को? शंकर की जटा से बाहर निकलो और जटाशंकरी बना दो। त्रिभुवन तारक ये विचारधारा है। बहुत चर्चा चली कि नागर अर्थात् विचारधारा और क्या?

नरसिंह मेहता भी प्रसन्न नहीं हुआ होगा जितना आपका मोरारि बापू कल प्रसन्न हुआ। ऐसा दृश्य कहां देखने को मिलेगा? इतनी अपनी नागर बहन-बेटियां ने और नागरों ने पीताम्बर पहना था! जूनागढ छः सौ वर्ष बाद करवट बदल कर बैठा हुआ हो ऐसा लगा। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। ज्ञातिपरक बात करें तो भी मुझको पसंद है, पर नागर एक वैश्विक विचार है। इस विचार का मेरा मतानुसार स्वीकार होना ही चाहिए। क्यों उसे संकीर्ण करें? जीवणदास मेहता की परंपरा में यदि मेरा तन आया है तो मुझे भी गौरव नहीं होगा? मुझको आनंद होगा। परंतु साधुता के चलते मैं संकीर्ण नहीं हो सकता? साधुता के चलते मुझको आकाश कम पड़ता है अभी! साधुपना का इसलिए आनंद है कि न उसका वर्ण होता है और कुल के रूप में नागरी कुल उसका मुझे आनंद है।

विशाल बनने का यह मौका है। मेरी कथा नहीं, नरसिंह मेहता की कही कथा है कि छः सौ वर्ष बाद वापस मेरी मशाल प्रगटित होगी। दीप से मशाल तक की यात्रा उसका नाम नागर। उसको विशाल होना है। नागरों के घर में झूला इसलिए है कि जड़ नहीं रह जाता और झूला झूलते रह सकते हैं। कितने टूटा-फूटा झूला था! वो नहीं है अभी, पर रखा होता तो मेरा नज़राना माना जाता। सोफा तो जड़ है। नागर झूले पर बैठते हैं, इसका अर्थ है कि हम आगे भी जा सकते हैं, पीछे भी जा सकते हैं। हम संशोधन करनेवाले हैं। उस तरफ ज्वार है इस तरफ भाटा। और इस तरफ ज्वार है तो उस तरफ भाटा। ये सागर के लक्षण है। मेरे तो स्वभाव में ये सब ऊतरा होगा। मैं खाता भी हूं झूले पर। झूले पर ही बैठा होता हूं। सो भी झूले पर ही जाता हूं। तो ज्ञाति के रूप में महिमा स्वभाविक है पर संकीर्ण नहीं होने देना चाहिए।

उसमें जब साधुता मिल जाये तब गनाक्ष भी गगन बन जाते हैं। उसकी विशालता को कोई माप नहीं सकता।

मूलतः अपनी प्रसन्नता व्यक्त कर रहा था। ग्यारह तारकों का उनके प्रतिनिधि को प्रणाम करके सन्मान किया, प्रणाम किया इसका मुझे खूब आनंद है। आपको नहीं होगा उतना आनंद मुझे है। नरसिंह मेहता जितना या उससे अधिक कहूं तो हर्ज़ नहीं। नरसिंह मेहता को दुर्भाव तो नहीं होगा पर ये लगा होगा कि इन लोगों ने मुझे बाहर निकाला था। मुझको किसी ने बाहर नहीं निकाला पर मुझको बाहों में लिया है। तो पहली प्रसन्नता इसे गिनना। 'कुंवरबाईनुं मामेरुं' नाटक का जो मंचन हुआ वो दूसरी प्रसन्नता है। लगभग सबकी आंखों में आसू भर दिया साहब! हां, अमुक संवाद तलगाजरडा की मानसिकता में फिट न भी हो। वो आख्यानकार की मानसिकता होगी। नहीं तो झोंपड़ी में रहनेवाली लड़की होगी तो भी बाप को ताना नहीं मारेगी। व्यंगबाण है बाप की तरफ, बाकी गरीब की बेटी मर जाएगी पर बाप को ताना मारेगी? और नरसिंह की बेटी? इस वस्तु ने मुझको विचारमग्न कर दिया! मैं आख्यान करता तो ये नहीं आने देता। बेटी बाप के हृदय को मथ डालती है! और मुसिबत आती है तब सास-ससुर का सब सुन लेती है, पर बाप से कैसे कहे? ये तो बेटी जिसको हो उसे ही पता चलेगा। भ्रूण हत्या करनेवालें को इतका सपना भी नहीं आएगा साहब! लग्न तो अब विधि ही रहा है, परंतु साठ-सत्तर वर्ष पहले विवाह किया होगा उसे पता है कि कन्यादान में जब बेटी का हाथ पकड़ते हैं तब कितना कांपता है!

मुझसे किसी ने पूछा कि नरसिंह मेहता के गुरु का नाम बताईए। फिर सोचकर बताऊंगा। पर तत्काल कहूं तो उसकी भाभी ही उसकी गुरु है। भाभी ने ही ताना मारा है और भगवान तक पहुंचा दिया है नरसिंह को। उसकी भाभी प्रथम गुरु है, जो शब्द बोल गई कि कुछ करते नहीं! बड़ा होता है वही बोलता है। बेटियों, सहन कर लेना। सासु आपके कल्याण के लिए दो शब्द बोलती है। थोड़ा अलग ढ़ंग से बोले तो भी सहन कर लेना। कुंवर का ससुर कितना अच्छा है! चाहे जैसा भी कुटुम्ब में जायें और पूरा घर आपका बैरी हो फिर भी परमात्मा आपके पक्ष में कोई एकाध जन को तो रख ही देता है, नहीं तो ईश्वर का इश्वरत्व नहीं रहेगा।

जान गई जाणे जान लईने हवे हुं तो सूनो मांडवडो।
काळजा केरो कटको मारो गांठथी छूटी ग्यो।

कवि दादबापू, उनके अज्ञात चित्त या सज्ञात चित्त से ये निकला है। रुलाता कौन है? ममता ही रुलाती है, दूसरा नहीं रुला सकता। समता तो हर्ष देती है, ममता अच्छेखासे को रुलाती है। सार्वभौम कर दिया कि जहां ममता होगी वहां सभी बाप रोते होंगे। 'ममता रोती है।' बेटी बाप के हृदय को विदीर्ण कर डालती है। परन्तु भारत का जो स्वभाव है उसमें बेटी बेटी है। इसलिए नवपुरुष का हाथ थामती है तब उसका हाथ कांपता है इसके कई कारण है। बाप-बेटी का संबंध, उसमें भी संत की बेटी की क्या महिमा हैं! अभी मेरी जवाबदारी से व्याख्या करनी है। कोई प्रश्न करना हो तो मेरे सामने करना। उसका जवाब न दे सकूंगा तो मैं हारा और आप जीते। आप ऐसा मानते हैं कि इस नरसिंह में संवेदना नहीं है? संत और भक्त हृदय संवेदना शून्य होगा ही नहीं। उसके पास वेद न होगा किन्तु अच्छे-अच्छे पंडितों को अभी संवेदना नहीं दिखी ऐसी संवेदना थी। नरसिंह मेहता में कही संवेदना नहीं होगी? और वो ऐसा कहेगा कि-

भलुं थयुं भांगी जंजाळ, सुखे भजीशुं श्रीगोपाल।

पत्नी चल बसे उसकी कोई संवेदना नहीं होगी? कहीं अन्याय हो रहा है। इसका अर्थ बदलना पड़ेगा। शामळ जैसा बेटा चला जाए और उस बाप को संवेदना नहीं होगी? साधु के हृदय के विषय में तुलसी से पूछो-

संत हृदय नवनीत समाना।

कुंवरबाई, मीराबाई और मैं जिसको तलगाजरडा की बेटी कहता हूं वो लक्ष्मणाबाई। दस बेटे-दस बेटिया थी सांब और लक्ष्मणा को। भगवान कृष्ण का शताब्दी महोत्सव द्वारका में मनाया जा चुका है। अन्तिम छब्बीस वर्ष जीवनयात्रा के बाकी है। कितने वर्ष हुए होंगे उसको सांब से विवाहित होकर द्वारका आये हुए? सांब उससे पूछता है कि लक्ष्मणा, तुझको कभी पियर जाने की इच्छा नहीं होती? लक्ष्मणा कहती है, मेरा बाप योगेश्वर बैठा है, उसे छोड़कर मैं पियर नहीं जाऊंगी।

बेटियों, बहूबेटों, सीखना। कथा धार्मिक सम्मेलन नहीं है; कथा जबरदस्त स्वच्छता अभियान है। लक्ष्मणा पियर नहीं गई साहब! मैं नमन करता हूं उसको। लड़की की इच्छा नहीं होगी पियर जाने की? लक्ष्णणा की सखी ने पूछा, तेरे पति ने कभी पूछा कि ये बेटियां विवाह योग्य हो गई है! तो बोली, पति के समक्ष बात करूंगी तो उसका दिल दुखेगा। मैं धर्मपत्नी हूं, पति का दिल नहीं दुखाना चाहिए। मेरा वरिष्ठ बैठा है कृष्ण। कथा ऐसी मिलती है कि लक्ष्मणा के जीवन में ऐसा एक भी प्रसंग नहीं आने दिया कि उसके व्यवहार से सांब की आंख में आंसू आये हो। नहीं तो सांब का चरित्र बहुत अच्छा नहीं है। लक्ष्मणा बहुत दमदार पात्र है। सांब का पलड़ा तो लक्ष्मणा एक नथ रख दे वहीं ऊपर ऊठ जाये। इतना महान पात्र है। लेकिन वो पियर नहीं गई। इसका अर्थ ये नहीं कि बेटियां पियर न जायें। और सासुएं भी ऐसा न माने कि पियर नहीं जाने दिया जाना चाहिए बेटियों को।

मेरी संवेदना अनुसार लगता है शामळ और माणेक, पत्नी चले जाये और मेहता ऐसा कहे कि 'भलु थयुं भांगी जंजाळ।' इस पर विचार होना ही चाहिए। साधु तो संवेदना का सागर होता है। किसी को भी ठेस लगे तो सौ मील दूर उसकी आंख में आंसू आ जाता है। 'संत हृदय नवनीत समाना।' तुलसी कहते हैं कि साधु का हृदय मक्खन की तरह होता है। मक्खन को जब अग्नि पर रखते हैं तब ताप लगता है और पिघलता है पर साधु तो दूसरे को ताप लगता है तो वो पिघलकर ढ़ेर हो जाता है। वो नवनीत से भी ऊपर है। इसलिए इस वाक्य पर से नरसिंह मेहता भावनाशील नहीं थे ऐसा नहीं समझना चाहिए।

कल कुंवरबाई की कथा अद्‌भुत की! इस जगह ये होना चाहिए। कैसा मंचन हुआ! मैं नहीं मानता कि किसी की आंखे न भीगी हो! नरसैया भी कैसा सुन्दर बनकर आया था! वो पात्र तो मुझको बनना चाहिए! दाढ़ी कटवा दूंगा! होता रहता है! क्यों होता है?

अमथुं अमथुं हेत, हरि पर अमथुं अमथुं हेत।
बेवजह हो उसको ही स्नेह गिनते हैं। हेतुसर खाक स्नेह होगा! ये तो रमेश पारेख ही कर सकता है-

हुं अंगूठा जेवडी, मारी व्हालप बब्बे वेंत।
ये रमेश पारेख का परिचय है। अकारण उस आदमी को नहीं बदाई दिया। मैं तो अंगूठा जितना हूं। आत्मा का प्रमाण अंगुष्ठा माना गया है। परमात्मा की तरफ स्नेह मुझसे दो-दो बित्ते जितना है।

कल मुझको लगा था कि साधुबाबा का पात्र तो मुझको ही मिलेगा। नाटक वाले मेरे पास मत आना फिर! मैं नाटकवाला नहीं हूं। मैं त्राटकवाला भी नहीं हूं। मैं तो फाटकवाला हूं। समाज दुर्घटनाग्रस्त न हो इसलिए फाटक बंद करता हूं और फिर खोल देता हूं। बहुत से ऐसा कहते हैं कि बापू कथा शुरू करते हैं तब चारों तरफ देखते हैं इसलिए नज़र बंदी कर देते हैं। मुझको अपने श्रोताओं को देखने का मन होता है। मैं अपने श्रोताओं का दर्शन कर लेता हूं जहां तक नज़र जाती है। और फिर मुझको कलापी याद आता है। ये सभी मेरे फोलोअर्स नहीं पर मेरे फ्लावर्स हैं।

ज्यां ज्यां नजर मारी ठरे, यादी भरी त्यां आपनी,
आंसू महीं ए आंखथी यादी झरे छे आपनी!
माशूमोना गालनी लाली महीं लाली अने,
ज्यां ज्यां चमन ज्यां ज्यां गुलों त्यां त्यां निशानी आपनी।

नज़र बांधने की ज़रूरत नहीं है। अपने पिंड को बांधना होता है। इस जगत को बांधने में कौन सफल हुआ है? आपको पता है, कथा में आते हैं तब कैसे सुन्दर बन जाते हैं! किसी की नज़र न लगे आपको इसलिए नज़र उतार लूं आपकी!

तो बाप! कल बहुत आनन्द आया ये दूसरी प्रसन्नता। प्रेमानंद के शब्द हों तो फिर क्या कहना साहब! तीसरी प्रसन्नता, नागर समाज की पूजनीय माताएं, बहनें, युवक ये पूरी गंगा बैठी थी उनके दर्शन का आनंद आया। ये तो अभी कल का है। आज का अभी अब शुरू हो रहा है। अब तो एक वस्तु निश्चित होनी ही चाहिए कि कथा मैं नहीं चलाता पर कथा मुझको चलाती है। कारण पता नहीं कि कहां जा रहे हैं।

आज तीसरे दिन की कथा का प्रारंभ हुआ है और इसमें शीलवंत संचालन और बहन निधि ने सुंदर पद गाया मेहताजी का। हर्षल कितना सुंदर बोला! केवट से छेवट तक! एक वाक्य में पूरा प्रवचन था। मेरी ऐसी इच्छा है कि 'अस्मिता पर्व' में भी ऐसे नवयुवानों को मौका दीजिए। अभी गोल्ड एइज आशीर्वाद दें; प्रामाणिकतापूर्वक उपस्थित रहें। अपने प्रवचन में ही हाज़िर रहे और दूसरे का हो तब हाज़िर न रहे तब प्रामाणिकता की मूर्ति थोड़ी खंडित हो जाती है! ऐसे लड़कों को खोज खोज कर बुलाना है और अपने वरिष्ठ हैं, जो घोंटघोंटकर बोलते हैं, हम सबको कसुंबा का प्याला पिलाया है, स्वयं पीये बिना, वो भी खुश होंगे!

ये बेटियां-बहनें भी देवी-विमर्श पर कितना सुंदर बोली है 'संस्कृत सत्र' में! एक-दो वक्तव्य वैसे भी निकले इसमें क्या? परन्तु नई पीढी मंच पर आये। सभी चेतनाएं नहा-धोकर बैठी हैं प्रत्येक क्षेत्र में। मेरे साहित्य में युवान तो देखें कैसा-कैसा लिखते हैं! कैसा-कैसा बोलते हैं! कैसा संस्कारी हास्य पैदा कर सकते हैं! ये जगत जीने जैसा है और अब तो खूब जीने जैसा है। मरने की तो कोई उतावली करना मत! और जो निराशावादी गीत है वो बन्द कर दीजिए। नये उत्साह का गीत लाइये; जीओ; दुनिया को एन्जोय कीजिए। आनंद करने जैसा जगत है। मैं धार्मिक क्षेत्र में नहीं हूं, आध्यात्मिक क्षेत्र में हूं। आप मुझको धार्मिक क्षेत्र में कहो तो अभी पहचान बाकी है।

तो बाप! जीवन में सहज रहना चाहिए। इतना गंभीर बनने जैसा हममें कुछ है ही नहीं! धर्मगुरु को हंसते रहना चाहिए। राजनेताओं को, समाज सेवको को, साहित्यकारों को हंसते रहना चाहिए। धर्मगुरुओं का हंसना बंद हो गया है! याज्ञवल्क्य जैसा महापुरुष, जो जब प्रवचन करते तब पहले मुस्कुराते; कोई उनकी बात करे तो मुस्कुराते, वाल्मीकि न्याय अनुसार कहूं तो राम बोलते हैं उससे पहले मुस्कुराते हैं।

यह देश हंसना चाहिए। पूरी ज़िन्दगी प्रसन्नतापूर्वक जी लेना इससे बड़ी कोई मुक्ति नहीं है। कविवर टैगोर कहते हैं, कमल की पंखुड़ियां सबकी सब धीरे-धीरे विकसित हो जाये उसको मैं मोक्ष कहता हूं। अच्छे पद पर बैठे हुए ओफिसर को हंसना चाहिए। महंती पर बैठे महंतो को, पीठ पर बैठे पूजनीय आचार्यों को, लोकविद्या के उपासकों को, कवियों को सबको हंसना चाहिए। कृष्ण इतनी गंभीर प्रक्रिया से निकले पर विश्वमोहिनी स्मित उनके चेहरे से कभी नहीं गई।

शताब्दी का उत्सव द्वारका में मनाया गया फिर सबने विदाई ली। उसमें सुदामा भी आया था। उसने एक ही मांग की कि कृष्ण, आपका मित्र हूं, आप पोरबन्दर आये थे तब आपका पैर धोया था, पर हे मेरे मित्र, आप सौ वर्ष के हो गए हैं। आज मेरी इच्छा है, आप मुझको पग धोने दीजिए। मैं बड़ा हूं, ब्राह्मण हूं आप पैर नहीं छूने दोगो। आप जैसा शीलवान कौन है? मेरा मनोरथ है, कल मैं नहीं रहूंगा, मेरी इच्छा पूरी करने दीझिए। शताब्दी उत्सव में नारद भी आये हैं। द्वारका की हालत देखने रोज रात में उद्धव और नारद जाते हैं कि कृष्ण की इस राजधानी में वातावरण कैसा है? शतायु हुए कृष्ण को एक ही दुख था कि पूरे जगत में धर्म का स्थापन करने आया मैं अपने नगर में धर्म का स्थापन करना चूक गया हूं! घर के बुज़ुर्गों को तब बहुत पीड़ा होती है जब घर में उसके सिद्धांतों का आचरण नहीं हो रहा होता। तब उन्हे ऐसा लगता है कि किसलिए जी रहे हैं? कृष्ण की पीड़ा तो देखिए!

पचीस वर्ष का समय बीत गया। कृष्ण सवा सौ का उत्सव हुआ। उत्सव में सभी आये। धीरे-धीरे सब ने विदाई ली। इस दुनिया का परम नागर कृष्ण है। शंकराचार्य कहते हैं, 'नमामि कृष्ण नागरम्।' मीरां फिर बोली, शंकराचार्य इतने वर्षो पहले बोले हैं। कृष्ण को पता है कि आयुष्य का एक वर्ष शेष है।

कृष्ण इस उत्सव से परे परमतत्त्व हैं किन्तु उन्हें अन्त में जो जो याद आये हैं उन्हें देखता है। उद्धव के संग संदेश भेजा है कि मुझको इतने जनों की माफ़ी मांगनी है। ये परम नागर कहता है, मुझे पहले कर्ण की धर्मपत्नी से माफ़ी मांगनी है। अवतार इसे कहते हैं। शेष तो सभी अवतरणचिह्न कहलाते हैं। उसमें मूल नहीं आता, किसी के वाक्य आते हैं। मूल तो मेरा कृष्ण है। कृष्ण तो सदैव युवान है पर शरीर पर तो असर होगी न! लक्ष्मणा दुर्योधन की पुत्री और कृष्ण की पुत्रवधू जब रात को कृष्ण सोते हैं तब दूध का कटोरा भरकर उमें थोड़ी हल्दी और केसर मिलाकर पिलाने के लिए जाती है और कृष्ण के जो हाथ चक्रपाणि थे, जिस हाथ की एक अंगुली गिरिराज को उठा देती थी वो हाथ आज कांपते हैं!

सबने परम नागर के यहां से विदा ली है। हृदय को फाड़ डाले ऐसी घटना तब घटती है जब उद्धव जाने के लिए अनुमति मागते हैं, प्रभु मैं जाऊं? महात्मा गांधी ने पूरी 'गीता' में से जो शब्द निकाला 'अनासक्तियोग।' ये

सूत्रपात करनेवाला महापुरुष कहता है, हां, ठीक है, अब जाओ सभी, पर उद्धव, एक काम कीजिए। सौ बैलगाड़ी के करीब व्रज से गौहरा मंगाओ। और आघात ही लगेगा न! वो यज्ञ के लिए नहीं मंगवाना है। यज्ञ जैसा जीवन पूरा करना है। आठ में से मेरी एक प्रिया यमुनाजी, उसका ताबे के घड़े में जल मंगवाओ। उद्धव पूछते हैं कि कृष्ण, आप क्या कहना चाहते हैं? कृष्ण कहते हैं अब समय नहीं है। मेरी इच्छा है कि देह तो मेरी यहां से जाए प्रभास से, किन्तु मेरे अग्नि संस्कार में मेरे वृंदावन के गोहरा का उपयोग हो। मेरी गायों के गोबर से गोपीजनों का थापा हुआ गोहरा, वो कालिंदी का नीर मंगाओ।

ये जो कृष्ण का रूप है! मैं आपको कहना चाहता हूं कि मुझे तो बहुत तंगी थी उस समय! किसी दिन पांच रुपये का मनीओर्डर भी मेझा नहीं, पर रुला-रुलाकर मार ड़ाला है! मेरे कंधे पर पड़ी काली साल का बहुत अर्थ हैं; पर एक अर्थ है, ये कृष्ण के शोक की साल है। ये स्मृति है; ये कृष्ण को विस्मृत होने नहीं देती। और विस्मृति दुःख है, स्मृति सुख है। मेरी दादीमाँ-अमृतमाँ, वो दादा थे तब भी काली साड़ी ही पहनती थी। एक दिन मैंने पूछा बाल स्वभाव से कि सभी इतनी अच्छी साड़ी पहनते हैं और माँ, आप क्यों काली पहनती हैं? तो रो पड़ी थी कि बेटा, ये कृष्ण की याद में पहना है। हमारी परंपरा में उपासना तो राधे-कृष्ण की है। ये तो रोटी इसकी (रामकथा की) खाते हैं। बहुत से लोग कहते हैं, ये कमली बापू को किसने दिया? मेरी दादीमाँ ने दिया है, किसी धर्माचार्य ने नहीं दिया। तब साल का प्रचलन नहीं था किन्तु अमृतमाँ काली पुरानी सारी फाड़कर मुझको ओढाती थी। वो मेरे शरीर पर नहीं था, मेरी आत्मा पर रह गया है।

हुं तो ओढुं काळी कामळी जेमां दूजो रंग न लागे कोई।
नंद और यशोदा जितना जीये हैं, स्मृति के आधार पर जीये; पता था कि कृष्ण नहीं आयेगा।

मेरे युवान भाई-बहनों, आप टी.वी. देखे; अच्छे कार्यक्रम, नृत्य, नाटक देखे; भारत के शील का ध्यान रखकर एन्जोय करे; अपने स्वयं के क्षेत्र में परम कुशल बनकर नागरपद प्राप्त करे; खेती करे; ओफिस में जाए पर रात्रि में घर आये और फेसबुक-व्होट्स एप देख ले; बच्चों, आपसे बिनती करता हूं कि ये फेसबुक-व्होट्स एप देखने का आधे घण्टे का समय रखिए। चौबीसों घण्टे उसी पर मत लगे रहे। आवश्यक हो तो ज़रूर कीजिए। ये पाश्चात्य जगत का भेजा गया नये प्रकार का पागलपन है, एक विकृति है। समय रखिए। रात को सोने से पहले पंद्रह मिनट रखिए। चलिए, प्रायमरी शिक्षक था इसलिए कृपागुण देता हूं। हम सब ऐसे ही पास हुए थे! बहाउद्दीन कोलेज में कितनों को अपने अंदर समाविष्ट किया पर मुझे समाविष्ट नहीं किया! किन्तु कृपा की बहाउद्दीन कोलेज ने कि उसमें पढ़कर ग्रेजुएट हुआ होता तो कहीं परवारी बनकर सही-गलत करता होता! उसके बदले मुझको व्यासपीठ मिल गई! इसलिए जगत में कोई अवरोधक तत्त्व होते ही नहीं। परमात्मा की बनाई दुनिया में सब मंगल ही होता है, अमंगल हो ही नहीं सकता। अमंगल मेरा और आपका स्वार्थ निर्माण करते हैं, तेजोद्वेषी दृष्टि निर्माण करते हैं। गंधर्वराज कहते हैं, 'परम मङ्गलमसि' हे शिव, आपमें कमी होगी तो भी सराहनीय है। 'विकारोऽपि श्लाघ्यो भुवनभय भंग व्यसनिनः।' आप सर्पों को रखते हैं, ज़हर पीते हैं, भस्म लगाते हैं, मुंडमाला पहनते हैं। परन्तु बड़े आदमी का विकार भी सराहनीय है।

तो बच्चों, मेरी व्यासपीठ के पास आये हैं, उनसे भिक्षा मांग सकता हूं न? चौबीस घण्टे क्या इसके पीछे पागलपन करते हैं! ऐसा कौन-सा नाजूक वक्त है? आप स्वयं नाजूक न बनें। पितृतर्पण करें। रात को सभी व्होट्स एप, फेसबुक भी देखले, फिल्म देख ले। गुजराती साहित्य सुनें।

लांबो डगलो मूछ वांकळी, शिरे पाघडी राती।
बोल बोलतो तोळी-तोळी, छेलछबीलो गुजराती।

●

तारी आंखनो अफीणी, तारा बोलनो बंधाणी,
तारा रूपनी पूनमनो पागल एकलो।

नरसैया को याद करके रास कर लें-

धन्य आजनी घड़ी ते रळियामणी।
हे जी, मारो व्हालोजी आव्यानी वधामणी जी रे...

नरसिंह मेहता भी प्रसन्न नहीं हुआ होगा इतना आपका मोरारि बापू कल प्रसन्न हुआ। ऐसा दृश्य कहां देखने को मिलेगा? इतनी अपनी नागर बहन-बेटियां! और नागरों ने पीतांबर पहना था। जूनागढ़ छः सौ वर्ष बाद करवट बदलकर बैठा हो ऐसा लगा। मैं बहुत प्रसन्न हुआ। ज्ञातिपरक बात करें तो भी मुझको पसंद है, पर नागर एक वैश्विक विचार है। इस विचार को मेरे मतानुसार स्वीकार करना चाहिए। किसलिए इसे संकीर्ण करें? जीवणदास मेहता परंपरा में यदि मेरा शरीर आया है तो मुझे भी गौरव नहीं होगा? मुझको आनंद होगा। परन्तु साधुता के कारण मैं संकीर्ण नहीं हो सकता। साधुता के कारण मुझको आकाश कम पड़ता है अभी।

उज्जवल विचारधारा का नाम नागर है

मुझको व्यासपीठ के द्वारा प्रेमयज्ञ में आहुतियां देता है उन सबसे लेकर अंत में बैठा हुआ मेरा श्रोता उन सबको, रुखड से लेकर नागर तक सभी को व्यासपीठ से मेरा प्रणाम। कल मैं भटकने निकला! भटकता है उसे रुखड कहेंगे। मेरे राम भी भटके हैं, कृष्ण भी भटके, महादेव भी भटके हैं और जो भी भटके हैं वो सभी रुखड हुए और जो भटकते-भटकते नगर में आकर स्थिर हो गए वो नागर हुए। नागर ज्ञाति के रूप में तो मुझे आनंद है, इसलिए वंदन करता हूं पर नागर विचारधारा है, उस मूल विचार को केन्द्र में रखकर हम यहां या तो चुप हो गये हैं, या तो मुखर हुए हैं।

आज की विशेष प्रसन्नता। शीलवंत संचालन को नमन। त्रिपुटी ने मेहता नरसिंह का एक सुन्दर पद गाया। मेहता के सभी पद पसंद है पर ये पद मुझको बहुत पसंद है। मेहता के सभी पद भरोसे के हैं। तीनों बंधुओं ने सुन्दर गान किया। उससे पहले नागर नरसिंह मेहता के कुछ प्रचलित पद, जो सबके पास पहुंचना चाहिए उसे संकलित करके अंग्रेजी में रूपांतरित किया गया। मुझको बहुत पसंद आया, क्योंकि इससे अंग्रेजी में पढ़े-लिखे हो, विदेश में रहते हो ऐसे मेरे कितने युवा भाई-बहन जो मेरे फ्लावर्स हैं इस विश्वबाग के, उन सभी को बहुत मदद मिलेगी। मैं स्वागत करता हूं इस ग्रंथ का। अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं।

जब बोलती है तब अपनी अपेक्षा होती है उससे सवाया, अनुभवीय, चिंतनीय और मननीय वक्तव्य देती है बहन काजल; ये भी स्त्रीदाक्षिण्य है उनकी तरफ़ से कि चौदह मिनट में पूरा किया! पंद्रह तो जैसे-तैसे हुआ! क्या आदर दिया है इस मंच को सभी ने! ये इक्कीसवीं सदी हिन्दुस्तान के लिए शकुन है। मैं तो इक्कीसवीं सदी में जो चेतनाएं जागृत हुई है उन्हें नज़र न लगे ऐसी हनुमानजी के चरणों में प्रार्थना करता रहता हूं। कितना सुन्दर विचार हो रहा है! जो नया विचार हुआ हो, जिसे हम नवनीत कहते हैं, माखन के रूप में भी और नित-नित जो नव है वो भी। जिसके पास नवनीत होगा उसका भूखा कन्हैया होगा। कृष्ण इसी की चोरी करते हैं। कृष्ण को नवनीत अर्थात् माखन के रूप में ही पसंद है ऐसा नहीं है।

शंकरं शंकराचार्यं केशवं बादरायण।
सूत्रभाष्य कृतो वन्दे भगवन्तो पुनः पुनः।

किशोरी जानकी का दाक्षिण्य देखिए! कहती हैं कि पिताजी, निर्णय आपका होगा किन्तु एक पुत्री के विवाह के लिए धनुष तोड़े उसके साथ विवाह कर देना, ये विवेकपूर्ण निर्णय है? इक्कीसवीं सदी में, आज के समय में ये विचार करना चाहिए। इसमें वाल्मीकि नाराज़ नहीं होंगे और तुलसी भी नाराज़ नहीं होंगे और मोरारि बापू तो होंगे ही नहीं। वाल्मीकि ने तो पहले ही कहा कि मेरे 'रामायण' में किसी की यदि महत्ता है तो सीता के चरित्र की ही महत्ता है। सीता का चरित्र ही महत् है, इस केन्द्रीय विचार को रखकर की वाल्मीकि ने 'रामायण' का सर्जन किया है। बहुत बड़ा स्त्री सन्मान रहा।

पुरुष आगे और स्त्री पीछे ये तो उसकी कुलीनता है, पुरुषों का अधिकार नहीं। यहां सीता आगे है। राम का चरित्र वाल्मीकि के मन से गौण है। ये मेरे शब्द नहीं है; वाल्मीकि के शब्द है। विश्वामित्र के समक्ष भी प्रश्न आया था कि राम, लक्ष्मण, जानकी खड़े रहेंगे तो कैसा खड़े रहेंगे? कल इनके मंदिर बनेंगे और गांव-गांव में इन मंदिरों में सायंकाल होते ही

शंख गुंजेगी। अपनी राम संस्कृति है; राम की महिमा है। राम को संकीर्ण कर-करके बहुत-से बेचारे 'राम' बोलने में शरमाते हैं! 'जय सीयाराम' बोलने में उसको डर लगता है!

जानकी कहती हैं, पिताजी, आपने ऐसी प्रतिज्ञा की है कि धनुष तोड़ेगा उसके साथ विवाह होगा। आप मेरे पालक पिता हैं पर आपने ये प्रतिज्ञा की तब माँ से पूछा? मतलब, धरती से पूछा है? धनुष तोड़ेगा उससे ही विवाह करना होता तो धनुष मैं ही तोड़ डालती फिर मुझको जिससे विवाह करना होता उसे माला पहना देती। यहां तो असुर आकर दावेदारी करेंगे! और कदाचित् धनुष तोड़ डालें तो मुझे उनसे विवाह करना पड़ेगा! ये पाबंदी, ये पारतंत्र्य किस लिए? तोड़ना ही है तो मैं तोड़ डालूं; एक बार उठाया तो है ही! माता सुनयना ने कहा कि गाय के गोबर से लीप डालो नीचे; तब एक हाथ से धनुष उठाकर लीपकर वापस रख दिया। एक सेविका ने देख लिया और सुनयना को कहा कि आपकी पुत्री ने धनुष उठाकर नीचे लीपकर के वापस रख दिया! राम को भी मुश्किल हो ऐसा ये धनुष था। थोड़ी तो मुश्किल पड़ी राम को। रावण को तो बहुत पड़ी! अहंकार तोड़ना सरल नहीं है बाप! जानकी कहती हैं, मैं तोड़ डालती। फिर माला लेकर निकलती और मुझे जो पसंद आता उसके गले में वो माला पहना देती। यह विचार किया जा सकता था। पर नहीं बोली। शीलवान को तो चुप रहेगा तो भी मुश्किल और मुखर हो तो भी मुश्किल!

मंदोदरी विभीषण से कहती है कि आप तो जानते हैं कि मैं दानव कन्या हूं; हेमा की पुत्री हूं। इसलिए मुझसे रेखा नहीं लांघी जाती, नहीं तो दशानन को एक मिनट में मैं भस्म कर दूं! मेरे लिए मेरा शील ही अड़चन खड़ा करता है। इसलिए गंगासती एक महिला दूसरी महिला को कहती है कि पुत्री, जल्दबाजी मत करना जहां-तहां पैर लगने में। जब हमारे पांव हमें पूजने जैसे लगे उस दिन हमें मुक्ति मिलेगी। पैर अर्थात् आचरण। हमें अपना आचरण योग्य लगना चाहिए। उस दिन हम ही अपनी पूजा करेंगे। इसलिए-

शीलवंत साधुने वारेवारे नमीये पानबाई,
जेनां बदले नहीं वरतमान रे।

कितना बड़ा संदेश समढियाळा ने दिया हैं! अहल्या का स्वीकार क्या बताता है? विचारक तो समाज को बहुत मिले हैं। जिसके नाम से चढ़ गया है कि ये उद्धारक है, वे उद्धारक भी मिले हैं, पर स्वीकारक कितने मिले हैं समाज को? स्वीकारक चाहिए। भगवान राम ने गौतम को बुलाकर कहा होगा कि बोलिए महाराज, इस अहल्या को आप ले जा सकते हैं? नहीं तो मैं ले जाता हूं। अपने कनक भवन में इसे इज़्ज़त के साथ ले जाऊंगा। वहां ऋषि झेंप गये कि राघव! मुझसे भूल हुई है और तुलसी लिखते हैं-

एहि भाँति सिधारी गौतमनारी बार-बार हरि चरन परी।

इन शब्दों में मुझे लगता है कि अहल्या सन्मान के साथ विदा की जा रही होगी। वर तो वही है पर राम उसी पुरुष के साथ अहल्या का दूसरा लग्न कराते हैं कि अब तुम्हारे लिए ये दूल्हा योग्य है। तुम्हें छोड़कर चला गया था वो योग्य नहीं था। राम बाप बनकर विदा करते हो ऐसी ये पंक्ति है। मुझको ऐसा लगता है। यहां इस प्रकरण में लगातार 'गौतम नारी' कहा गया। 'गौतम पत्नी' शब्द नहीं है। 'मानस' का संशोधन कीजिए बाप! उसने कदाचित् पति होने का अधिकार खो दिया है। हर जगह आंखों देखा सही नहीं होता, अंतःकरण कहता है वो सच होता है।

इसलिए नितनूतन नवनीत आना ही चाहिए। सभी क्षेत्रों में ऐसे नये-नये विचार हो रहे हैं इसका मुझे आनंद है। युवा भाई-बहनों, आप चोरी करना। मोरारि बापू तो सब उलटा ही सीखाते हैं ऐसा लगेगा! कृष्ण ने भी चोरी की थी। जो नया देखें उसे ग्रहण करेंगे। खुलेआम चोरी करना परन्तु प्रज्ञाचोरी नहीं। किसी का वाक्य अपने नाम से चढ़ा दो और तालियां बजवावो, ये चोरी नहीं। चुराओ तो मनुष्य के मन को पकड़ लो। शुकदेवजी कहते हैं, कृष्ण ने मेरा चित्त चुरा लिया है। व्रजवनिताएं कहती हैं, हमारा चित्त चुराया है। किसी का कपड़ा मत चुराना बाप! पर साधु का हृदय चुरा लें कि उसके हृदय जैसा हमारा हृदय बनें। चित्त चुराना, नवनीत चुराना। जो चाहिए उसे तो सभी संग्रह करते हैं पर जिसको कोई बुलाता नहीं उसका संग्रह करना सीखो। जिसको पूरे जगत ने धक्का मारा है, जो अप्रिय हो गये हैं, जो उपेक्षित हैं, वंचित है, अंतिम है उसका आप संग्रह कीजिए। निन्दित को स्वीकारें, इसीलिए मेरी व्यासपीठ कहती है, धर्मभ्रष्ट रहित प्यार कीजिए। बहुत-से धर्म और संस्थाएं धर्मभ्रष्ट कर देती हैं! वो उनका स्वार्थ है। तो धर्मभ्रष्ट रहित प्यार कीजिए; ये संदेश जाना चाहिए।

तो मेरी दृष्टि से सभी मंचों को ये विचार करना चाहिए; सभी कलमों को ये विचार करना चाहिए; सभी जीभों को ये विचार करना चाहिए और बोलने की आदत डालनी चाहिए। परन्तु शीलवान को चुप रहे तो भी मुश्किल और बोले तो भी मुश्किल! चमत्कारों से परोपकार करने का व्रत नहीं लेना। किसी परम सत्य, प्रेम और करुणा का साक्षात्कार करेंगे तो परोपकार आपके पीछे-पीछे आएगा। सवाल है शीलवानपने का।

मैंने आपको कहा कि गुरुकृपा से अपनी जवाबदारी से मुझे जो दिखता है वो शेर करूंगा कि 'मानस' के अंदर सात नागर हैं। वैसे तो 'मानस' ही नागर है। पर सात ऐसे नागर हैं जिसकी सलाह ले सकते हैं, जिसको पैर लग सकते हैं। उसके समक्ष रो सकते है, हंस सकते हैं। उसमें पहला नागर भगवान शंकर है, जिसकी मैंने शुरूआत में ही बात की है। शिव परम वैष्णव है। व्यासपीठ ऐसा कहती है कि गागर में सागर समा दें उसका नाम नागर। तुलसीदासजी ऐसा कहते हैं कि गुणों का सागर वो नागर। तो भगवान शंकर नागर सिद्ध होते हैं, क्योंकि सागर में से जो कुछ महत्त्वपूर्ण वस्तुएं निकली वो शंभु-सागर रखते हैं। तुलसी ने तो लिखा है-

चरित सिंधु गिरिजा रमन बेद न पावहिं पारु।
बरनै तुलसीदासु किमि अति मतिमंद गवाँरु।।

तुलसी कहते हैं, शंकर नागर है और मैं गंवार हूं। शंकर परम नागर और मैं गांव का निपट गंवार। सागर में ज़हर रहता है। शंभु-सागर के कंठ में ज़हर है। समुद्र जैसा जो शिव का चरित्र है उनका ज़हर पीने का उदाहरण हम जानते हैं। वो ज़हर रखते हैं। सागर में से चंद्र निकला। चंद्र सागर की संतान है।

यस्यांके च विभाति भूधरसुता देवापगा मस्तके
भाले बालविधुर्गले च गरलं यस्योरसि व्यालराट्।
सोऽयं भूतिविभूषणः सुरवरः सर्वाधिपः सर्वदा
शर्वः सर्वगतः शिवः शशिनिभः श्री शङ्करः पातु माम्।।

महादेव जो सिंधु है उनके भाल में चंद्र है। शंकर स्वयं कल्पतरु है। 'जासु भवनु सुरतरु तर होई।' पार्वती कहती है, आप मेरे सुरतरु हैं। और कल्पवृक्ष के नीचे होगा उसे दरिद्रता का दुःख न होगा महादेव! समुद्र में से वैद्य निकला और शिवनाम जैसी कोई औषधि नहीं है।

तुम्ह त्रिभुवन गुरु बेद बखाना।

तुलसी कहते हैं, गुरु ही सच्चा वैद्य है। 'सद्गुरु बैद बचन बिस्वासा।' तो समुद्र में से धन्वंतरी निकले, वैद्य निकले हैं। शिवनाम ही औषधि है। समुद्र में से लक्ष्मी निकली। शिव के पास रमा नहीं, उमा है। ऐश्वर्य, भूति, विभूति उसके पास है। तो समुद्र में पाये जानेवाली वस्तुएं अधिकतर शिवसिंधु में दिखती है इसलिए वो नागर है।

यदि गुण सागर उसे कहे तो; अप्सराएं निकली इसलिए देवताओं ने इकठ्ठा होकर समुद्रमंथन किया उसमें से नृत्यकला का जन्म हुआ। शंकर तो 'सकल कलागुणधाम।' है। शिव-सिंधु में सभी कला है। नृत्यकला, वाचिकम्-कला सभी कला है उसमें इसलिए वो नागर है। नागर में कितनी कलाएं होती हैं!

समुद्र जब रूप धारण करता है; 'रामायण' में तो एक ही बार रूप धारण करता है। परन्तु जहां-जहां पुराणों में उसके कथानक आएं हैं तब वो ब्राह्मण रूप ही लेता है। शंकर सबसे बड़ा नागर ब्राह्मण हैं। आप कहेंगे, उनकी जनेऊ? बताता हूं चलिए। ये सब चौपाईयों में हैं। अदा मेरी है पर वरदान उसका है।

सिवहि संभु गन करहिं सिंगारा।
जटा मुकुट अहि मौरु सँवारा।।
कुंडल कंकन पहिरे ब्याला।
तन बिभूति पट केहरि छाला।।
ससि ललाट सुंदर सिर गंगा।
नयन तीनि उपबीत भुजंगा।।

शिव के तीन नेत्र है और वो जनेऊधारी नागर ब्राह्मण है। शिव ने सर्प को उपवीत की तरह धारण किया है। समुद्र में वडवानल अग्नि रहती है; महादेव के कपाल में वडवानल है।

वन्दे देव उमापति सुरगुरुं वन्दे जगत्कारणम्।
वन्दे पन्नगभूषणं मृगधरं वन्दे पशुनांपतिम्।
वन्दे सूर्य शशांक वह्निनयनं वन्दे शिवंशंकरम्।

सभी मंदिरों में परदा होता है। बांके बिहारी में जाएं तो एक मिनट में परदा आ जाता है। श्रीनाथजी में परदा आ जाता है। शंकर के मंदिर में परदा नहीं आता। वहां कोई नियत समय नहीं है। बड़े-बड़े मंदिरों तो होते हैं पर शंकर के मंदिर में समय नहीं होता कि ये मंगला, शृंगार का समय है। समुद्र गर्जना ही करता है। शंकर सोलह कलाओं में गर्जना करते हैं। उसके मंदिर में कोई परदा नहीं, क्योंकि सागर के दर्शन के लिए कोई परदा होगा? रखें तो भी कितना परदा रखेंगे? ये कोई बांके बिहारी का मंदिर नहीं; ये तो विश्वरूप है; उसको परदा नहीं होता। शिव को परदा नहीं होता।

समुद्र में से अमृत निकला है, 'सोमो भूत्वा रसात्मक।' चंद्र में अमृत है, इसी से शिव-सिंधु में चंद्र भी बिराजमान है; अमृत भी बिराजमान है; गरल भी है शिव में। आप कहेगें कि नाग कहां है? जब मंथन हुआ तब नाग की नेती बनाया था इसलिए नाग भी वहां उपस्थित था। इसलिए पहला नागर है महाराज महादेव।

शिव जैसा चतुर कौन और शिव जैसा भोला कौन? शिव जैसा कराल कौन और शिव जैसा कोमल कौन? शब्दकोश में 'नागर' का एक अर्थ होता है

अतिनिपुण, अतिचतुर। 'होशियार' नहीं, 'चतुर' शब्द है। 'चतुर' शब्द 'रामायण' ने भी स्वीकारा है। 'चतुरशिरोमणि' तुलसी कहते हैं। कोई-कोई चतुरशिरोमणि होता है। चतुरशिरोमणि अर्थात् चार के उपर बैठा हो वो। जिसको धर्म की परवाह नहीं, जिसे अर्थ की चिंता नहीं, जिसको काम-सुख बाकी नहीं, जिसको मोक्ष नहीं चाहिए। इन चारों खंभों के उपर बैठा हैं उसको चुतरशिरोमणि कहते हैं। वो महादेव शंकर है।

तो बाप! सात नागर है। 'मानस-नागर' में दूसरे नागर है महाराज जनक। 'भगवद्गोमंडल' में नागर किस-किसको कहा जाये उसका लम्बा लिस्ट है। अपने राजा ने क्या विशाल और विशद्द शब्दकोश हमें दिया है! हमें अपनी भाषा का गौरव समझ में आएं कि मेरी वाणी कितनी गर्भित और गहराईयुक्त है! थोड़ा अर्थ कहता हूं। ये कहीं नहीं लिखा गया है। नागरवेल समुद्र में से निकलता है। नागरवेल का एक अर्थ होता है भक्ति-लक्ष्मी। मनुष्य कितना भी थका हो, उदास हो, आप उसे नागरवेल का पत्ता खिला दीजिए। शोकाकुल मुंह लेकर बैठा हो उसको सुपारी-कत्था डालकर दीजिए। नागर के पास तो चांदी की डब्बी होती है पान-बीड़े की। नागरवेल की बाबत में बहुत संशोधन हुए हैं; उसके रेसे में रसायन है वो मनुष्य को प्रसन्नता के केन्द्र को प्रगट करता है। उदास मनुष्य को आप पान दीजिए तो थोड़ा फेर पड़ेगा। बहुत प्रसन्नता आएगी। आप किसी के साथ प्रेम से भक्ति की बात करे। नरसिंह मेहता कहते हैं, कृष्णकथा और कीर्तन जो गाते होंगे दासभाव से उस मंडप में सभी तीर्थ हाज़िर होंगे। प्रमाण मांगेगो तो! इसलिए लिखकर लाया हूं। Who is Moraribapu? रुखड + नागर = मोरारि बापू।

कृष्ण-कीर्तन विना नर सदा सूतकी।

जिसने कृष्ण का नाम नहीं लिया वो मनुष्य सूतकी है। यहां 'नर' लिखा है। बहन-बेटियां तो लेती ही हैं। काम करते-करते लेती है, बातें करते-करते लेती हैं।

वपन कीधे वपु शुद्ध न थाये;
सकळ तीरथ श्रीकृष्ण-कीर्तन-कथा
हरि तणा दास ज्यहां हेते गाये।

दासभाव से जहां कथा गाई जा रही होगी उसकी महिमा मेहता ने कीया है।

तो नागरवेल के पान में बहुत ताकत हैं। जिस वेल के साथ 'नागर' शब्द लगा है उसमें इतनी ताकत हो तो जिसने कृष्ण नाम का पान किया होगा! पान अर्थात् पीना; पान अर्थात् गान करना; वो जिसने पीया होगा।

तव कथामृतं तप्तजीवनं
कविभिरीडितं कल्मषापहम्।
श्रवणमंगलं श्रीमदाततं
भुवि गृणन्ति ते भूरिदा जनाः।।

तो 'नागर' के 'भगवद्गोमंडल' अनुसार अर्थ कहूं थोड़े से। नागर अर्थात् नागर नाम का एक देश। पिंगल के अनुसार इस नाम की एक समजाति मात्रिक छंद, वो सवैया का एक भेद है, उसमें बारह गुरु और चालीस लघु मिलकर बयांसी वर्ण और एक सौ चौबीस मात्राएं होती हैं। नागर यानी एक प्रकार का रतिबंध; जमीन की तंगी के चलते दीवार को टेढ़ी-मेंढ़ी करना पड़े वो नागर; इसका अर्थ यह कि नागर विचारधारा वो है कि अपना जो हो उसमें ही समा जाये, किसी का हड़पे नहीं। नारंगी को भी नागर कहते हैं। नारंगी का वृक्ष नागर है। पूर्ण पुरुषोत्तम पुरुष वो भी नागर है।

नागर नंदजीना लाल,
रास रमंता मारी नथडी खोवाणी।
काना जडी होय तो आप,
रास रमंता मारी नथडी खोवाणी।

भगवान कृष्ण रास में से अदृश्य हुए और गोपियों ने जो गीत गाया। पहले गोपियों को वेणुरव करके निमंत्रण दिया है और फिर जब गोपियां को सौभगमद हुआ है; गोपियों को अपने रूप का मद, कृष्ण हमारे वश में है, ऐसा मद हुआ उसी क्षण कृष्ण अंतर्धान हो गये! आचार्यों ने ऐसा अर्थ किया कि कृष्ण तो वहीं के वहीं थे; मद के कारण दिखना बंद हो गया।

यहां तो लिखा है, पूर्ण पुरुषोत्तम पुरुष उसकी अपेक्षा भी जिसको किसी शब्द में नहीं बांध सके ऐसे तत्त्व को नागर कहते हैं। राजधानी की महत्त्व की सभा का जो सभ्य है उसे नागर कहेंगे। एक प्रकार का शिल्प वो नागर; तीन प्रकार के जो शिल्प हैं उसमें से एक। इसलिए 'रामचरितमानस' में मैंने एक नागर को स्थान दिया है, वो नल-नील। नल-नील को तुलसी ने ब्राह्मण कहा है, क्योंकि शिल्प कलाएं उसमें थी। और सेतु रचने में वो नागर थे। ब्राह्मणों की एक जाति। मूल गुजराती होने का कोई दावा कर सके तो वो नागर है। नागरों की जन्मभूमि गुजराती मानी जाती है। आनर्त देश की राजधानी प्राप्तिपुरी अर्थात् प्रांतिज के पास के हाटकेश्वर तीर्थ में बसनेवाले बहत्तर गोत्र में से अड़सठ गोत्र ने नगर में निवास किया वो आदि कथा 'स्कंद पुराण' के अंतर्गत नागरखंड में प्रसिद्ध है। लिखने की एक रीति नागरी लिपि वो नागर। अमुक चौरासी

के नामों में एक नाम नागर गीना जाता है। नागर में से ना आकार की सूंढ को कूंचलने से चूरा-चूरा हो जाता है उसे नागर कहते हैं। इसका अर्थ है कि चबाना यानी पचाना। नागर विचार को पचायेंगे मतलब आपमें अभिमान रहेगा ही नहीं, नागर को हराना मुश्किल है। नागर बहुत चतुर होता है। अपने गांवों में नागर से गौर वर्ण किसी का नहीं गिना जाता परन्तु ऐसा नहीं है। नागर गौर ही होगा ऐसा तुलसी प्रतिपादन नहीं करते। तुलसी कहते हैं, नागर श्यामल भी होता है। ये दो भाई नागर है-

गुन सागर नागर बर बीरा।
सुंदर स्यामल गौर सरीरा।।

सांवला भी हो सकता है। और बड़े से बड़ा नागर तो सांवरा है, कृष्ण। शंकर गौरवर्ण है। इसलिए तुलसी लिखते हैं, लक्ष्मण और राम दोनों नागर हैं, परन्तु राम श्यामल नागर हैं और लक्ष्मण गौर नागर हैं।

सात का लिस्ट पहले समझ लें। शंकर, जनक, राम-लक्ष्मण, नल-नील, नगरजन, नट, परम चतुर के रूप में अंगद भी नागर हैं। ऐसे सात नागर हैं। नीति में नागर, वचन में नागर। ये सभी लक्षण तुलसी ने दिए हैं, इसके आधार पर ये कथा शुरू की है।

बड़े भाई को भी नागर कहेंगे। एक प्रकार की घास, नागर। ये घास निम्न कक्षा की नहीं है। चैतन्य महाप्रभु ने कहा, जो भक्ति करते-करते घास से भी हल्का हो जाएं और दुःख सहन करना पड़े तब वज्र जैसा कठोर हो जाये। घास यानी निर्मलता, निर्मोहिता, निराभिमानिता। छः प्रकार के काव्यों में से एक काव्य वो नागर। नारंगी का तेल, नागर है। ज़हाज का बिलैया होता है वो नागर कहलाता है। दूसरे को डूबने न दें उसका नाम नागर। नागर ये विचारधारा है। ज्ञाति के रूप में हम उसे ठीक न्याय दे सकेंगे या नहीं दे सकेंगे; कलियुग है। परन्तु ये विचारधारा तो है ही। हमारे घर में एक बिलैया था। तलगाजरडा के गढ़ के कुएं में किसी बहन-बेटी की गागर गिर जाती तो हमारे घर लेने आती; तब मुझको ऐसा लगता कि डूबते ज़हाज का बिलैया वो नागर है। इसलिए तोरल भी नागर लगती है, क्योंकि उसने डूबते ज़हाज को तारा-

पाप तारुं परकाश जाडेजा, धरम तारो संभाळ रे,
तारी बेडलीने बूडवा नहीं दउं जाडेजा रे,
एम तोरल कहे छे रे।

बिलैया का काम क्या है? स्वयं डूबे और दूसरे को बचाए। कितनी महान नागर की विचारधारा है साहब! तैरने में हमेशां स्पर्धा होती है और डूबने में हमेशां श्रद्धा होती है। दूसरा स्पर्धक नहीं होता तैरने में तो तैराउ अपने साथ स्पर्धा करता है कि गत साल एक माईल की खाड़ी तैरा था, आज दो माईल की तैरूंगा। तैरने में स्पर्धा होगी और किसी में डूब जाने में हमेशां श्रद्धा होती है। अपने यहां डूबने की महत्ता है।

कशुं कहेवाने आव्यो छुं, हुं करगरवा नथी आव्यो,
बीजानी जेम हुं जीवन अनुसरवा नथी आव्यो.
ओ दयाना सिंधु, तुं मने तारामां समावी ले,
हुं अहीं आव्यो छुं डूबवा, तरवा नथी आव्यो।

हल को नागर कहा है। गतकल मैं कह रहा था कि खेती में कुशल हो वो नागर है। जनक को मैं इसलिए नागर कहता हूं कि वो ऋषि तो है ही पर कृषि में भी नागर है। हम तो बाजरा बोयें तो बाजरा निकलेगा, पर इसने तो ऐसा हल चलाया कि उसमें से शक्ति निकली, शांति निकली, भक्ति निकली। दादबापू कहते हैं कि अपने देश की जमीन की तासीर ही ऐसी है कि हल चलाओ और सीता निकलती है! कुशल, कोविद, निपुण, विदग्ध को नागर कहा है। नाग के साथ संबंध रखनेवाला विशिष्ट समाज वो भी नागर है। नगर का है वो नागर। पंडित को नागर कहा है। नागर अर्थात् फैशनवाला। नागर रहेगा एकदम ठीकठाक, भले बाल सफ़ेद हो गये हो! सभ्य समाज को नागर कहेंगे। विवेकी समाज को नागर कहेंगे। परन्तु विचारधारा की दृष्टि से सब पनहा छोटा पड़ेगा, ऐसी उज्जवल विचारधारा का नाम नागर है। 'मानस' स्वयं नागर है। उसमें से सात नागरों की चर्चा मुझे आपके समक्ष करनी है।

तो शंकर की संक्षिप्त बात की। जनकराज की बात कल करूंगा। आज तो भगवान राम का जन्म करवाना है। परन्तु राम जन्में इससे पहले शंकर का विवाह होगा। किसी का विवाह होगा फिर कोई जन्मेगा। लग्न के बिना जन्मे हो तो हमारा समाज स्वीकार नहीं करता है। शंकर और पार्वती के विवाह के बाद राम का जन्म नहीं हुआ, जन्म तो कार्तिकेय का हुआ। परन्तु श्रद्धा और विश्वास के रूप में शिव और पार्वती संलग्न हो तो उसमें से रामकथा का जन्म हो।

भवानीशंकरौ वन्दे श्रद्धाविश्वासरूपिणौ।

श्रद्धा और विश्वास दंपती है और उनके शरीर से जन्म लेती है रामकथा।

याज्ञवल्क्य महाराज से भरद्वाजजी ने प्रश्न पूछा कि रामकथा क्या है? और रामतत्त्व को समझने के लिए उन्हों ने पहले शिवतत्त्व समझाया। ये था समन्वय। पूछा

रामतत्त्व और प्रारंभ किया शिवतत्त्व का। सती के त्याग तक की कथा सुनाई। दूसरे जन्म में हिमाचलगिरि के घर गौरी आई; शैल के घर शैलजा आई; गिरि के घर गिरिजा आई। कन्याकुमारी पार्वती का नारदजी ने नामकरण संस्कार किया। पुत्री को पति कैसा मिलेगा ये आगम भाखकर नारद चले गये हैं। पार्वती ने तप शुरू किया है। तप की फलश्रुति मिली है कि तुम्हारे मन में जो बसा हुआ है वो तुम्हें मिलेगा। भगवान शंकर के पास से भगवान विष्णु ने वरदान मांग लिया है कि महाराज, आप पार्वती को स्वीकार करें। सप्तर्षियों ने परीक्षा ली। प्रेम में पार्वती उत्तीर्ण हुई और शिव को समाचार दिया कि आपको भवानी का स्वीकार करना ही चाहिए।

पार्वती के प्रेम के कारण शिव फिर से ध्यानस्थ हुए हैं। शिव को ध्यान से मुक्त करने के लिए ब्रह्मा की सूचना से देवताओं ने कामदेव को भेजा और कामदेव ने शिव के मन में क्षोभ उत्पन्न किया। भगवान ने तीसरा नेत्र खोलकर कामदेव दहन किया है। देवताओं ने मिलकर शिव को कहा कि अब आप विवाह कीजिए। देवता कहते हैं, देवसमाज में किसी का लग्न नहीं हो रहा और हमें लगा कि आपका विवाह करें तो बारात में आयेंगे और रससभर वातावरण बना रहेगा। शंकर समझ गये कि तुम्हारा स्वार्थ है; तुम्हें तारकासुर के पाश से मुक्त होना है और मेरे यहां पुत्र का जन्म हो और यदि वो तारकासुर को मारेगा तो तुम्हारे भोग सलामत रहेंगे। तुम कहोगे और मैं विवाह करूंगा ऐसा मत मानना। मेरे हरि ने आदेश दिया है इसलिए विवाह करूंगा।

शंकर के गणों ने महादेव का सिंगार किया है। मर्यादा के खातिर मृगचर्म लपेटा है। जटा में गंगाधारा है, हाथ में त्रिशूल है, चंद्रबिंब शोभित है। पूरे शरीर पर भस्म पोता है। नंदी की सवारी है। देवता अपने समाज के साथ आएं हैं पर दूर दूर चल रहे हैं कि हम लोग पीताम्बर और ये दिगंबर! हमारी शोभा क्या? शंकर समझ गए। अपने तीन निकट के गणों शृंगी, भृंगी और ध्रींगी को बुलाए हैं। शृंगी, भृंगी सही है और ध्रींगी मेरा रखा हुआ है! शंकर भगवान

तीनों को कहते हैं कि मंत्रों का उपयोग करो। जगत में जितने स्मशान है वहां से भूत-प्रेत को बुलाओ। शंकर के गणों ने साबर मंत्र का प्रयोग किया है और पूरी दुनिया में से भूत उमड़ पड़े हैं! हिमाचल के पहाड़ी प्रदेश के लोगों का तो आनंद समाता नहीं कि हमारी पार्वती ने इतना महान तप किया, वो वरराजा कितना सुन्दर होगा! पूछते-पूछते महादेव हिमाचल के द्वार पहुंचे हैं। पार्वती की माता महाराणी मैना सखियों के साथ महादेव को पोंखने के लिए आई है। जहां महादेव की आरती उतारने गई ही, रुद्ररूप देखते ही हाथ में से आरती नीचे गिरती है और मैना बेहोश होती है!

हिमाचल, पार्वती, सप्तर्षि और नारदजी निजमंदिर में आएं हैं। नारद के प्रति सभी को दुर्भाव जगा है। बहुत शब्द कहे जाते हैं। पर नारद संत हैं; उन्होंने समझाया कि मैना, आप जिसको पुत्री मानती हैं उसकी पुत्री आप हैं। ये जगदम्बा है। गत जन्म में दक्षकन्या सती थी; राम पर संदेह करने पर शिव ने त्याग किया था। दक्ष के यज्ञ में जल गई सती आज आपके घर में आई है। वो जगदंबा है और शंकर जगतपिता है। सभी को पार्वती के प्रति नया आदर जगा है। व्यासपीठ कहती रही है, अपने द्वार पर ही शिवतत्त्व खड़ा होता है, अपने घर में शक्ति होती है परन्तु पहचान कराए ऐसा नारद जैसा परिव्राजक सद्गुरु मिल जाना चाहिए कि घर में विद्यमान शक्ति से परिचित कराएं और द्वार पर खड़े शिवतत्त्व का परिचय कराएं। भगवान शंकर ने मंडप में प्रवेश किया। दिव्य सिंहासन पर महादेव वरराजा के रूप में बिराजमान हुए हैं। आठ सखियों के साथ जगदंबा कन्या के रूप में आती हैं। वेदविधि तथा लोकविधि से विवाह संपन्न होता है।

हिमालय अपनी पुत्री को विदा करते हैं। कवि की सावधानी दे देखिए, पुत्री विवाह करती है तब माँ-बाप और सखियां सलाह देती हैं कि सास-ससुर की सेवा करना। यहां वो शब्द नहीं लिखा गया क्योंकि सभी को पता है कि शंकर के माता-पिता ही नहीं है इसलिए पार्वती को एक ही आशीर्वाद दिया-

करेहु सदा संकर पद पूजा।
नारिधरमु पति देउ न दूजा।।

नारी का धर्म एक ही है। बेटा, पति वो तेरा सबकुछ है। पुत्री को विदा किया है। आज हिमालय पिघला है। कौन नहीं पिघलेगा? पुत्री को विदा करते समय तपोवन का कालिदास का कण्व भी यदि रोता हो तो ये तो गृहस्थ है। हम सबके तो अनुभव होते हैं। मैं तो हमेशां कहता रहता हूं कि चालीस वर्ष का बाप हो तो बेटी को बिदा करता है तब सीधा साठ वर्ष का लगता है; क्योंकि बाप-बेटी का संबंध इस देश में गज़ब है, अद्भुत है। एक का एक लड़का हो वो दुर्घटना में यदि मर जाएं तो बहुत-से बाप कठोर हृदय होते हैं कि दिल टूट जाए पर आंख में आंसू नहीं आने देते, किन्तु ऐसा कोई बाप आपको नहीं मिलेगा कि बेटी को विदा करते समय उसकी आंख में आंसू दिखाई नहीं दे। फिर मिथिला के जनक हो तो भी क्या? पार्वती के पिता पर्वतराज हो तो क्या? इसमें कौन रंक? कौन राय?

विदाई हुई है। कैलास पहुंचे। शिव-पार्वती का सुन्दर, सुगंधी संसार शुरू होता है। उमा-शंकर का विहार नित्य नूतन है। समय बीतने लगा। पार्वती ने पुत्र को जन्म दिया। षड्मुख का जन्म हुआ, परम पुरुषार्थ जिसको तुलसी ने कहा है। वो कार्तिकेय ने तारकासुर नाम के राक्षस को निर्वाण देकर देवसमाज को सुखी किया। तुलसी कहते हैं, शिव का चरित्र तो सागर है, वेद पार नहीं पा सकते, मेरे जैसा गंवार किस तरह वर्णन करे? ऐसा शिवचरित्र याज्ञवल्क्य ने भरद्वाजजी को रामकथा की जिज्ञासा में सुनाया है। शिव है द्वार रामकथा का। रामकथा में प्रवेश तभी मिलता है जब शिवकथा सुनें। ये शैवों और वैष्णवों को एक करने की तुलसी की मनोभावना है। ऐसे शिव वेदविदित वटवृक्ष के नीचे कैलास पर बैठे हैं; सहजासन है। अवसर देखकर पार्वती शरण में आई और शिव से कहती है, मुझको रामकथा सुनाईए। फिर कैलास के ज्ञानपीठ से परम आचार्य भगवान शिव पार्वती को रामकथा कहते हैं वो कथा, उसमें आई हुई रामजन्म की कथा का वर्णन कल करेंगे।

नागर ये विचारधारा है। ज्ञाति के रूप में हम उसे ठीकठाक न्याय दे सकते हैं या नहीं दे सकते; कलियुग है। पर ये विचारधारा तो है ही। कुशल, कोविद, निपुण, विदग्ध को नागर कहा है। नाग के साथ संबंध रखनेवाला विशिष्ट समाज वो भी नागर है। नगर का है वो नागर। पंडित को नागर कहा है। नागर यानी फैशनवाला। नागर रहते हैं एकदम ठीकठाक, भले बाल सफ़ेद हो गये हो! सभ्य समाज को नागर कहते हैं। विवेकी समाज को नागर कहते हैं। परन्तु विचारधारा की दृष्टि से सभी पनहा छोटा पड़ेगा ऐसी उज्जवल विचारधारा का नाम नागर है।

पहाड़ों में गिरनार नागर है

बाप! सभी को मेरा प्रणाम। शीलवंत संचालन के तहत कथा का प्रारंभ हो रहा है; उसमें बेटी ने 'आजनी घडी ते रळियामणी' बना दी, इसकी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। नागर विचारधारा को अलग ढंग से प्रस्तुत किया है। जब मूल अपनी जगह पर फूल बनता है उसका नाम 'नागर विचारधारा।' बार-बार कहता हूं कि नागर ज्ञाति का भी गौरव है, परन्तु निरंतर विकसित हो रहे मूल अपनी भूमि को पकड़कर फूल तक पहुंचते हैं ऐसे कितने मूल फूल बनने के लिए अधीर हुए हैं; उसमें एक बहन ने सुन्दर 'आजनी घडी ते रळियामणी' गाया है। खुश रहो बाप! और उसमें एक गेंदा का फूल अपने जयभाई, जय हो! जब बोलते हैं, जिस विषय पर बोलते हैं, उसको समय में बांधा नहीं जा सकता! सुन्दर, सरस कितनी सारी निजता में से प्रगटित हुआ वक्तव्य! साहब! मुशायरा में शेरो को दाद मिलती है और 'दुबारा-दुबारा' होता है; कविता को दाद मिलती है और 'दुबारा-दुबारा' होता है, किन्तु किसी के प्रवचन के बाद सभा खड़ी होकर कहती हैं कि 'दुबारा-दुबारा' ऐसे युवान वक्ता, गेंदा के फूल जैसा वक्ता को हम सभीने सुना। मेरी व्यासपीठ को इसका बहुत आनंद है।

'मानस-सातसौ' से सहज ही शुरू हुआ उपक्रम कि नव दिवसीय कथा का कथासार रामकथा के रूप में प्रगट करना है और प्रसादी के रूप में सभी को बांटना है। ऐसा एक क्रम चला और वो क्रम कितना सुन्दर योग है कि पौने दो वर्ष पहले गिरि तलहटी में, भवनाथ में गिरनार के समीप पूज्य पुनिताचार्य बापू के आश्रम की भूमि पर हुई 'मानस-रूखड' का सारदोहन विवेकी नीतिनभाई और उनकी टीम ने अहेतु सेवा करके व्यासपीठ को अर्पण करके आप सभी को अर्पण करना इस मंच पर से हुआ है, उसके लिए अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। अहेतु सेवा को नमन करता हूं।

'मानस-नागर' की सात्त्विक-तात्त्विक संवादी चर्चा करते हैं। शुक्ल यजुर्वेदीय रुद्र अष्टाध्यायी के एक वेदमंत्र से शुरू करना है। बहुत प्रसिद्ध मंत्र है। इस रुद्राष्टाध्यायी के एक-एक अध्याय में एक-एक स्तवन पड़ा है। जिसे संस्कृत में 'रव' कहते हैं। एक मधुर प्रकार की रस भरी, आंसू भरी आवाज़ उसे 'रव' कहते हैं। इसी कारण भगवान कृष्ण ने वेणुनाद किया तब शुकदेवजी ने कहा, ये वेणुरव है। भूल न हो इसलिए मैंने वो मंत्र लिख लिया है। पहले मैं बोलूंगा फिर आप बोलना। समझ में आ जाएगा ऐसा श्लोक है।

मंत्र का प्रारंभ 'अघोरेभ्यः' शब्द से होता है। आपको स्मरण कराता हूं कि मानसरोवर की सबसे पहली कथा की तब एक मंत्र का आश्रय लिया था, वो रुद्राष्टाध्यायी से उठाया मंत्र है। और आप मेरे वचन पर भरोसा करें तो कहूंगा कि कुछ मंत्र दुर्गम से दुर्गम काम को सुगम कर सकते हैं। आज वर्षों बाद कहूंगा कि मानसरोवर की कथा खेल-खेल में किसी ने कराई हो तो रुद्राष्टाध्यायी के इस मंत्र ने कराई है। ये मेरी निज श्रद्धा है; आप पर आरोपित नहीं करूंगा। आप सुन रहे हैं ये ही मेरे लिए बड़ी बात है, नहीं तो आज कोई किसी को सुनता कहां है? किसी को समय ही नहीं है! और इतनी बड़ी संख्या

में, टी.वी. पर पूरी कथा लाईव हो रही है फिर भी इतनी भीड़ में और लगभग अड़तीस-चालीस डीग्री गरमी में आप श्रवण कर रहे हैं यह एक संशोधन का विषय नहीं है? जो लोग कहते हैं 'कथा-बथा' क्या है? तुम लोग थोड़ी देर यहां आओ; वी.वी.आई.पी. बनकर आओ! इसका संशोधन करो। ये मोरारि बापू बोलते हैं इसलिए नहीं; मूल्यांकन होना चाहिए। आपको मेरे प्रति भाव है तो अहोभाव व्यक्त कर दीजिए; भाव न हो तो अधोभाव व्यक्त कर दे; पर दोनों को एक तरफ़ रखकर मूल्यांकन कीजिए। ये मोरारि बापू का करिश्मा नहीं है। मैं बहुत हृदयपूर्वक कहता हूं, गिरनार की गोद में पोथीजी पर हाथ रखकर कहता हूं कि आप विचार तो कीजिए सही! हम घर में पांच लोगों को ठीक से नहीं रख सकते! आज इतनी बड़ी संख्या में तीन-तीन घंटे लोग वैसे के वैसे बैठकर सुनते हैं। ये कौन करता है? 'कोई कुछ नहीं करता, ये सब तो होता है।' ये स्मरण करके ही मनुष्य विकास कर सकता है। पर ये स्मरण न रहे तो विश्राम नहीं पा सकता। देश को, व्यक्ति को चाहिए विकास भी और विश्राम भी। तो वेद का ये मंत्र सभी लोग बोलें-

अघोरेभ्यः अथ घोरेभ्यः घोरघोरतरेभ्यः
सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः।।

शुक्ल यजुर्वेदीय ये मंत्र; इसका अर्थ ऐसा है कि सत्त्वगुणी स्वभाववालों को अंदर से विश्राम करवाना चाहिए। अपने यहां जो अघोरपंथ कहलाता है उसकी व्याख्या हमने बिलकुल गलत की है। हम कहते हैं, अघोरीबाबा, अघोरपंथ, यानी कि बहुत भीषण। नहीं, 'अघोर' का अर्थ ही होता है जो घोर नहीं, शांत है। जिसमें भीषणता नहीं वो अघोरी कहलाता है। ओशो ने बहुत ही स्पष्टीकरण किया है इस पर। अघोर तंत्र अर्थात् शांति मंत्र। जहां घोर नहीं है, भयंकर नहीं है। सत्त्वगुणवाले को शांति कि ओर ले जाता है; रजोगुणवाला हमेशां उग्र होता है और तमोगुणवाले का स्वभाव हमेशां भयंकर और कालधर्मी होता है। उत्तरोत्तर जिसकी गति सत्त्व में से रजो में, रजो में से तमो में है। इसके बदले इस मंत्र के उलटे क्रम में जाएं तो जिसका घोर स्वभाव है वो थोड़ा उग्र स्वभाव का बनेगा। कालधर्मी होगा, मारने-काटने तक पहुंच जाए वो अत्यंत तमोगुण है। रजोगुण उग्र रूप होगा पर मारेगा नहीं। और रजोगुण में से शांति की तरफ़ लौटे ऐसी जिसकी उलटी गति होती है वो, हे रुद्र! आपके द्वारा होता है। इसलिए आप सबके धारक हैं। तो आप अपने में मुझको धारण करें। मैं आपको नमन करता हूं।

तो बाप! अपना स्मरण कहता हूं। बहुत वर्ष हुए। मैं गुजरात के एक गांव से अहमदाबाद कार्यक्रम के लिए आ रहा था। मेरे साथ अलियाबाडा गंगाजला विद्यापीठ के कनुभाई मेहता थे। मेरा उनके साथ आत्मीय संबंध रहा है। डोलरकाका का स्मरण तो है ही पर शिरीषभाई मांकड एक साधक थे। हमने वहां एक शिबिर भी की थी। अहमदाबाद के एक कार्यक्रम में अध्यक्षस्थान पर उमाशंकर बापा थे। मुझे बहुत इच्छा थी कि मैं उनसे मिलूं; इससे पहले उनसे मिला नहीं था। और इतना महान आदमी संस्कृतिरक्षक! 'संस्कृति' उनकी मेगेज़िन निकलती थी। मेरी व्यासपीठ ने मनोरथ किया है कि उमाशंकर जोशी के गांव में अंजलि अर्पित करने के लिए कथा कहना है कि जिसमें तमाम साहित्यकार अंदर आ जाएं। एक बड़ा साहित्यकुंभ करना है।

तो प्रोग्राम शुरू होने में देर थी। मैंने बापा के पैर छूए। फिर बात निकली कि नागर अर्थात् क्या? कोई बिना प्रसंग चर्चा निकली उसमें उमाशंकर बापा कहते हैं, मुझे व्यक्तिगत ऐसा लगता है कि 'नागर' शब्द भी अपभ्रंश है। फिर कहते हैं कि मूल शब्द है 'सागर।' वो घिसते-घिसते 'नागर' बन गया। मुझे ये स्मरण हो रहा था। इसलिए मैंने ये मंत्र लिया कि जो सागर होगा वो ऐसी गति कर सकेगा। तमोगुण से रजोगुण, रजोगुण से सत्त्वगुण और सत्त्वगुण से तीनों वस्तु छोड़कर जिस अवस्था का कोई नाम-रूप नहीं दिया जाता है ऐसे स्थान में बैठे उसका नाम सागर। उमाशंकर बापा मदद करते हैं मुझे नागर विचारधारा में। माननियों और पूर्वसूरियों को मदद करना ही चाहिए। उन्होंने स्पष्ट कहा था कि व्यक्तिगत तौर पर ऐसा मानता हूं, इसकी शास्त्रीय चर्चा नहीं करनी है। मूल 'सागर'। 'स' यह ज्ञानवाचक शब्द है। तुलसीदासजी लिखते हैं-

गनी गरीब ग्राम नर नागर।
पंडित मूढ़ मलीन उजागर।।

वहां तुलसी ने पंडित कहा है नागर को। पंडित अर्थात् सागर। पंडित खराब नहीं है। 'भगवद्गीता' में सूत्रपात है कि चाहे कैसी भी परिस्थिति जीव पर आएं फिर भी थोड़ी

भी चिंता न करे उसका नाम पंडित। फिर चाहे उसे व्याकरण नहीं आता है, चाहे उसकी भाषा में लालित्य नहीं, भले उसको ह्रस्व-दीर्घ का ज्ञान नहीं है। रूखड को मैं किस लिए याद करता हूं? रूखड की पूरी कथा क्यों कही है?

रूखड बावा तूं हळवो-हळवो हाल जो।

रूखड में से नागरत्व तक पहुंचने के लिए हौले-हौले बढ़ना। सब कुछ इन्स्टन्ट नहीं होता। कहने का अर्थ है, रूखड धीरे चलता है। साधु, साधक जल्दबाजी मत करो बाप! कबीर साहब कहते हैं-

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सो घडा, ऋतु आवे फल होय।

माली को ऐसा लगे कि पौधे को सौ घड़ा पानी पिला दूं और इसे फल आएं। नहीं बाप! वो तो समय से ही फल आएगा। साधना धीरे-धीरे होती है। आज सब इन्स्टन्ट आया है। परन्तु पतंजलि कहते हैं, यम, नियम, आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, ध्यान, धारणा इसके बाद समाधि आती है। रूखड धीरे-धीरे चलता है, इसलिए वो गौरवशाली है, इसलिए वो सबके उपर छा गया है।

रूखड बावा तुं हळवो-हळवो हाल जो।
गरवाने माथे रे रूखडियो झळुंबियो।
जेम झळुंबे नरनी माथे नार जो,
गरवानी माथे रे रूखडियो झळुंबियो।

इसके उपर कितने भाष्य हुए! मेघाणीभाई ने, हरीन्द्रभाई ने इस पर आध्यात्मिक भाष्य प्रस्तुत किया। नर के उपर नार झळुंबे इसका अर्थ ऐसा भी हो सकता है कि 'रामायण' में लिखा है, योग, ज्ञान, वैराग्य ये सब नर है और भक्ति नारी है। भक्तिरूपी नारी वो ज्ञानरूपी नर के उपर चमकती है। रामभक्ति नहीं हो तो ज्ञान नहीं शोभता। जैसे कर्णधार के बिना का जहाज़ कहां जाएगा, पता नहीं। उसी तरह भक्ति बिना ज्ञान पर्याप्त नहीं है। इसमें ज्ञान की आलोचना नहीं है। ये सभी तत्त्वों का स्वभाव बताया है। रूखड की जो विकसित होने की प्रक्रिया है वो कभी सागर बनती है। अपने सबके लिए आशा तो बनती है न कि ऐसा होगा तो हम सब भी सागर या नागर बन सकते हैं।

गतकल हमने जो चर्चा की कि शिव नागर है। और शिव नागर है इसलिए शिव का अवतार हनुमान भी नागर है, इसलिए मुझे उसको अलग नहीं करना है; नहीं तो आठ हो जाएंगें; पर सात नागर ही कहा गया है।

जय हनुमान ज्ञान गुन सागर।
जय कपीस तिहुँ लोक उजागर।

गुण का सागर हो वो नागर है। नरसिंह मेहता तो कहते हैं, नागरतत्त्व को पाने के लिए तीन की करुणा चाहिए, फिर चाहे नागर जाति में जन्म न हुआ हो। संतकरुणा; संतकरुणा होगी तो मनुष्य को शांति मिलेगी। कृष्णकरुणा; कृष्णकरुणा होगी तो मनुष्य को कृष्ण भासित होगा। जगकरुणा; जगकरुणा लेने जैसी नहीं है। ये जब तक हम हरि के पास नहीं पहुंचेंगे तब तक फेरे में फेंका करती है। लोग कहते हैं, आप जगत में रहे, माया में रहे तो फिर 'पुनरपि जननं पुनरपि मरणं।' होगा। परन्तु ये बहुत अच्छा है। बार-बार जन्मेंगे तो विकसित होंगे।

'रामायण' में तो चौदह लोगों को मरा हुआ ही कहा है; उनके उपर हथियार नहीं उठाना चाहिए ऐसा कहा है। आपको नाम गिनवा दूं। 'कौल'; वाममार्गी। दूसरे को डराने या नुकसान पहुंचाने के लिए जो तंत्र प्रयोग होता है वो भयंकर होता है। जगत साधना के लिए तंत्र साधना करता हो तो तो गज़ब है। तंत्र विज्ञान पर ओशो ने बहुत प्रवचन किया है। पर दूसरे को हटा देने के लिए प्रयोग करते हैं तो ऐसे तांत्रिक की गति बहुत खराब होती है। 'कामबस'; जो अत्यंत कामी है उसकी निंदा है। सम्यक् काम वह जगत की ज़रूरत है। भगवान कृष्ण कहते हैं, जो धर्म से विरुद्ध नहीं है ऐसा काम मैं हूं। सम्यक् काम की बात है। तुलसीदासजी ने अति कामी को जीते जी मरा हुआ कहा है, सम्यक् कामी को नहीं। वो स्वयं जीता है और दूसरे को जीवित रखता है; जीवन चेतना प्रगट करता है।

'कृपिन'; अत्यंत लोभी मनुष्य मरा हुआ है; उसे नहीं मारना चाहिए। हम सब संसारी है; अपने ढ़ंग से व्यवस्था करना चाहिए पर अति लोभ नहीं करना चाहिए। 'बिमूढ़ा'; विमूढ़ आदमी। 'गीता' में लिखा है, मूढ़ता का जन्म अतिशय क्रोध से होता है। और मूढ़ता आने के बाद स्मृति विभ्रम होने लगती है। आपको कुछ भान नहीं रहता कि किसके समक्ष बोल रहा हूं, क्या बोल रहा हूं। स्मृति विभ्रम के बाद बुद्धि का नाश होता है। 'अतिदरिद्र'; गरीब हो वो आदमी जीने के लायक नहीं है ऐसा नहीं, पर अति दरिद्रता, फिर वचन की भी दरिद्रता, दृष्टि की दरिद्रता, विचारों की दरिद्रता जिसमें हो वो सभी मृत्यु पाए हुए हैं। 'अजसी'; जिसको जगत में बदनामी मिली है वो मरा हुआ है। 'मानस' में लिखा है, प्रतिष्ठित को अपकीर्ति प्राप्त हो वो अनेक प्रकार की मृत्यु है, उसे नहीं मारना चाहिए। 'अतिबूढ़ा'; अतिवृद्ध, शरीर से नहीं पर मन से जीर्णशीर्ण हो गया हो उसको आदर देना चाहिए। 'सदा रोगबस'; सदा रोग में ही जीता हो उस पर हाथ नहीं उठाना चाहिए, वो मरा हुआ ही है। 'संतत क्रोधी'; निरंतर क्रोध करता हो वो जीते जी मरा हुआ है। 'बिष्नु बिमुख'; जो विष्णु से विरुद्ध हो, जो वैष्णव नहीं है वो मृतक है। कृष्ण को न भजे वो सूतकी है; उसके अस्तित्व की कोई नोंध नहीं लेता हैं।

'श्रुति संत बिरोधी'; वेदों का विरोध करता है वो मरा हुआ है। न समझ आएं तो कोई बात नहीं पर विरोध नहीं करना चाहिए। वेद, वेद है। पहला ऋग्वेद आया अपने यहां। केवल साहित्य माने तो भी दुनिया का प्रथम साहित्य ऋग्वेद है। संत का विरोध नहीं करना चाहिए। यह प्रश्न ज़रूर आयेगा कि संत कहेंगे किसको? ये सभी व्याख्या इक्कीसवीं सदी में करना चाहिए। बाप! संत-साधु में श्रद्धा न जगे तो कोई बात नहीं, निंदा किसलिए करते हो? मैं तो कहता हूं कि भेख की भी निंदा नहीं करनी चाहिए। अंदर वैसा जीया न जाता हो तो यह जानकर भी भगवा कपड़ा अपना वंदनीय वस्त्र है। 'तनुपोषक'; जो केवल शरीर का ही पोषण करता हो, इतना अधिक देहकेन्द्री हो गया हो वो मरा हुआ है। 'निंदक'; दूसरे की निंदा ही करना, कहीं से अच्छा लेना ही नहीं, वो मरा हुआ है। 'अघखानी'; जो निरंतर पाप करता है वो मरा हुआ है। पाप करनेवाले की पाप करने की वृत्ति नहीं होती परन्तु मनुष्य का स्वभाव बन जाता है ऐसा। उसको ऐसा ही लगता है कि इसमें क्या गलत है? यह सब स्वाभाविक ही करता है वो। जिसको गलत बोलने की आदत हो तो हर मिनट गलत बोलता है! उसको पता ही नहीं कि मैं भूल कर रहा हूं। ये उसका स्वभाव है।

कौल कामबस कृपिन बिमूढ़ा।
अति दरिद्र अजसी अति बूढ़ा।।
सदा रोगबस संतत क्रोधी।
विष्नु बिमुख श्रुति संत बिरोधी।।
तनु पोषक निंदक अघ खानी।
जीवत सव सम चौदह प्रानी।।

हे रावण! ये चौदह लोग जीवित हो तो भी मरे हुए हैं; ऐसा एक वक्तव्य 'मानस' में आया है।

नागरकुल में जन्म हुआ वो तो बहुत आनंद का अनुभव करते हैं पर नागरत्व तक पहुंचने की विचारधारा में हनुमान भी नागर है। एक दिन मैंने तांबे का हंडा और तांबे के गागर की चर्चा की थी। मुझको कहना है कि सभी धातुओं में तांबा नागर है; मुझे अपनी जिम्मेदारी से कहना है; सभी वनस्पतियों में पीपल का वृक्ष कृष्ण है, पर समस्त वनस्पतियों में बरगद नागर है। सभी देवताओं में महादेव नागर है। नरसिंह जो नागर है, तो प्राणीजगत में सिंह नागर है; हंस नागर है; वह गुण और अवगुण का विवेक चुन लेता है। तुलसी ने संत को नागरपना का पद दिया है। संत वो है जो दो वस्तु सामने आएं तब अपने विवेक से ग्राह्य और अग्राह्य क्या है, ये अलग करके निर्णय करता है। हंस नागर है। नक्षत्रों में चंद्र नागर है। यद्यपि 'गीता' में कृष्ण ने भी उसे विभूति कहा है पर कृष्ण नागर है, इसलिए चाँद नागर है। चंद्र उज्जवल भी है और उसमें काले-काले धब्बें भी है। 'सुंदर स्यामल गौर शरीरा।' ये नागरपना है। गतकल अपनी चर्चा हुई कि नागर इतना उज्जवल वर्ण कि उससे अधिक उजला कुछ होगा ही नहीं; परन्तु ऐसा हर जगह सही नहीं है। श्यामल रंग की भी एक शोभा है। एक समय ऐसा था कि लड़कियों से पूछा जाता कि उसे कैसा वर चाहिए? तो कहती, सांवरो। जानकी से भवानी ने पूछा कि तुझे कैसा वर चाहिए? तो कहे, 'सहज सुंदर साँवरो।'

सांवरियो रे मारो सांवरियो,
हुं तो खोबो मागुं ने दई दे दरियो।

तो नक्षत्रों में चंद्र नागर है। अपनी जिम्मेदारी पर कहने दीजिए, पहाड़ों में गिरनार नागर है। हिमालय की महानता उसकी जगह है पर पर्वतों के समूह में गौरवशाली गिरनार नागर है। जलसृष्टि में, रससृष्टि में, वरुणदेव की सृष्टि में नागर यमुनाजी है। गंगाजी का रूप अलग है। इसलिए वैष्णवों में जमुनाजल की जितनी महिमा है उतनी गंगाजल की महिमा नहीं है। इसमें गंगाजल की आलोचना नहीं है। महाप्रभु श्री वल्लभ भगवान तो अष्टक लिखते हैं-

नमामि यमुनामहं सकलसिद्धिहेतुं मुदा।

स्नान करने की विधि आती है तब गंगाजल से स्नान कराना है ऐसा नहीं आता। गंगाजल पिलाना ऐसा कोई कहता है तो भी डर लगता है! गंगाजल में भय है लोगों को, यमुनाजल में भय नहीं है।

धान्य में गेहूं नागर है। चावल पूजा में प्रयुक्त होता है पर गेहूं नागर है। लड्डू कहीं चावल के आटे से नहीं बनेगा; गेहूं के आटा से ही लड्डू बनेगा। जयभाई ने बढ़ियां कहा कि रोटी की चोईयां बनाकर खाते थे! क्या हम दूसरे के पीछे पड़ गये है! कैसे-कैसे खुराक आ गये हैं! किसी को पकाना नहीं है! मेरी बहन-बेटियों, रसोईघर में जाना, रसोई बनाना। केवल फास्ट फूड में ज़िंदगी मत गंवाना। तो पता चलेगा कि गेहूं का दाना कैसा सेवक है!

ऐसे नागर में रामकथा में दूसरा नाम है महाराज जनक का। मुझे शास्त्रीजी के पास से एक श्लोक मिला था, उसमें लिखा है कि जिसको दूसरा कुछ न करना पड़ता हो, जिन्हें आश्रितों का समूह बहुत सद्भावनापूर्वक सेवा करते हो फिर भी श्रम करता है उसका नाम नागर। अच्छा संग करता है उसका नाम नागर। साधु का संग करता है वो नागर। श्रम करता है वो नागर। 'कह कबीर कछु उद्यम कीजै।' भगवान व्यास नारायण कहते हैं, प्रमाद मृत्यु का पर्याय है, 'प्रमादो वै मृत्यु।' रूप हो, गुण हो, समाज में नाम हो, प्रतिष्ठा हो; ब्रह्मानंदजी का एक पद है कि 'सत्कर्म करे और चुप रहे।' ऐसा जिसका साधुचरित व्यक्तित्व है उसे नागर कहेंगे।

जनक साधुसंग में बैठनेवाले हैं। कभी अष्टावक्र, कभी शुकदेव, कभी याज्ञवल्क्य जैसे ऋषियों के साथ बैठकर जो मनुष्य वेदचर्चा करता है इसलिए वो नागर है। जनक ने हल जोड़ा; कृषक है इसलिए नागर है। जनक की बहुत महिमा तुलसीदासजी ने गाई है। बड़े-बड़े परमहंस उनके पास दीक्षित होने के लिए आते हैं और फिर भी सरल-तरल विदेह होने पर भी किसी को पता नहीं चलने दिया; अपने तमाम योग को जिन्हों ने भोग में छिपा रखा था।

जोग भोग महँ राखेउ गोई।

राम बिलोकत प्रगटेउ सोई।।

इसी कारण दूसरा नागर जनक है। तीसरा नागर मैं दोनों भाईयों को साथ में लेता हूं, राम और लक्ष्मण। ये दोनों नागर हैं।

बिनय सील करुना गुन सागर।

जयति बचन रचना अति नागर।।

ये सभी नागरत्व की परिभाषा है। जिसमें विनय हो, वो नागर है। धनवान हो उसे धनवंत कहते हैं। परन्तु धनवंत होगा वो शीलवंत होगा कि नहीं यह प्रश्नार्थ है। बलवान को बलवंत कहते हैं परन्तु शीलवंत होगा कि नहीं यह प्रश्नार्थ है। कोई ज्ञानवंत है पर शीलवंत होगा कि नहीं यह प्रश्न है। यह समाज शीलवंत को स्वीकार करता है। इसलिए फिर से गंगासती को याद करता हूं कि 'शीलवंत साधुने वारेवारे नमीए।'

राम-लक्ष्मण नागर हैं। उनका शील और विनय अद्भुत है। हमारे राजेन्द्रदास बापू कहते थे कि राम और रावण का युद्ध था वहां राम का शील आप देखो! भगवान राम ने रावण के शरीर को क्षत-विक्षत कर डाला, रथ टूट गया, घोड़े नीचे गिर गये और रावण जैसा रावण बहुत श्रमित हो गया। बलवंत रावण के समक्ष वाल्मीकि शीलवंत राम को प्रस्तुत करते हैं। मैंने पढ़ा है, दोनों पाठ मिले हैं मुझको। युवानों से मेरी प्रार्थना है कि 'वाल्मीकि रामायण' भी देखिएगा। अब तो आपकी मुठ्ठी में शास्त्र है।

युद्ध पूरा होने के नियम थे कि सूर्यास्त हो उससे पहले युद्ध पूरा हो जाता, फिर आमने-सामने एक दूसरे की हालचाल पूछते। भगवान राम नंगे पैर थे। रथ नहीं था और बाण भी हाथ में रखने जा रहे थे पर रोक लिया। क्योंकि बाण उठा लें तो चढ़ने के बाद उतरता नहीं ऐसा राम का नियम इसलिए बाण लिया नहीं और धनुष को कंधे पर रख दिया। इसका अर्थ ये कि अभी युद्ध नहीं करना है। धीमे-धीमे राघव दशानन के पास जाते हैं। खून में लतफत था रावण। उसके सामने देखकर राम कहते हैं, लंकापति, मुझे ऐसा लगता है कि आप आज बहुत थक गये हैं; मेरे बाणों ने आज आपको बहुत आघात पहुंचाया है। आपको बहुत पीड़ा हो रही होगी। मुझे लगता है कि आज युद्ध न करें। आप विश्राम कीजिए। दुनिया का सबसे बड़ा वैद आपकी लंका में है। वो बताए उस औषधि से उपचार कीजिए। कल युद्ध के समय आएंगें तब दशरथ पुत्र राम आपके स्वागत में होगा। ऐसा कहकर रावण को भेजा और उस समय पहली बार कदाचित् रावण की आंख में आंसू आएं और कहा कि रावण का नाश चार-पांच दिन बाद होगा पर रावणत्व का नाश आज हो गया। बल से तुम रावण का नाश करोगे पर शील से आज रावणत्व मर चुका है।

राम-लक्ष्मण करुणावान हैं, गुण के सागर हैं और बड़े से बड़ा नागर का लक्षण बताया 'जयति बचन रचना अति नागर।' वाणी की प्रस्तुति में, राम, तू नागर है। नागरों की वाणी की प्रस्तुति ऐसी होती है कि पता चलता है कि ये नागर है। वैसे, परशुराम ने राम को ये प्रमाणपत्र दिया है कि तुम्हारी जय हो। वैर लेकर आया मनुष्य मार डालूंगा, वो ऐसा बोलता है! तो शिव नागर है; साथ में हनुमानजी नागर है। जनक नागर है। राम-लक्ष्मण भी नागर हैं। नगरजन भी नागर है, ऐसा 'रामायण' में कहा है; वो चौथा नागर। पांचवां नटकला, जीवन की कोई भी कला में कुशल है उसको तुलसी ने नागर कहा है। अंगद नागर है। तो नागरों की श्रेणी ही रामकथा में है। उसमें से नागरों की वंदना कर रहे हैं।

कल हमने शिव का विवाह किया। शिवजी कैलास से वटवृक्ष के नीचे बैठे हैं। पार्वती शरण में आकर कहती हैं, महाराज, आज आप खूब प्रसन्न है और मेरे मन में जिज्ञासा है कि रामतत्त्व क्या है उसे आप मुझे कथा द्वारा सुनाओ। गत जन्म में रामतत्त्व नहीं समझ सकी इसलिए मुझे पूरा जीवन खोना पड़ा! भगवान शंकर अंतर में झांककर बाहर निकले और शिव बोले, हे पार्वती, धन्य हो, आपके समान उपकारी कोई नहीं है। साथ में ऐसी कथा पूछी है कि सकल लोक को पावन करनेवाली गंगा जैसी कथा है। देवी, आपने प्रश्न पूछा है कि रामतत्त्व क्या है? चरण बिना गति करता है, हाथ बिना कर्म करता है, आंख बिना सबको देख सकता है, कान बिना सुन सुकता है, जीभ बिना बोल सकता है, शरीर बिना सबको स्पर्श कर सकता है, घ्राणेन्द्रिय बिना सूंघ सकता है; ऐसा जो निराकार तत्त्व है, वो ब्रह्म राम है। शिवजी कहते हैं कि ईश्वर के लिए कार्य-कारण का संबंध नहीं होता। फिर भी राम नराकार बनें उसके पांच कारण बताएं हैं।

पहला कारण शिव बताते हैं, जय-विजय को वैकुंठ के द्वार पर सनतकुमारों ने शाप दिया और उसके निर्वाण के लिए राम को आना पड़ा। दूसरा कारण सती वृंदा। जगत मंगल के लिए विष्णु भगवान को उसका सतीत्व भंग करने के लिए वृंदा का दिया गया शाप इसलिए राम अवतरित हुए। तीसरा कारण, नारदजी ने भगवान को शाप दिया था कि स्त्री विरह में तुमने मुझे बहुत तड़पाया; एकबार मनुष्य रूप लोगे और अपनी धर्मपत्नी के विरह में तुम रोओगे तब तुम्हें पता चलेगा! इस नारद के शाप के कारण राम ने ललित नरलीला की है। चौथा कारण, स्वयंभू मनु और शतरूपा महारानी ने नैमिषारण्य में गोमती नदी के तट पर वर्षों तक तपस्या की। तप की फलश्रुति स्वरूप आकाशवाणी ने वरदान दिया कि तुम्हारे यहां पुत्र बनकर आऊंगा। पांचवां कारण, राजा प्रतापभानु, बहुत अच्छा राजा भी कुसंग में लिपटा इसलिए ब्राह्मणों ने शाप दिया। प्रतापभानु रावण बना, अरिमर्दन कुंभकर्ण बना, उसका मंत्री धर्मरुचि ने दूसरे जन्म में दूसरी माता के पेट से जन्म लेकर विभीषण बना।

रामकथा में राम के जन्म की कथा से पहले रावण के जन्म की कथा बताई है। रावण ने, कुंभकर्ण ने, विभीषण ने कठिन तपस्या करके दुर्गम और दुर्लभ वरदान प्राप्त किए हैं और उस वरदान का दुरुपयोग करके जगत में भयंकर आतंक मचाएं हैं। जगत भ्रष्टाचार से भर गया है। धरती कांपने लगी है। गाय का रूप लिया है। ऋषि-मुनियों के पास धरती रोते-रोते गई। ऋषि-मुनियों ने कहा, हम असहाय हैं। सबने देवताओं से कहा तो देवता बोले, हमारा पुण्य खत्म हो गया है। सभी ब्रह्मा के पास गएं। ब्रह्मा कहते हैं, मैं भी अब लाचार हूं; अब एक ही उपाय है कि हम सब मिलकर परमतत्त्व को पुकारें। सबने ब्रह्मा की अगवानी में परमतत्त्व की पुकार की है। आकाशवाणी हुई है, हे धरती, हे देवगण, ऋषि-मुनिगण, हे ब्रह्मा, डरो मत। अयोध्या में महाराज दशरथजी के यहां मैं प्रगट होऊंगा। प्रतीक्षा कीजिए। युवा भाई-बहेनों, पहले पुरुषार्थ करना चाहिए, फिर प्रार्थना करनी चाहिए और फिर प्रतीक्षा करनी चाहिए। ये तीनों इकठ्ठा होगें फिर जीवन में कुछ प्राप्त होगा।

तुलसी हमें अयोध्या ले जाते हैं। महाराज दशरथजी, अयोध्या के सम्राट; रघुकुल के धर्मधुरंधर पात्र; ज्ञानयोग, कर्मयोग और भक्तियोग तीनों मानो दशरथ में चरितार्थ होता है, ऐसा अद्‌भुत पुण्यश्लोक व्यक्तित्व। रानियां उनके अनुकूल जीवन जी रही थी। रानियां राजा को प्रेम करती हैं और आदर करती हैं। मैं युवा भाई-बहनों को कहता रहता हूं कि आपके घर में राम प्रगट हो; राम अर्थात् आराम, विराम, विश्राम का जन्म हो इसके लिए दो ही काम करना। पति को पत्नी आदर दें और पति पत्नी को प्रेम दें। ये दो वस्तु इकठ्ठी होगी तो उसके घर राम जैसा संतान पैदा होगा। पर इतना भी नहीं होता है! जो नई पीढ़ी आ रही है उसको व्यासपीठ से करबद्ध प्रार्थना है कि दांपत्य को दिव्य बनाएं। एक-दूसरे को प्रेम और आदर का आदान-प्रदान कीजिए और हरि को भजिए। युवानों, शील को बरकरार रखकर दुनिया को एन्जोय कीजिए। अच्छे गीतों को सुनिए, अच्छे नाटकों को देखिए, अच्छी फिल्मों को देखिए। परन्तु आपका सभी काम पूरा हो जाए फिर रात को सोने से पहले आपको नींद नहीं आएं तो पांच मिनट आप जिसको मानते हो उस हरि को भजिए। राहत इन्दौरी कहते हैं-

मेरे बच्चों, दिल खोलकर तुम खर्च करो,
मैं अकेला ही कमाने के लिए काफ़ी हूं।

इसी तरह अपने देश के साधु-संत कहते हैं कि युवानों, आप खूब मौज कीजिए, भजन आपके लिए हम करेगें। यदि ये तीन वस्तु होगी तो जीवन में आरामरूपी अवतार होगा।

महाराज दशरथ और रानियों का जीवन सुन्दर है, परन्तु एक पीड़ा है कि पुत्रसुख नहीं है। राजा को लगा कि रघुवंश मुझसे पूरा हो जाएगा? किससे कहूं? जब किसी से न कहा जा सके तब अपने बुद्धपुरुष, सद्‌गुरु के पास जाना चाहिए। जिसके-तिसके सामने हाथ मत फ़ैलाना। दशरथजी वशिष्ठजी के द्वार पर गये; अपना सुख-दुःख गाया, महाराज, मेरे भाग्य में पुत्रसुख नहीं है? वशिष्ठजी बोले हैं, राजन्, मैं तो प्रतीक्षा में हूं कि आप आकर ब्रह्म की जिज्ञासा करें, तो ब्रह्म को आपके घर बालक बनाकर खेलता हुआ कर दूं। शृंगी ऋषि को बुलाओ; पुत्रकामेष्टि यज्ञ कराओ। पुत्रकामेष्टि यज्ञ हुआ है। आखिरी आहुति में प्रसाद की खीर लेकर यज्ञपुरुष प्रगट होते हैं। वशिष्ठजी को कहा कि राजा को कहिए कि रानियों में यथायोग्य प्रसाद बांटे। तीनों रानियों ने प्रसाद धारण किया हैं। तीनों रानियां सगर्भा स्थिति का अनुभव करती हैं।

भगवान के प्रगट होने का समय नज़दीक आया। योग, लगन, ग्रह, वार, तिथि, पंचांग अनुकूल हुआ है। त्रेतायुग, चैत्रमास, नये वर्ष की पहली नवरात्रि; शक्तिपूजा के दिन पूरे हुए और शक्तिमान को प्रगट करने की नवमी तिथि है। मध्याह्न का समय। न तो ठंडी है न तो गरमी। मंद, सुगंध, शीतल वायु बह रहा है। सूरज में आज अमृत बह रहा हो ऐसा लगता है। गर्भ स्तुतियां होने लगी। स्वर्ग के देवता, पाताल के नागदेवता और पृथ्वी के ब्राह्मण देवता परमात्मा की गर्भस्तुति करते हैं। समस्त जगत में जिसका निवास है, जिसके अंदर समस्त जगत निवास करता है ऐसा ईश्वर, परमात्मा, ब्रह्मतत्त्व प्रगट होता है। माँ कौशल्या के भवन में प्रकाश फैला है; कुछ अवतरित होता हुआ दिखा और माँ ने देखा कि बहुत बड़े प्रकाशपुंज में से चतुर्भुज रूप में कुछ प्रगटित हुआ है। तुलसी स्तुति लिखते हैं-

भए प्रगट कृपाला दीनदयाला कौसल्या हितकारी।
हरषित महतारी मुनि मन हारी अद्‌भुत रूप बिचारी।।

कृपालु परमात्मतत्त्व प्रगट हुआ है। माँ को ज्ञान हुआ। प्रभु हंसे। फिर कौशल्या ने मुंह फेर लिया। परमात्मा ने पूछा कि मुंह क्यों मोड़ लिया? मैं आया हूं। माँ ने कहा, आप आये हैं, आपका स्वागत है। आप वचन भूल गये हैं। आपने नराकाररूप में आने की बात कही थी। आप चतुर्भुज हैं। परमात्मा पूछते हैं कि मनुष्य कैसे बने? इस बात का तलगाजरडा को बहुत गौरव है कि मेरे देश की एक माँ ईश्वर को मनुष्य कैसे बन सके इसका पाठ पढ़ाती है। माँ कहती है, दो हाथ कीजिए। प्रभु ने दो हाथ किए। प्रभु छोटे होते-होते नवजात बालक हो ऐसे हो गए। माँ कहती है, बालक बने किन्तु बोलते हैं बड़े की तरह! बालक तो रूदन करता है। आप रोएं। भगवान ने कहा, मुझ पर क्या दुःख पड़ा है कि रोऊं? माँ कहती है, तुम पर दुःख नहीं पड़ा, तुम्हारी बनाई दुनिया पर पड़ा है! अपने नाज़िर कहते हैं-

गगनवासी, धरा पर बे घड़ी श्वासो भरी तो जो।
जीवनदाता, जीवन केरो अनुभव तुं करी तो जो।
जीवन जेवुं जीवन तुज हाथमां सुपरत करी देशुं,
अमारी जेम अमने एक पळ तुं करगरी तो जो।

बालक जन्मते ही हँसे और बातें करे तो हमको डर लगता हैं। बालक रोना चाहिए। इसलिए तुलसी मेडिकल सायन्स का अनुसरण करते हुए लिखते हैं। ये केवल धार्मिक ग्रंथ नहीं है, वैज्ञानिक ग्रंथ है। प्रभु ने माँ का आदेश सुना और बालक रूप में रोते हैं। माँ के अंक में प्रभु पधारे हैं। बालक का रुदन सुनकर अन्य रानियां दौड़ी कि कौशल्याजी ने हमसे प्रसव पीड़ा की शिकायत नहीं की और सीधा बालक रो रहा है! प्रगटा ब्रह्म और हुआ सबको भ्रम! इसमें से निराकरण तो कोई बुद्धपुरुष ही दे सकता है।

महाराज दशरथजी को समाचार देते हुए दासों ने कहा कि महाराज, बधाई हो; महारानी कौशल्या ने पुत्र को जन्म दिया है। पुत्रजन्म हुआ, सुनते ही महाराज को ब्रह्मानंद हुआ है। जिसका नाम सुनते ही शुभ होता है वो तत्त्व मेरे घर बालक बनकर आया है? वशिष्ठजी पधारे हैं। निर्णय हुआ कि ब्रह्म बालक बनकर आया है। राजा परमानंद में डूब गए। अयोध्या में राम प्रागट्य का उत्सव आरंभ हुआ है। आज 'मानस-नागर' की इस व्यासपीठ पर से, गिरनार की पावन धरती पर मेहता के स्मरण में आयोजित कथा में रामजन्म हो रहा है तब आप सभीको बधाई हो, बधाई हो, बधाई हो।

मुझे अपनी जिम्मेदारी पर कहना है; सभी वनस्पतियों में पीपल का वृक्ष कृष्ण है, पर समस्त वनस्पतियों में बरगद नागर है। सभी देवताओं में महादेव नागर है। नरसिंह यदि नागर है, तो प्राणीजगत में सिंह नागर है; पक्षीजगत में हंस नागर है; वो गुण और अवगुण का विवेक चुन लेता है। तुलसी ने संत को नागरपना का पद दिया है। संत वो है जो दो वस्तु सामने आये तब अपने विवेक से ग्राह्य क्या है और अग्राह्य क्या है उसे अलग करके निर्णय करता है। हंस नागर है। नक्षत्रों में चंद्र नागर है। मेरी जिम्मेदारी पर कहने दीजिए, पहाडों में गिरनार नागर है। हिमालय की महानता उसकी जगह है पर पर्वतों के समूह में गौरवशाली गिरनार नागर है।

कथा-दर्शन

- कथा धार्मिक सम्मेलन नहीं है, कथा जबरदस्त स्वच्छता अभियान है।
- जिनको चार हाथ हो उनकी पूजा होती है; प्रेम तो दो हाथवालों से ही होता है।
- बुद्धपुरुष कभी किसी को जवाब नहीं देता; जो जागृत करे उसका नाम बुद्धपुरुष।
- शीलवान को तो चुप रहे तो भी मुश्किल और मुखर हो तो भी मुश्किल।
- संत और भक्तहृदय संवेदनशून्य नहीं हो सकता।
- साधु साधन नहीं है, साधु साध्य है।
- भजन में जब मुसीबत आयें तब समझना कि हमारा मार्ग सच्चा है।
- कसौटी सोने की होती है, कथीर की नहीं।
- आप सच्चे हो फिर भी हंसकर सहन करो उन जैसा तप जगत में ओर कोई नहीं है।
- इन्कार में घर्षण है, स्वीकार में शांति है।
- स्वीकार जैसा कोई महामंत्र नहीं।
- विशालता ही विश्राम प्रदान कर सके, संकीर्णता विश्राम प्रदान न कर सके।
- तैरने में स्पर्धा होती है और किसी में डूब जाने में हमेशां श्रद्धा होती है।
- जब मन शुद्ध होगा तब पूरा जगत ब्रह्ममय महसूस होगा।
- सब जगह आंखे देखा सच्चा नहीं होता, जो अंतःकरण कहे वह सच्चा होता है।
- पूरी ज़िंदगी प्रसन्नता से जी सके इनसे बड़ी कोई मुक्ति नहीं है।
- गंगाजल को भी पवित्र कर सके ऐसा तत्त्व आंसू में है।
- ईर्ष्या, निंदा और द्वेष मनुष्य की आयु कम करते हैं।
- किसी के प्रभाव में आना अच्छा नहीं; अपने स्वभाव में जीना उत्तम है।
- इतिहास तथ्य पर आधारित होता है, अध्यात्म सत्य पर आधारित होता है।
- जो दूसरों को हल्का समझे उनके जैसा हल्का ओर कोई नहीं है।

रामत्व केवटत्व तक पहुंचे और केवटत्व रामत्व तक पहुंचे ये परिपूर्ण नागरत्व है

बाप! परम नागर गिरनार की इस गिरनारी भूमि पर जहां दातार भी बिराजित है और दत्त भी बिराजित है। मैंने पहले भी कहा है वैसे तमाम साधना का ये स्थान है। आज भी जिनको आंखों से या आंतर्चक्षु से अनुभव हुआ है, ऐसे लोग ऐसा कहते सुने जाते हैं कि अभी भी चिरंजीवी अश्वत्थामा इसमें घूमता है; अर्थात् कितनी ही चिरंजीवी चेतनाओं का यह मनपसंद स्थान हैं। जोगी-जोगनियों का ये स्थान है; पूनम और अमावस दोनों का ये स्थान हैं; यज्ञ और धूनी दोनों का ये स्थान हैं। ऐसी परम वैष्णव मेहताजी की इस पावन भूमि पर नवदिवसीय रामकथा 'मानस-नागर' आज छठे दिन में प्रवेश कर रही है तब रोज़ जो पूज्यचरणों की आशीर्वादक उपस्थिति रही है इस कथा में उन सभी पूज्यचरणों में मेरा प्रणाम। समाज के विविध क्षेत्रों के आदरणीय महानुभावों, विद्या के उपासकों अपनी-अपनी विद्या लेकर साधना रत सभी विशेष गुणीजनों, निमित्त मात्र यजमान परिवार और सभी भाईओं-बहनों, आप सबको व्यासपीठ से मेरा प्रणाम।

शीलवंत संचालन के तहत सुन्दर, सात्त्विक उपक्रम चल रहा है उसमें भाई प्रहर ने मेहताजी का प्रसिद्ध पद गान, मेहता के प्रिय राग में किया। इधर डोलर काका, इस तरफ़ सुमन दादा, दोनों का थोड़ा परिचित होने के कारण कहूंगा, पूरी जो परंपरा है वो शिक्षित भी है; ऐसी परंपरा की पुत्री रूपल ने अपने अध्ययन और अनुभव का वर्णन किया। सभी कितना सुन्दर बोलते हैं! मेरी प्रतीति यह है कि ये समग्र कथा नरसिंह मेहता के मनोरथ से हुई है। इसमें कहीं न कहीं मेहता का मनोरथ है कि पंद्रहवीं सदी के बाद कोई मुझे इक्कीसवीं सदी में गायें। ऐसा मैं मानता हूं; मेरे अपने जो अनुभव है वो ये है। गिरनार में बहुत-सी अंतःकरणीय प्रवृत्तियां हमें मदद करती हैं।

एक प्रश्न है कि 'बापू, आपको जूनागढ़ इतना अधिक क्यों पसंद है?' पसंद है मतलब पसंद है। परन्तु पुनः एक बार कहूंगा, मेरा गांव तलगाजरडा है, मेरा नगर जूनागढ़ है। बहुत स्पष्ट निवेदन है। मेरा राज्य गुजरात है; सौराष्ट्र है; मेरा देश भारत है; मेरी माँ पृथ्वी है और मेरा परिवार विश्व है। इसे आप याद रखिएगा। ये मेरा आत्मनिवेदन है। मेरा गांव तलगाजरडा है, उसमें मैं फेरफार नहीं करूंगा, इसलिए 'मारुं वनरावन छे रूडुं, वैकुंठ नहीं रे आवुं।' ऐसा जो गान हुआ है उसके बदले मैं व्यक्तिगत तौर पर ऐसा कहूंगा कि 'मारुं तलगाजरडुं वहालुं, हुं वृंदावन पण नहीं रे आवुं।' जिसको तलगाजरडा में हरि नहीं दिखेगा उसको कहीं नहीं दिखेगा। जिसको खुद है वहां अनुभूति नहीं होती उसको हर जगह मिथ्या भागदौड़ करती पड़ती है। इसलिए गांव मेरा तलगाजरडा और नगर जूनागढ़ है। अनेक कारण होंगे। कोई जनम-जनम की यात्रा का कारण हो सकता है, हम समझ नहीं सकते हो। और न समझें ये ओर अच्छा है। मैंने कहा वो परिचय याद रखना। गांव तलगाजरडा, नगर जूनागढ़, राज्य गुजरात, उसमें भी धड़कता हुआ काठियावाड! देश मेरी भारत माता और पूरी पृथ्वी मेरी माता और पूरा विश्व वो 'वसुधैव कुटुम्बकम्।'

जूनागढ़ में पान है, पाट है, पाटला है, पीताम्बर है। नागर समाज में पांच 'प' की बात आई है। पाट अर्थात् झूला। भोजन करते समय बैठने का पाटला। पान, पीतांबर और मुझे भी पसंद नहीं वो शब्द है 'पंचात'; किन्तु होती होगी तो ही कहा गया होगा न! मूलतः तो 'पंचायत' शब्द होगा, उसमें से 'पंचात' आया होगा। ग्राम पंचायत और ये सब

आखिरकार पंचात ही है न! पर मुझे कोई कहे कि नागरत्व क्या है? नागर की विचारधारा की पांच वस्तु कौन-सी? जिसमें पांच 'क' है वो नागरत्व। संस्कृत में 'कं सुखम्' ये सूत्र है। 'क'कार है वो सुख का परिचय है। जहां-जहां 'क' अक्षर आता है वो सुख का संकेत है। ये नरसिंह मेहता इतना सुखी क्यों है? क्यों किसी की परवाह किए बिना कह सकता है कि-

एवा रे अमे एवा, तमे कहो छो वळी तेवा रे।

राम नागर है। राम में से नागरत्व सीखना हो तो रामत्व केवटत्व तक पहुंचे और केवटत्व रामत्व तक पहुंचे ये परिपूर्ण नागरी व्यवस्था है। इसका प्रमाण देखिए 'रामायण' में। भगवान राम नंगे पैर केवट के पास आएं और उसकी नौका में बैठे यह राम का केवटत्व के प्रति प्रयाण है। अयोध्या नगर है, उसके युवराज है वो तो बाझी बिगड़ गई एक रात में फिर भी वनवासी बनें तब रामत्व का केवटत्व तक पैदल चलकर आना और उसकी टूटी-फूटी नौका में आभारवश होकर बैठना ये नागरत्व का केवटत्व की तरफ़ प्रयाण है और चौदह वर्ष बाद आदर के साथ केवट को अपने विमान में बैठाना वो है केवटत्व का रामत्व की तरफ़ का उड्डयन। ये दोनों इकठ्ठे हो उसको नागरत्व की प्राप्ति हो। केवट ने राम को जलविहार कराया और राम ने केवट को गगन-विहार कराया। ये जो मिलन है वो है नागरत्व। इसलिए ज्ञाति का गौरव रखते हुए विशाल बनें। ये कोई संकीर्ण रामकथा थोड़ी ही है? परन्तु मूल का ध्यान रखकर मुझको और आपको विकसित होना है।

ये मेहता क्यों इतना सुखी दिखता है? 'भलु थयुं भांगी जंजाळ।' उसने भी बोला है; मैंने भी उसका स्पर्श किया। किन्तु किसी भी परिस्थिति को अंदर उतरकर सुख का ही अनुभव करना चाहिए। उसका एक वचन है कि जो होना है, होगा, चलो भजन करें। 'सुखे भजीशुं श्रीगोपाल।' बिलकुल अभाव में जीनेवाला ये मानव क्यों सुखी दिखता है? कभी-कभी तो घर में कुछ नहीं होता! दामोदर की सेवा में भोग लगाने के लिए मिसरी न होती, तुलसी की पत्ती ही रहती! फिर भी उसकी हूंडी द्वारकावाला स्वीकार करता है! ये नागरत्व है। इसका भरोसा कितना होगा कि मेरी महाजनी पीढ़ी है; वहां जाओ; हूंडी लिख देता हूं। भरोसा तो देखिए! यात्रि जाते हैं और गोमती के किनारे महाजनी पीढ़ी को खोजते हैं कहां है? सब ने कहा कि इस गांव में ऐसी कोई पीढ़ी ही नहीं है! तुम्हें किसी ने भूलवाकर भ्रमित कर दिया है! अंत में निराश हुए। एक क्षण है; उस समय जूनागढ़ में संकेत हुआ और मेहताजी का उस समय गाया गया ये पद है। अंतर्नाद कागज़ में लिखा होगा और कलेजे में ऊगा होगा। फिर हमें भरोसा का यह पद मिला-

मारी हूंडी स्वीकारो महाराज रे, शामळा गिरिधारी।
मारे एक तमारो आधार रे, शामळा गिरिधारी।

अंदर से निराधारपना की अवस्था जिसको प्राप्त होती है उसको जगत में जगदाधार मिलते हैं। अंदर से निराधारता यह अवस्था का नाम है। बुद्ध के शब्द में कहूं तो वो शून्य है और जगदाधार पूर्ण है। हमें तो मुश्किल पड़ेगी तो पत्नी मदद करेगी, पति मदद करेगा, भाई मदद करेगा, शाहुकार मदद करेगा! परन्तु जब सब आधार छूट जाएं; उपेक्षावृत्ति से नहीं, क्रोध से नहीं, घृणा से नहीं, पर अवस्था अंदर से बैचेन करे कि अब कोई आधार नहीं है! आप जगह खाली करोगे तब वो आयेगा न! मुझको और आपको सब तरह से खाली होना पड़ेगा; तब वो आयेगा। हमारे मिलिन्द गढ़वी तो कहते हैं-

मौननी आंखमां जे पाणी छे।
मारे मन ए ज संतवाणी छे।

जो रोता है कृष्ण को याद करके और किसी को पता नहीं चलने देता। जैसे व्रज की गोपी, 'निशदिन बरसत नैन हमारे।'

मेरे प्रारब्ध के कारण, कर्म के कारण या मेरे साथ जुड़े परिवारजनों के प्रारब्ध के कारण; जो हो सो परन्तु जगदाधार, तूने धीमे-धीमे वो सभी आधार छीन लिए हैं। नरसिंह कहते हैं, मेरे ममता का आधार शामळ था; वो चला गया, औरत चली गई; एक के बाद एक आधार चले गये हैं इसलिए बिलकुल खाली पट है। हे नटनागर! खेलने आ अब। इसमें कोई नाटक नहीं है अब; कोई मुखौटा नहीं है अब, तेरे लिए पूरा महोल्ला खाली है।

ब्राह्मणों तो पूजा कर रहे थे द्वारिकाधीश की। और गोमती के किनारे आये हैं रूप धारण करके कि मुझको मेरा शेठ निकाल देगा! महाजनी पीढ़ी में नौकरी नहीं करने देगा! तुम यात्रियों को खोजना पड़ा! जिसके नाम से हूंडी लिखी गई है वो मैं ही हूं। और वो सब गिनकर दे देता है। नरसिंह कितना सुखी आदमी है! जिसके घर हरि चाकरी करे उसके जैसा कौन-सा सुख है? 'कं सुखम्?' 'नामवाले को बाधा नहीं।' और हकीकत है, नामवालें को बाधा नहीं है। नरसैया तो गज़ब है।

सुख-दुःख है ये कर्म का लेख ललाट में लिखा जाता है। ये नरसिंह कहते हैं, सुख-दुःख ललाट में नहीं

लिखा; हाथ में भी नहीं लिखा, 'घट साथे रे घडिया।' जिस दिन तेरा घट गढ़ा गया उस दिन हरि ने अपनी इच्छा के कारण तेरे संग रास खेलने के लिए, सुख-दुःख भी बना दिया। ललाट की और हाथ की रेखा की चिंता ही छोड़ दीजिए। नरसिंह मेहता कहते हैं, घट के साथ गढ़ा गया। ये गहना तुझे वहां से पहनाकर भेजा है। जैसे नाल जुड़ी हुई है, उसी तरह सुख-दुःख अपने घट के साथ जुड़े हुए हैं, इसका क्या अफ़सोस करना? ऐसा जो विचार करता होगा वो कितना सुखी होगा!

तो पान, पाटला पीताम्बर, पाट, पंचायत ये पांच है न? परन्तु नागरी समाज में ये पांच लक्षण है अवश्य, पर जिसने नागरत्व को प्राप्त कर लिया, उसके पांच लक्षण अलग है। नागरी जाति का गौरव, पूरे जगत का परम गौरव अपना मेहता, नागरत्व पाया पांच प्रकार के 'क' से। पहला 'क' करतार। करताल चाहे जितनी हो पर करतार पर श्रद्धा नहीं होगी तो करताल कोई काम नहीं करती। कृष्ण होना चाहिए मूल में। ये कृष्ण का 'क' है।

ये पांच 'क' मुझमें और आपमें होंगे; सामान्य से सामान्य केवट में होंगे या अंततः भगवान में राम में होंगे; जिसमें आयेंगे; हममें आएगा तो हम नागरत्व पायेंगे। सवाल 'त्व' का है। पांच 'क' में पहला 'क' है कृष्ण। कृष्ण जैसा सुख अन्य कहां है? वो रुलाये वो भी महासुख है; वो हमें हंसा दे, वो परम सुख है। कृष्ण हमारे साथ खेलता था; कभी हमारे चित्त के साथ, कभी बुद्धि के साथ, कभी मन के साथ खेलता था। दूसरा 'क' करताल।

तळेटी जतां एवुं लाग्या करे छे।
हजी क्यांक करताल वाग्या करे छे।
- मनोज खंडेरिया

'करताल' ये नरसैया के-नागरत्व का दूसरा सुख है। करताल हो, कृष्ण में भरोसा हो वो फिर गाये बिना नहीं रह सकता। तीसरा 'क' है केदार। मैं भी करताल रखता हूं। बीच-बीच में नहीं लेता था? नरसिंह मेहता सबसे दूर गये अथवा तो समाज ने उन्हें बाहर किया, पर नरसिंह को अपने कुल का गौरव था। ये कुल का 'क' ये चौथा 'क' है और सुख का एक निशान है, कुल नहीं भूलना चाहिए। इससे हम छोटे ग्रूप में न बंटे परन्तु कुल का गौरव तो होना चाहिए न! ब्राह्मण को ब्राह्मण कुल का गौरव नहीं होगा? वाल्मीकि को, केवट को उसके खुद अपने का गौरव नहीं होगा? कुल का 'क' ये सुख का एक 'क' है। इसलिए तो उसने लिखा-

भणे नरसैयो एनां दर्शन करतां कुळ एकोतेर तार्यां रे।

'कुल' ज्ञातिवाचक नहीं है, जातिवाचक नहीं है परंतु सार्वभौम शब्द है। रघुकुल, यदुकुल। शुकदेव जैसे अवधूत को भी उस कुल का गान करने की इच्छा होती है उसको 'कुल' कहते हैं। जिसने सबसे असंगता प्राप्त की हो उसे बात करने की इच्छा हो उसमें कुलवान की बातें होंगी। कुल का गौरव है नरसिंह को, वो उसका सुख है।

भले ही हमारे पास कुछ नहीं था; कुछ नहीं है रामनाम के सिवाय, फिर भी आनंद करते हैं। हमें कोई कहेगा कि साधुकुल में या मार्गीकुल में जन्मे हैं? तो उसका मुझे गौरव होगा; उसका मुझे बहुत आनंद है। हम वैष्णव साधु हैं, पर अपने आपको मैं बावा ही कहता हूं। और अपने समाज को भी कहता हूं कि बावा कहे तो बुरा मत मानना। होशियार-होशियार आदमी ऐसा कहते हैं कि मोरारि बापू तो मार्गी है न? एक हजार बार मार्गी। होकर तो देख! बंदों एक हजार आठ बार मार्गी। ऐसी हिंमत आयेगी तो 'बंदा' का हो जाएगा 'बंदऊँ', फिर हमें कोई कहेगा कि-

बंदउँ गुरु पद पदुम परागा।

'बंदा' में से 'बंदऊँ' बनने के लिए भरोसा चाहिए। हमें आनंद है यार! मैंने ही सबको आदत डाल दी है। मार्गी और बावा और बावुं! कई लोग दो तरह से बोलते हैं। प्रसन्न होते हैं और मन में जो सुझा है वो भी बोलते है! पूरा हरा पर कंठ काला! कफ़ भरा होता है कंठ में; ईर्ष्या का और द्वेष का कफ़।

युवानों, किसी भी क्षेत्र में से आपके बुज़ुर्ग नहीं जान सके हो, किसी ने कुछ कहा हो और मान लिया हो और निर्दोष पर दोषारोपण करें उस दिन चुप रहना, इसमें अपने कुल का परिचय होता है। इसमें सबको जवाब देने थोड़े जाना है! हम जवाब देने के लिए नहीं पर जागृत होने के लिए जन्में हैं। बुद्धपुरुष किसी दिन किसी को जवाब नहीं देता है; जागृत करता है उसका नाम बुद्धपुरुष। तर्कशील और होशियार आदमी आपको तुरंत जवाब दे देता है।

कुल की महिमा होती है; इसमें संकीर्ण न बनें। ज्ञाति, जाति, वर्ण से बाहर ही रहना है और नरसिंह मेहता ने हमको सीखा दिया है, फिर भी अपना जो है उसमें ध्यान रखना चाहिए। हम दूसरे के घर में आग न लगायें पर अपना जैसा भी घर है, मिट्टी का पोछा हुआ उसमें भी दिवाली का दीया तो प्रगटित करें न! वो अपना कुल है; हमें उसका आनंद है।

पांचवां 'क' था अपने भीतर निरंतर बहती करुणा का 'क।' बिना करुणा वह हरिजन समाज में कीर्तन करने गया होगा? करुणा प्रस्फुटित हुई होगी। भले ही पांच सौ साल बाद वह चित्र याद करे कि एक समाज वहां हाथ जोड़कर खड़ा हुआ होगा और ब्राह्मणश्रेष्ठ नागर को कहा होगा कि मेहताजी, आप हमारे घर कीर्तन करने न आयें? वे लोग कहते हैं कि हम निम्न वर्ण के लोग हैं! और वो ही शब्द अपने लिए लेता यह नागर। तो पांचवां 'क' था करुणा का 'क।'

पांच सौ वर्ष पहले किसी ने क्रांति तो की! इस क्रांति को दंडवत्। पचास वर्ष पहले हम देखते थे कि एक समाज निकलता था तो लोग उस रास्ते से चलते न थे! अथवा उन लोगों को बबूल के झंखाड़ पीछे बांधना पड़ता था कि उसका पदचिह्न मिट जाएं। गुजरात में तो बहुत अच्छा है! गांधी बापू ने आकर अद्‌भुत काम किया। परन्तु मैं पूरे देश में घूमता हूं। कुछ प्रांतों में तो बहुत ही मुश्किल है। अभी भी कुछ प्रांत में कुछ समाज का दुल्हा घोड़े पर चढ़कर बाज़ार से नहीं निकल सकता! उसको घूमकर जाना पड़ता है! अधिकार नहीं है उन्हें गांव में से निकलने का! मानवजाति का अपमान कब तक सभ्यता के नाम पर हम करेंगे? इससे बाहर निकलना ही पड़ेगा।

शृंगबेरपुर के बगल के गांव में मुझको इच्छा हुई कि भीक्षा लेने जाना है और मैं गया। गांव के सिवान में छोटा-सा घर। एक औरत, दो बच्चें और उसका आदमी। मैंने अपना परिचय दिया कि मैं मोरारि बापू। तो बोले, हमें मालूम है। हम स्वीकृति लेकर बैठ गए। मैंने धीरे से कहा कि मैं गंगाजल दूं, आप मुझे रोटी बनाकर दे देंगे? तो पूरा घर रोने लगा कि बापू, आप हमारे घर की रोटी खायेंगे? गांव के मुखिया को पता चला लेकिन मुझको तो नहीं कह सकता था, पर उस घर के बाहर खड़ा रहा कि बापू दूसरे दिन ऐसा न करें; इसके लिए अच्छे शब्दों में सीख देने के लिए खड़ा रहा। हम वहीं बैठे थे। वो बिटियां कठवत में गंगाजल डालकर रोटी बना रही था। मैंने फिर दूसरा मनोरथ किया कि ये खटिया टूटी हुई है उसे वहां रखकर तुम्हारी धर्मपत्नी रोटी बना रही है वहां बैठ सकता हूं? मैं वहीं खटिया पर बैठा। मैंने देखा कि वो बिटिया कठवत में रोटी बना रही थी और आंसू बह रहे थे उसके! गंगाजल को भी पवित्र कर डाले ऐसा तत्त्व आंसू में है। फिर रोटी और चटनी वहीं बैठकर खाया। साथ में गंगाजल लिया और मरचा लिया।

हम बाहर निकलें वहां मुखिया था; कथा के आयोजकों में से एक था। मुझको बोला, बापू, आपको तो कह नहीं सकते पर आपको पता है कि ये किसका घर है? मैंने कहा, घर पूछकर भीक्षा थोड़ी मांगते हैं? भीक्षा का ये मूल मंत्र है, आप घर पूछकर भीक्षा नहीं मांग सकते। आप पहले चिठ्ठी लिखेंगे कि भीक्षा में 'आलूवडा' दीजिएगा! उसको को शादी कर लेनी चाहिए! बहुत-से तो ऐसा लिखते हैं कि पार्कर पेन देना! ये सब मेरे सामने के उदाहरण हैं। इसलिए मैंने मुखिया से कहा कि भीक्षा घर पूछकर नहीं होती। राम गये थे। नरसिंह मेहता गये थे। मुझको लगता है कि मुझे जाना चाहिए, इसलिए मैं आया। तो बोला, बापू, ये दलित का घर है। मैंने कहा, अग्नि पवित्र है? गंगाजल पवित्र है? और करुणापूर्ण आंखों से वो बिटियां रो रही थी उसका आंसू पवित्र है? बाजरा पवित्र है? वो बोला, ये सब पवित्र है। मैंने कहा, 'अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्।' चार-पांच पवित्रता इकठ्ठी हुई हो वहां कौन अछूत रह सकता है? इसलिए हमारे यहां कहा गया, 'ज्यां टुकडो त्यां हरि ढूकडो।' गिरनार के अगल-बगल में जो छोटे-बड़े स्थानक मौजूद है, वहां अन्नक्षेत्र की बोलबाला रहती है। मुझे संसारियों से भी कहना है कि 'टुकडो त्यां हरि ढूकडो।' ये तो ठीक परन्तु जिसको हरि ढूकडा होगा वो ही टुकडा दे सकेगा, नहीं तो ऐसे रसोई घर खड़े नहीं होते! ये बहुत कठिन है।

बाप! मेहता की करुणा कैसी होगी कि वहां गया। कथा सुननेवालों को मेरी प्रार्थना है कि कोई भिक्षा या कुछ भी नहीं चाहिए। आप मुझे दे भी क्या सकते हैं? क्योंकि मेरा हाथ बहुत बड़ा है। जितना दोगे वो इसमें समायेगा नहीं। इतना ज़रूर कि मेरी कथा सुननेवाला भी अंतिम आदमी तक पहुंचे; उसे प्रेम करे और वो पूछे कि किस लिए? तब कहना कि हमें बापू ने कहा है। यह केवल धार्मिक शिबिर नहीं है, यह एक प्रेम शिबिर है। हमको इसमें आगे बढ़ना है। और ये हो रहा है।

आज ही एक भाई ने लिखा है कि बापू, मैं पैंतीस वर्ष का युवान हूं। कथा में आता हूं तो मेरे घर के लोग ही कहते हैं कि ये कथा सुनने की उम्र है? ओफ़िस में छुट्टी मांगता हूं तो कहते हैं कि ये कथा सुनने की उम्र है? बार-बार छुट्टी मांगते हो! बेटा, बार-बार छुट्टी मत मांग। अपनी ड्यूटी करो। तुमको मुझ पर इतनी श्रद्धा है न, तो तेरा मोरारि बापू बदनाम न हो इसका ध्यान रख। दायित्व निभावो और वर्ष में एक बार कथा में आओ। हो सके तो

वेकेशन में या छुट्टी में आओ। तुम्हारा शरीर यहां पर रहे उसकी अपेक्षा तेरी आत्मा यहां तक पहुंच जाएं ये बड़ी वस्तु है। परन्तु तुम्हें मना करे उसको अवश्य कहना कि कथा इस उम्र में ही सुनी जाती है, पर आपने ये खो दिया है! इतना विवेक के साथ कहना। आपने इस उम्र में सुना होता तो ऐसे मुद्दे खड़े ही नहीं करते! घर पर मेहमान आये और कहेगा कि उसका उपवास है तो हम उसे खराब हुए फल नहीं देते परन्तु उसके उपवास के सन्मान में ताजा फल देते हो तो हरि को जब अर्पण करना होता है तब जवानी ही अर्पण करते हैं। रुग्ण शरीर नहीं दिया जाता। जवानी में ही कथा सुनना चाहिए। आप सुन ही नहीं सकोगे तब क्या कथा सुनोगे? तो जवानी में कथा सुन लेनी चाहिए परन्तु अपना फ़र्ज़ छोड़कर नहीं। वर्ष में एक बार सुनिए। सभी कथा में आना ज़रूरी नहीं है। एक कथा सुनिए; एक दिन सुनिए; एक घंटा सुनिए; एक मिनट सुनिए। परन्तु अंतःकरण के चार भाग है उसमें से अहंकारवाला भाग छोड़कर मन, बुद्धि, चित्त से सुनिए। दीपक प्रगटित हो उठेगा। अवसर हो तब सुनिए। बुज़ुर्ग बहुत कहे तब चुप रहना चाहिए।

तो बाप! हमारे हरीशभाई बडौदावाले ने लिखकर भेजा है कि 'मानस' में 'नागर' शब्द तेरह बार आया है। भूलचूक माफ़ कीजिएगा। आठ बार राम-लक्ष्मण के लिए प्रयुक्त हुआ है; दो बार नटकला के लिए ये शब्द है; एक बार नल-नील की शिल्पकला पर 'नागर' शब्द है; एक बार नगरजनों के लिए; एक बार अंगद के लिए अर्थात् चतुर नर के लिए 'नागर' शब्द है। शिव और जनक 'क्वचिदन्यतोऽपि' है, वो भी नागर की गिनती में मैंने लिया है। प्रमाण के साथ। उन्होंने जो पंक्तियां भेजी हैं उनमें जहां-जहां भगवान राम को नागर कहा है वहां हमेशां सागर के साथ ही जोड़ा है।

गुन सागर नागर बर बीरा।
सुंदर स्यामल गौर सरीरा।।
बिनय सील करुना गुन सागर।
जयति बचन रचना अति नागर।।
बोले बचनु राम नय नागर।
सील सनेह सरल सुख सागर।।
धरम धुरीन धीर नय नागर।
सत्य सनेह सील सुख सागर।।
अति नागर भव सागर सेतु।
त्रातु सदा दिनकर कुल केतु।।
गुन सागर नागर नर जोऊ।
अलप लोभ भल कहई न कोऊ।।
सक सर एक सोषि सत सागर।
तव भ्रातहि पूछेऊ नय नागर।।
भव बारन दाख सिंह प्रभो।
गुन सागर नागर नाथ बिभो।।
जय निर्गुन जय जय गुन सागर।
सुख मंदिर सुंदर अति नागर।।

राम के लिए सात बार 'सागर' और 'नागर' शब्द है। राम के नागरत्व को निर्दिष्ट करने के लिए सात बार 'सागर' शब्द आया है तो अपने यहां सात सागर है। ये सब शास्त्रीय बातें हैं। इसमें हमने सागर का अनुभव किया ये तो है ही; परन्तु वो तो खारा सागर है। किन्तु एक क्षीरसिंधु, दूधसागर का सागर है; एक मध का सागर है; गन्ने के रस का सागर है; दहीं का भी एक सागर है। ऐसे सप्तसिंधु है।

राम नागर है क्योंकि उनके साथ 'सागर' शब्द जुड़ा हुआ है। उस सागर के सात लक्षण है। एक दिन तो मैंने ऊपरी तौर से कह दिया था कि गहराई है, रत्न है। सुबह यज्ञकुंड के पास बैठा था। मुझको अग्नि बहुत सिखाती है। अकेले बैठता हूं तब अग्नि बहुत कुछ कहने लगती है; अर्थात् निर्मल विचार देती है। 'मानस' तो कहेगा ही। गुरु तो सबके मूल में है ही परन्तु अग्नि भी कहती है। अग्नि यानी मेरा हनुमान। सप्तसागर जो रामसागर के साथ जुड़े हैं वो सात अन्य लक्षण राम में है।

तुलसी बार-बार राम के नागरत्व को सागर के साथ तुलना करते हैं तब सात सागर है इसलिए पहचान देते हैं। अनेक जीवजंतु का आश्रय स्थान, उसका नाम सागर। योजनों जितना विशालकाय जलचर भी उसमें निवास करते हैं। अनेक छोटे-छोटे जीवजंतु का आश्रय स्थान है सागर। भगवान राम के नागरत्व को सागर कहा, इसके लिए कि राम भी जड़-चेतन, अनंत जीवों का आश्रय स्थान है। उसके पास शबरी भी जा सकती है; केवट भी जा सकता है; पत्थर भी जा सकता है; अहल्या, असुर, गणिका, बंदर, सुन्दर भी उसे पा सकते हैं। तमाम जीवजंतु का आश्रय स्थान है वो राम। उसका नाम सबका आश्रय स्थान है। जो प्रत्येक धारा का समावेश करता है उसका नाम सागर। अपने नागरत्व का आनंद लेगा, परंतु जीवन की कोई भी सद्धारा आती है, प्रवाही परंपरा आती है उन सभी को अपने में स्वीकार करता है ये नागरत्व है। जैसे महासिंधु में सभी नदियों की धाराएं समा जाती है, उसी तरह राम एक

ऐसा नागर है कि उसमें सभी समा जाते हैं। राम केवल हिन्दु के है? इसका हमें अवश्य गौरव होगा पर केवल हिन्दु का राम कहोगे तो राम को आपने छोटा नहीं बना दिया? कोई उसे न माने तो कुछ नहीं। सूरज को कितने लोग रोज़ जल चढ़ाते हैं? फिर भी वो आपको प्रकाश देता है। ऐसी विशाल विचारधारा को कोई न माने तो कुछ नहीं पर उसे हमारे बीच ही रहना पड़ता हैं। ये नागरत्व है, जिसमें सभी धाराएं निवास करती हैं। ऐसे बहुत-से बुद्धपुरुष मिले हैं जिसमें आपको सब कुछ दिखता है।

तीसरा लक्षण ये हैं कि सागर में भरपूर खारा पानी भरा हुआ है, पर दुनिया को देता है तब खूब तपकर भी नीचे पड़े रहने की अपेक्षा रूपांतरित करके बादल बनता है और बादल बनने के बाद मीठा जल देता है और भरपूर फ़सल पकाता है; ये सागरपना है। जो बिलकुल तपता है, बादल बनता है और रामधन बनता है, ये नागरपना है। आप अपने आपको जितना महान मानते हैं, उतना आपको तपना चाहिए। आपको लगे कि ये मुझसे सहन नहीं होगा तो महान बनना छोड़ दें। आपको सहन करना ही पड़ेगा। आप भाग नहीं सकते। तमाम धाराओं को समाना ही चाहिए। इसलिए राजेन्द्र बापू के शब्द प्रिय है-

निषेध कोईनो नहीं, विदाय कोईने नहीं।
हुं शुद्ध आवकार छुं, हुं सर्वनो समास छुं।

तप यानी चारों तरफ़ कंड़ा रखकर बैठ जाना ये तप अभी प्रासंगिक नहीं है। जो करते हैं उनको पैर लगता हूं। सहन करता हो और स्मित देता हो उसका नाम तपस्वी है। नहीं तो तपस्वियों को हमने शाप देते ही देखा है! क्योंकि तप उसकी गरमी है। हज़म नहीं होती। स्मित को छीन ले वो तप नहीं है। वो प्रपंच कहलाता है। तपस्वी तो मुस्कुराता हुआ होना चाहिए। बड़े से बड़ा तप पंचधुनी तापना नहीं है। आप सच्चे हो फिर भी हँसते-हँसते सहन कीजिए उसके जैसा तप जगत में कोई नहीं है। आपको अस्तित्व साक्षी भरता हो कि आप सही है और फिर भी आप मुस्कुराते हुए सहन करते हैं वो तप है। समुद्र कैसे तपता है कि बाष्प निकलती है परन्तु वो बाष्प अधमता की ओर नहीं जाती, ऊर्ध्वगमन करती है और अपना रंग बदलती है, बादल जमते हैं और पूरी सृष्टि पर बरसते हैं। ये सागर लक्षण मेरे राम नागर के है। राम मेघ है, मेघवर्ण है। बरसना हो तो सामान्य स्तर से ऊपर उठना ही पड़ता है। एक प्यासे को पानी पिलाना हो तो आपका लोटा उपर ही होना चाहिए। अनिवार्यतः आपको ऊंचाई पकड़नी ही पड़ेगी। इसलिए बादल ये राम का नागरत्व है।

चौथा लक्षण, जिसके अंदर लक्ष्मीनारायण निवास करें वो है रामत्व। लक्ष्मी-नारायण का मूल निवास तो वैकुंठ हैं। उसके लिए समस्त लोक दे दिया तो भी घरजमाई बनकर रहते हैं। सागर की पुत्री लक्ष्मी है। राम ने, विष्णु ने बताया है कि वैकुंठ महान है। हमने तो देखा भी नहीं है और देखना भी नहीं है। वैकुंठ कितना बड़ा होगा? हिन्दुस्तान जितना चलो। हां, उतना तो नहीं ही होगा शायद। अभी कथा के मंडप का माप है उतना भी वैकुंठ नहीं है। अभी वैकुंठ यहां निर्मित है साहब!

विश्राम के लिए जिसकी विशालता के सिवा कुछ भी खपता नहीं है, उसका नाम सागरशयन है। और योगनिद्रा करनी है और वो संकीर्णता में नहीं हो सकती। विशालता ही विश्राम दे सकती है; संकीर्णता विश्राम दे ही नहीं सकती। सच्ची योगनिद्रा वो कहलायेगी कि लक्ष्मीजी पैर दबाती हो और हम आराम करते हो। अच्छे खासे की नींद लक्ष्मीजी उड़ा देती है! ये है राम का नागरत्व। तरंगायित समुद्र था और शेषनाग की शय्या है, और उसके फ़ण विष्णु के मस्तक पर। चरण में लक्ष्मी हो, माथे पर काल की छाया हो और चारों तरफ़ तरंगे हो इसमें जो पौढ़ा रहे, उसका नाम रामत्व है। तो जिसका विश्राम करने का स्थान विशाल है। इसलिए राम का नागरत्व सागरत्व के साथ जोड़ा है।

पांचवां लक्षण है; जब प्रलय होता है तब केवल जलतत्त्व ही बचता है। हमारे शास्त्र भी कहते हैं कि कोई नहीं बचेगा। इस जगत में जलबंबाकार होगा। जो प्रलय में भी नाश न हो उसका नाम नागरत्व है। 'वेद' में तो परमात्मा राम को वरुण ही कहा है और 'वेद' की सीता वो खेती है। और कहते हैं, 'हे रामरूपी जल, आप बरसो और सीतारूपी खेती, आप ऐसा अन्न दीजिए कि हमारे खेत लहरा उठें।' तो अंत में जो बचता है वो राम। 'उत्तरकांड' की शुरूआत तुलसीदासजी दो शब्दों से करते हैं, 'रहा एक दिन अवधि कर अति आरत पुर लोग।' चौदह वर्ष पूरा होने में एक ही दिन है तो 'रहा एक' शब्द से शुरूआत है। और 'उत्तरकांड' जहां पूरा हुआ वहां लिखते हैं तुलसीदासजी-

कामिहि नारि पिआरि जिमि लोभिहि प्रिय जिमि दाम।
तिमि रघुनाथ निरंतर प्रिय लागहु मोहि राम।।

पहला शब्द 'रहा एक' और अंतिम शब्द 'राम'; तलगाजरडा इसका भाष्य ऐसा करता है कि पूरे शास्त्र में अंत

में 'रहा एक राम'; सब कुछ समाप्त, किन्तु जलतत्त्व रहता है। ये परमात्मा के नागरत्व का सागरपना जो लक्षण बताया है वो है।

छठा लिखा है, अपने आपका मंथन करने के लिए दूसरे को आमंत्रण दे उसका नाम नागर। सुरों-असुरों आओ, मुझको मथ डालो और मुझमें से जो निकलें वो जगत को बता दो कि समुद्र तो ऐसा है। ऐसा निखालसपना ये नागरत्व है। वरना समुद्र ऐसा नहीं कहता कि कहीं दूसरी जगह मंथन करो न, यहां क्यों आये हो? पर जो मानव अपने आपको सामने से मथवाने के लिए तैयार है, ये नागरत्व है। और फिर भी मर्यादा नहीं तोड़ता है।

सातवां लक्षण, किसी की पूर्णिमा देखकर जो गर्जना करता है उसका नाम नागर। चांद और समुद्र का क्या नाता? कुछ लेना-देना नहीं, परन्तु पूर्णिमा का चांद निकलता है और जो गर्जना करता है! ज्ञाति के रूप में भी आत्ममंथन करने की ज़रूरत है कि दूसरे की पूर्णिमा, पूर्णता, प्रगति देखकर जो आदमी गर्जना करता हो वो नागर है। राम को सागर के साथ जोड़ने का कारण राम का ये नागरत्व है। अपनी तकलीफ़ ये है कि दूसरे की पूर्णिमा को हम सहन नहीं कर सकते इसलिए हमने राहु खड़े किए हैं; हमने केतु खड़े किए हैं कि तुम इसे निगल लो; तुम सूर्य-चंद्र के बीच बैठ जाओ। जहां उजाला है वहां बीच में आकर बैठ जाओ वो राहुपना है। मंच पर भी मेरा क्रम कब आयेगा? मैं सिनियर हूं; ये राहुपना है। बड़े है तो छोटे कलाकार को दाद दीजिए। गुरुकृपा से और आपके आशीर्वाद से सावधान करने की कोशिश कर रहा हूं। छोटे-छोटे तैयार हो रहे हो उसमें दिल से प्रसन्न होना चाहिए, पर राहु हम सब खड़ा करते हैं।

एक जिज्ञासा है, जीवणदास बापू नागर। उनके पूर्वजों के विषय में जानकारी मिली हो तो बताने की कृपा करें। वो युवावस्था में या पहले से ही ध्यान स्वामी बापा के पास गये थे ये भी बताना। मैंने पहले कहा है कि जीवणदास मेहता नागर है। योगिनी बहन और योगीन्द्र भाई को मैंने भावनगर की कथा में पूछा था कि जीवणदास बापा को ध्यान स्वामी बापा ने दीक्षित होने का और गृहस्थ बनने का आदेश दिया उस परंपरा में हम हैं, तो उसके पहले की परंपरा का आपको ख्याल है? उन्हों ने कहा कि इतना पता है कि हमारे कुल में जीवणदास नागर थे। बाकी अधिक पता नहीं है और मुझे भी पता नहीं है और जानने की इच्छा भी नहीं।

आगे पूछा है कि आपको नरसिंह मेहता का कोई वंशज मिला है? मांगरोळ में मुझको उनके काका के यहां मिलना हुआ और मेहता के चौरे पर गया वहां एक बुज़ुर्ग मुरब्बी थे उन्होंने मुझसे कहा कि हम नरसिंह मेहता की अगली पीढ़ी में आते हैं। मैंने उनके पैर छूए। वर्तमान में नरसिंह मेहता पर बहुत संशोधन हो रहा है इसलिए उनका मूल इतिहास खोजे तो उसमें मिल जाएगा। पूछ रहे हैं कि आपका जूनागढ़ के साथ का आत्मीय संबंध कितने जन्म से हैं? हमें कहां कुछ पता है यार! अतीत अनुसंधान छोड़ने की अध्यात्म में आज्ञा है और भविष्य की बात छोड़ दें, वर्तमान में जीओ। मतलब मुझको पता नहीं कि किस जन्म से संबंध है। वर्तमान में आनंद आ रहा है। आगे पूछ रहा है, अमुक अमुक काल में उच्च कहलानेवाले समाज ने बहुत-सी भूलें की हैं, अपनी कुशलता और विचक्षणता का दुरुपयोग किया है, ऐसा आपको लगता है? यह जगत गुण-दोष से भरा हुआ है। प्रत्येक समाज में, मात्राभेद से कहीं अच्छाई तो कहीं बुराई अधिक हैं। बाकी ये सब प्रपंच हैं, जड़-चेतन और गुण-दोषमय है। इसलिए क्या हुआ है इसमें न पड़े और हरि भजन करें। इस सबमें समय तो लगेगा ही। ये देह से देह की यात्रा नहीं है। ये आत्मा तक की यात्रा है। इसलिए समय बताएगा। हम अपना प्रामाणिक प्रयत्न करें; फिर भी कुल का गौरव होना चाहिए।

राम नागर हैं। राम में से नागरत्व सीखना हो तो रामत्व केवटत्व तक पहुंचे और केवटत्व रामत्व तक पहुंचे ये परिपूर्ण नागरी व्यवस्था है। अयोध्या नगर है, उसके युवराज है; वो तो बाज़ी पलट गई एक रात में, फिर भी वनवासी बने तब रामत्व का केवटत्व तक पैदल आना और उसकी टूटी-फूटी नौका में आभारवश होकर बैठना वो नागरत्व का केवटत्व की तरफ़ प्रयाण है और चौदह वर्ष के बाद आदर के साथ केवट को अपने विमान में बैठाना ये है केवटत्व का रामत्व की ओर उड्डयन। ये दोनों इकट्ठे हो और नागरत्व की प्राप्ति हो। केवट ने राम को जलविहार कराया और राम ने केवट को गगन विहार कराया है। ये जो मिलन है वो है नागरत्व।

नागर कोख से जन्मता है परंतु नागरत्व जहां संगम होता है वहां जन्मता है

बाप! नव दिवसीय रामकथा के सातवें दिन भगवान दत्त को स्मरण करके, साथ ही साथ दातार का स्मरण भी स्वाभाविक है और जो इस साधनामय भूमि की समस्त चेतनाएं हैं उन्हें स्मरण करके केन्द्र में जो बैठे हैं नागर नरसिंह मेहता, उसकी परम वैष्णवी चेतना को प्रणाम करके, कथा में उपस्थित सभी पूज्यचरण, जिनकी आशीर्वादक उपस्थिति कायम रही है उन सभी संत-महंतगण, अपनी विधविध कला और विद्या के उपासकों, विद्वानों, गुणीजनों, नागरजनों, अपने समाज के विविध क्षेत्र के महानुभावों आप सभी मेरे श्रावक भाई-बहनों और सभी को इस नागरी व्यासपीठ से मोरारि बापू का प्रणाम। शीलवंत संचालन को नमन। पीयूषभाई ने सुंदर पदगान किया। बाप! साधुवाद। होशियार मनुष्य हमको बेच डाले उसका ही विरोध है, भोली भरवाडन बेच डाले उसका कोई विरोध नहीं है। नहीं तो हरि बिकते? परंतु भोलापन हरि को भी बेच डालता है। इसलिए मेहता कहते हैं-

भोळी रे भरवाडण हरिने वेचवाने चाली।

अपना मुद्दा ये है कि हमें होशियार बैचने निकले हैं! ऐसा भोलापन आयेगा उस दिन हरि, उसके हाथ से बिकने में आनंद और गौरव का अनुभव करेंगे। अधिकाधिक प्रसन्नता रोज़ होती जा रही है। रोज़रोज़ नई लहर आ रही है। फिर विद्वान नागरबच्चा जवाहरभाई, अनेक विद्याओं में पारंगत, उन्होंने नागरत्व का सत्त्व और तत्त्व इस विषय में प्रवचन दिया, जिसमें वेदों से लेकर सभी प्रमाणों के साथ बात चल रही थी और उसका अपना अनुभव भी था। उस सब में परम सत्य उन्होंने ये कहा कि पूजनीय महर्षि महेश योगी के साथ नौका में मोरारि बापू ने कथा की थी। और मैं न भूलता हूं तो जवाहरभाई, मैंने केवट प्रसंग कहा था, क्योंकि नौका का विहार था। महर्षि तो महर्षि, उनका आतिथ्य अद्‌भुत!

'मानस-नागर', एक विचार, एक नागरत्व की चर्चा हम कर रहे हैं। उसमें आज आपके साथ बात करनी है कि नागर जो ज्ञाति है उसका गौरव है, पर नागर जन्मता है किसी माँ की कोख से।

जनम हेतु सब कह पितु माता।

कोई भी व्यक्ति माता-पिता के द्वारा ही जन्मता है। तो व्यक्ति तो माँ की कोख से ही जन्मता है पर नागरत्व कहां जन्मता है? नागर विचारधारा का जन्मस्थान कहां है? ऋग्वेद का एक मंत्र है। मैं उसका संधि-विग्रह कर ले आया हूं। मुझे सबसे बुलवाना है। मैं पढ़ता था तब शिवशंकर बापा संधि अलग करके संस्कृत बुलवाते थे। तो मैं मंत्र ले आया हूं कि कौन कहां जन्मा और नागरत्व कहां जन्मा? राम को मूल में गिनो तो अग्नि में से प्रगट हुए। फिर-

जा दिन ते हरि गर्भहि आए।

फिर माँ के कोख से जन्मे। फिर कितनी बार रामत्व जन्मा? समझे बिना पाठ करेंगे तो भी 'मानस' 'मानस' है परंतु उसको गुरु के मुख से समझो। परमात्मा की कृपा और गुरु के आदेश से कथा का विषय पसंद करता हूं तब बहुत से लोग कहते हैं कि मोरारि बापू ये विषय कहां से ले आयें? 'रामायण' में कहां ऐसा लिखा है? आप 'रामायण' खोलकर एक परीक्षक वृत्ति से देख जाये फिर मुझे कहे कि ये विषय कहां है; तो अपनी भूल सुधार लूंगा। इसलिए मैंने गांव की माताओं से पूछा कि कथा में सुधार करने जैसा लगता है? ये प्रश्न मेरा विनोद नहीं था। मैं चाहता हूं कि आप मुझसे कहें कि बापू, इतना फेरफार कीजिए। वो अगर सत्य होगा; प्रेमपूर्ण होगा और आपकी करुणा से निकला होगा तो मेरी आत्मा कबूल करेगी।

मैं आपको सुधारने नहीं निकला, मुझे सुधरना है। आप सुधरें या न सुधरें वो मेरा मिशन नहीं है। सालों पहले पार्ले में कथा की थी; तब शोभायात्रा में जा रहा था और दो-तीन पत्रकार आये और पूछे कि कितनी कथा की है? मैंने कहा पता नहीं, तब ऐसे गिनते नहीं थे। तुरंत उस पत्रकार ने पूछा कि कितनों को सुधारा है? सालों पहले मेरा ये जवाब है कि मैं सुधारने निकला ही नहीं, मैं बिगड़ न जाऊं इसलिए निकला हूं।

तो मुझे आपसे कहना है कि 'मानस' को ठीक से देखें। इसमें सभी विषय मौजूद है। जैसे-तैसे कोई प्लंबरिंग नहीं कर रहा मैं कि सब कुछ लेकर जोड़ दूं! ये सब है इसलिए मैं बोल सकता हूं; नहीं तो मेरी क्या औकात? ये नागरपना इसमें पड़ा है इसलिए मैंने 'नागर' विषय लिया है। किन्नरपना इसमें पड़ा है इसलिए मैंने किन्नर-कथा की। सभी आये। कितने प्रसन्न हुए! कैलास पर किन्नरों का निवास हैं और महादेव विवाह करके आये तब किन्नरों ने गान किया। ये सब प्रमाण है। आप 'रामायण' देखें तो सही! अब मुझे गणिका कथा शुरू करनी है तो उसकी चर्चा भी कहीं-कहीं शुरू हुई है कि गणिका की कथा होती होगी? ये मोरारि बापू ने क्या शुरू किया है? पर इसमें ('मानस' में) गणिका है। समाज को नहीं दिखती वो समाज अपराध करता है। आंखें नहीं है ऐसा कहिए।

गनिका अजामिल ब्याध गीध गजादि खल तारे घना।।

अधम में अधम का लिस्ट तुलसी ने दिया है उसमें पहला नाम गणिका है। समाज में उसकी गणना होनी चाहिए। और मैं उसकी गणना करके ही बोलता हूं आपके आशीर्वाद से। नाहक की बांग नहीं लगाता! इन डेढ़ सौ सेक्स वर्कर्स बहनों को सूरत की कथा में बुलवाकर मिला हूं। मैंने आरती उतारने के लिए आमंत्रण दिया। फिर मैंने पूछा कि समाज में आकर आरती उतारो और आपको तकलीफ़ होती हो तो नहीं करें; मुझे ऐसा प्रयोग नहीं करना। तो कहे, ना बापू, हम आरती नहीं उतारेंगे। मैंने कहा, हमारे निवास पर तो आ सकते हैं न? तो बोले, आयेंगे। बाप के पास क्यों नहीं आयेंगे? सूरत में जिसके घर ठहरा था उनसे पूछा कि आपको बाधा तो नहीं है न, ये बहनें आयेंगी। आपको यदि ऐसा लगे कि अपने घर पर कहां से बापू ने बुलाया तो निवास बदल दूं! तो बोले, बापू, आप जो करो वो अच्छा है। बहनें मेरे निवास पर आयी। उनके साथ घण्टे-देढ़ घण्टे बैठा। मेरे राम यदि अहिल्या से मिलते हो, शबरी से मिलते हो तो मैं उनका गायक हूं। मैं अपने तक तो ऐसा कर ही सकता हूं न! वो भी आपके आशीर्वाद से।

ये भूमि तो दत्त की भूमि है। उसने तो चौबीस गुरुओं में गणिका को भी गुरु बनाया हैं। बुद्ध और गणिका का संवाद आपने सुना होगा। 'मानस' में है उतना तो मैं बोलूंगा ही। बाहर का नहीं बोलूंगा। दया आती है मुझे कि आप एक बार 'रामायण' को जिल्द तो देखें! मुझको अपनी जिम्मेदारी का कोई भान नहीं होगा? इतनी श्रद्धा को इस तरह से संभाल रहा हूं। यदि मुझे भान नहीं है तो इतनी श्रद्धा को कितना नुकसान होगा! इसलिए निर्भयता से कहता हूं। ये संतों का आशीर्वाद है; सभी क्षेत्रों के और आपका आशीर्वाद है।

तो बाप! भगवान राम मूलतः तो अग्नि में से जन्मते हैं। ब्रह्मरूप में किसी के यहां नहीं जनम सकते, वे अजन्मा है। फिर कौशल्या की कोख से जन्मे; एक लीला है। वही राम कितनी-कितनी जगहों पर नवचैतन्य प्राप्त करते हैं! मनुष्य को थोड़े-थोड़े समय पर नवीन तरीके से जन्मना चाहिए। ये द्विजत्व सात वर्ष पर जनेऊ पहना दे और पूरा हो गया ऐसा नहीं है। सात-सात के टुकड़े में द्विजत्व जन्मना चाहिए, मनुष्य को विकसित होना चाहिए। रोज़ नया विचार और नई प्रसन्नता लेकर जगत में उठें। ये जगत आनंद के लिए है।

भगवान राम केवट के पास जाते हैं, निषादों के पास जाते हैं वहां फिर नया जन्म तलगाजरडा को दिखता है। वही राम चित्रकूट में जाते हैं तो फिर राम का नया जन्म दिखता है। ये सब शास्त्र प्रमाण हैं। मानों ही नहीं उसमें तो सब पूरा हो गया! प्रत्येक प्रसंग में, प्रत्येक स्थान में मेरा राम मानो नूतन जन्म ले रहा होता है। ऐसे तीस प्रसंग मैं आपसे कह सकता हूं, पर वो विषय अलग है। इसलिए रामजन्म रामनवमी को ही होता है ऐसा मत मानना। महीने की तीस तिथियां, कृष्णपक्ष की पंद्रह और शुक्लपक्ष की पंद्रह उसमें से किसी भी तिथि को राम जन्म ले रहा होता है। हममें ऐसा राम जन्मे तब समझना चाहिए कि आज हमारी रामनवमी है।

समुद्र के किनारे जाते हैं तो नये राम लगते हैं। लंका के रणमैदान में राम नये लगते हैं। तो राम कौशल्या के कोख से जन्मे एक मानव के रूप में, अपने गुरु की कृपा से जितने 'रामायण' का अवलोकन किया है और उनकी कृपा से जो मैं समझ पाया हूं उसमें वाल्मीकि के राम मानव ही है। पर व्यास के राम केवल मानव नहीं है पर महामानव है। 'रामचरितमानस' के राम दिव्य ऐश्वर्ययुक्त मानव है। जहां-जहां राम की नरलीला में जीवस्वभाव की बात आई है, तुरंत दूसरी चौपाई में उसे दिव्य मानव के रूप में स्थापन करने की सावधानीपूर्वक का क्रम तुलसी ने संभाला है। भगवान शंकर के राम तो परम मानव है। अभी ही कहा गया, 'एकम् सद् विप्रा बहुधा वदन्ति।' राम रोज़ नये हैं। रामकथा रोज़ नई है। तो मुझे आपके साथ बात ये करनी है

कि राम तो कौशल्या के यहां अयोध्या में जन्म लिये; रामनवमी को मध्याह्न में जन्मे परंतु रामत्व कहां जन्मेगा? तलाश ये होनी चाहिए। नागर नागर कोख से जन्मता है; कोई भी ज्ञाति का आदमी अपनी माता के कोख से जन्मता है पर नागरत्व का प्रश्न है कि नागरत्व कहां जन्मता है? तो मैं ये मंत्र ले आया हूं-

ब्राह्मणोऽस्य मुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः
ऊरू तदस्य यद्वैश्यः पद्भ्यां शूद्रो अजायत
चन्द्रमा मनसो जातश्चक्षोः सूर्यो अजायत
मुखादिन्द्रश्चाग्निश्च प्राणाद्वायुरजायत
नाभ्यो आसीदन्तरिक्षं शीर्ष्णो द्यौः समवर्तत
पद्भ्यां भूमिर्दिशः श्रोतात्तथा लोकाँ अकल्पयन्।।

कितना सुंदर लगता है! आप सब वेद पढ़ते हैं। लोग कहते हैं, कुछ लोगों को वेद का अधिकार नहीं है। उस समय जो होगा सो होगा पर कुछ लोगों को वेद की आवश्यकता ही नहीं है। वो केवल 'राम-राम' रटें और आँख में आंसू आ जाए उसको वेद फलित हो जाता है।

एक विराट पुरुष की अद्भुत धारणा है; उसमें किस भाग से कौन जन्मा वो बताया है। ब्राह्मण उस विराट के मुख से जन्मा; उसकी भुजाओं में से क्षत्रिय जन्मे; उसके उरूं से वैश्य जन्मे; चरण में से शूद्र जन्मे। इसका अर्थ ये है कि ब्राह्मण का ब्राह्मणत्व, क्षत्रिय का क्षत्रियत्व, वैश्य का वैश्यत्व, शूद्र का शूद्रत्व। पर मेहताजी कहते हैं-

आपणे आपणा धर्म संभाळवा,
कर्मनो मर्म लेवो विचारी।

मेरा तुलसी तो 'मानस' की शुरूआत करता है तब ब्राह्मण को ही नमन करता है, जब सबकी वंदना करता है तब। मुझको इतना ही समझ में आता है कि ब्राह्मण में यदि ब्राह्मणत्व न हो, क्षत्रिय में यदि क्षत्रियत्व न हो, वैश्यत्व यदि वैश्य में न हो तो पूरा जगत शूद्रत्व। ओशो ऐसा कहते हैं कि जगत में अंधेरे का अस्तित्व ही नहीं है; प्रकाश का अभाव अर्थात् अंधेरा है। तलगाजरडा ऐसा कहता है कि द्वेष का, ईर्ष्या का अस्तित्व ही नहीं पर प्रेम का अभाव उसका नाम द्वेष। शूद्र को पग कहा है इसका अर्थ ये है कि चरण में स्वधर्म रखना चाहिए। हमें पग मिला है तो उसको कम मत मानो। हमें 'चरैवेति' सीखना चाहिए। पग चलते रहना चाहिए। ब्राह्मण अर्थात् ब्रह्म की खोज़ करने में पड़ा हो वो। क्षत्रिय अभय होना चाहिए। वैश्य धनवान होना ज़रूरी है। जयंतीभाई धनवान होना ज़रूरी है। वैश्य की व्याख्या, 'सोचिअ वैश्य कृपण धनवानु।' धनवान वैश्य होना चाहिए। भारतीय सभ्यता में अर्थ का एक स्थान है पर कृपण नहीं होना चाहिए, उदार होना चाहिए। औदार्य ये वैश्यत्व है।

ओशो कहते थे कि एक फ़कीर बैठा था, तभी एक चोर आया। घर में कुछ नहीं था और निराश होकर बाहर निकला। पूर्णिमा के चांद में सूफ़ी डूब गया था। उसने चोर से कहा कि तुम इतना साहस करके आये और मेरे पास देने जैना कुछ नहीं है! यदि दे सकता तो पूरा का पूरा चांद तुझे दे देता! औदार्य का सवाल है। रुपिया-पैसा और पदार्थ का सवाल नहीं है। शरणानंदजी कहते थे कि वस्तु की अपेक्षा व्यक्ति महत्त्व का है। माईक वस्तु है। मोरारि बापू नहीं बोले तो इसका क्या मतलब? आपके पास एक लाख रुपया हो वो वस्तु के रूप में है पर आप उसका उपयोग नहीं करे तो? वस्तु की अपेक्षा व्यक्ति महत्त्वपूर्ण है और व्यक्ति की अपेक्षा उसका विवेक महत्त्वपूर्ण है। विवेक जगने के बाद नीर-क्षीर के लक्षण द्वारा जो त्यागने जैसा है उसका त्याग बड़ा है। 'उपनिषद' कहता है-

न कर्मणा न प्रजया धनेन त्यागेनैके अमृतत्वमानशुः।
परेण नाकं निहितं गुहायां विभ्राजते यद्यतयो विशन्ति।।

त्याग की अपेक्षा वैराग्य महत्त्वपूर्ण है। क्योंकि निष्कुळानंदजी कहते हैं, वैराग्य बिना का त्याग आता तो है, पर टिकता नहीं है। मेरा मनपसंद पद है-

त्याग न टके वैराग्य विना।

स्वामिनारायण संप्रदाय के साधुओं कभी मेरा प्रवचन रखें तो मैं कहूंगा कि निष्कुळानंदजी का ये पद स्वामिनारायण संप्रदाय की 'भगवद्गीता' है। तो वस्तु की अपेक्षा व्यक्ति महत्त्वपूर्ण, व्यक्ति की अपेक्षा विवेक महत्त्वपूर्ण, विवेक की अपेक्षा क्या त्याग कर दूं इसका ज्ञान हो जाएं तब अनावश्यक को बिलग करना महत्त्वपूर्ण है। त्याग में आक्रमकता नहीं आनी चाहिए। तब तो त्याग दूषित हो गया! दूध में छाछ की बूंदे पड़ गई! साधना तो 'बहुत कठिन है डगर पनघट की।' घड़ा भर-भर के तो कोई-कोई ही निकल पाते हैं। बाकी तो कहीं कृष्ण ने कंकड़ मार दिया होगा! कृष्ण कहीं घड़ा फोड़ने के लिए नहीं आये थे, पर साधना की कसौटी करते हैं। हरीन्द्रभाई उसका सकारात्मक रूप लेते हैं-

शिर पर गोरस मटुकी
मारी वाट न केमे खूटी,
अब लग कंकर एक न लाग्यो,
गयां भाग्य मुझ फूटी।

लूंट जाना पसंद था गोपियों को। कृष्ण जब मटकी नहीं फोड़ते तब लगता था कि मटका सलामत रहा और भाग्य फूट गया!

फूल कहे भमराने, भमरो वात वहे गुंजनमां,
माधव क्यांय नथी मधुवनमां।

पढ़ने का मेरा ये चश्मा है। जब पढ़ना नहीं होता तब धीमे

से चश्मा रख देता हूं, उसका नाम त्याग। हमारे समर्थ भागवतकार नरेन्द्र बापा तो ऐसा कहते थे कि शुभ के ग्रहण करने जैसा दूसरा कोई त्याग नहीं है। त्याग की अपेक्षा महान है वैराग्य। वैराग्य की अपेक्षा भी आखिरी महानता है हरि-भजन; इससे महान कुछ नहीं है। तुलसी कहते हैं-

बिनु हरि भजन न भव तरिअ यह सिद्धांत अपेल।

आखिरी निर्णय भजन है। इसकी व्याख्या आपको जो करनी है वो कीजिए। वैश्य तो जन्म ले लेगा माँ की कोख से परन्तु वैश्यत्व तो तब जन्मेगा जब औदार्य आयेगा। क्षत्रिय तो जन्मेगा माँ की कोख से परन्तु क्षत्रियत्व तो तब आयेगा जब अभय आयेगा। ब्राह्मण तो माता के कोख से जन्म लेगा परन्तु ब्राह्मणत्व तो तब आयेगा जब ब्रह्म की खोज शुरू हो जाएगी। 'शूद्र' ये खराब शब्द नहीं है। पग चलना चाहिए, बैठे नहीं रहना चाहिए। इसको अनेक अर्थ में लेना चाहिए। आलसी नहीं होना चाहिए। इसलिए ऋषि कहते हैं, 'चरैवेति चरैवेति।'

तो बाप! राम तो रामनवमी को जन्मते हैं; पर रामत्व कैसे जन्मे? विराट पुरुष का वर्णन करते हुए फिर लिखा, उसके मन में से चंद्र जन्मा, उसकी आंख से सूर्य जन्मा, उसके कान में से वायु, मुख से अग्नि जन्मा, नाभि में से अंतरीक्ष जन्मा है। चरण में से पृथ्वी जन्मी। कान में से दिशा जन्मी। तुलसी सभी प्रमाण देते हैं-

श्रवन दिसा दस बेद बखानी।

वेद के सूत्रों का चौपाई में भाषान्तर मिलता हैं।

उपदेश देने का मेरा सामर्थ्य नहीं है पर बातें तो हम कर सकते हैं। नागरत्व का जन्म कहां होगा? कोई भी व्यक्ति किसी भी पेट से जन्मा हो; कोई भी वर्ण हो; ये जाति-पाति, वर्ण ये सब अब खत्म होना चाहिए। बहुत-से लोग मुझे कहते हैं कि बापू, आप कहते हैं कि वर्ण समाप्त होना चाहिए पर 'रामायण' में लिखा है, 'वर्णाश्रम निज निज धरम।' रामराज्य था तब वर्णाश्रम धर्म था उसको आप कैसे समाज के समक्ष रखेंगे? मैं ऐसा अर्थ करूंगा कि चरण है उसको अपना धर्म निभाना चाहिए; चलते रहना चाहिए; दीन-दुःखी के पास जाना चाहिए। ये वर्णाश्रम धर्म है। जिसके पास बुद्धि है, विवेक है उसको निरक्षर को पढ़ाना चाहिए। सब कुछ टयूशन करके ही नहीं किया जाता! ये ब्राह्मणत्व है। वैश्यत्व ये है कि बांट कर खाना चाहिए। 'तेन व्यक्तेन भुंजिथाः।' टुकड़ा में से टुकड़ा करके। ये वैश्यत्व है। क्षत्रियत्व वो है कि निर्बल का रक्षण करना चाहिए। समाज को अभय रखना चाहिए। कालिदास ने 'रघुवंश' में जो राजाओं का वर्णन किया हैं उसे क्षत्रियों को पढ़ना चाहिए। अद्‌भुत वर्णन है! ये हमारे धर्म हैं; हमें पालन करना चाहिए। क्षत्रिय हथियार रखे यह उसकी शोभा है; वो उसका बाहरी रूप है। सामर्थ्य हो फिर भी क्षमा प्रदान करे वो क्षत्रियत्व है। 'ब्रह्म लटकां करे ब्रह्म पासे।' वहां तक पहुंचा हुआ ब्राह्मणत्व है। उदारता और अभय इसके जैसा कौन है? मैं भजन करने जाऊंगा; तुम्हें जो कहना हो कहना!

एवा रे अमे एवा रे, तमे कहो छो वळी तेवा रे।

मेहता में अभय है; वो ब्रह्म तक पहुंचा हुआ नागर है। उसका औदार्य मालधारी का काम करता हैं। इसलिए तो उसने पद लिखा होगा-

जाग ने जादवा! कृष्ण गोवाळिया!
तुज विना धेनुमां कोण जाशे?

नागर कुल में जन्म लेने का भी गौरव है और नागरत्व प्राप्त करने का भी, उसकी तो बड़ाई का नाप नहीं है। ये मेहता है; उसमें सब कुछ दिखता है। मेहताजी का पूरा यदि इतिहास देखते हैं तो उसका जन्म तो तळाजा में है न? तालध्वजगिरि। भगवान गोपनाथ ने रासदर्शन कराया गोपनाथ में। अंतिम अवस्था, उत्तरावस्था मांगरोळ में है। ये सब देह के स्थान हैं।

नागरत्व कहां जन्मता है, उसकी थोड़ी बातें आपके साथ करनी है। नागर कोख से जन्मता है पर नागरत्व जहां संगम होता है वहां जन्मता है। नागरत्व पर्वत की गुफ़ा में जन्मता है। नागरत्व किसी अचल पहाड़ी की तलहटी में जन्मता है। नागरत्व जिसे कोई ऋतु चलित नहीं करती ऐसे किसी रूखडा के नीचे जन्मता है। ये नागरत्व प्रगट होने के केन्द्र है। गुफ़ा में जन्में अर्थात् गहन चिंतन में से नागरत्व जन्मता है। सबको इकठ्ठा करना। कौन ऊंचा? कौन नीचा? व्यवहार की दृष्टि से जो हो वो भी सबका जो संगम करता है उस जगह नागरत्व जन्मता है। ऊंचाई चाहे जितनी मिले फिर भी तलहटी को न भूले वहां नागरत्व जन्मता है। इसलिए मेहता कहते हैं-

गिरि तळेटी ने कुंड दामोदर,
ज्यां मेहताजी न्हावा जाय।

तलहटी नहीं भूला है। रोज़ सुबह होती और ये चल देते करताल लेकर! अभी-अभी जवाहरभाई ने बहुत गर्भित बात की कि स्वच्छता अभियान की जो बात चल रही है, वो नागरों के यहां पहले से ही शौचालय की व्यवस्था है। तो नरसिंह मेहता घर में नहीं न्हा सकते थे? घर में स्नान कर सकते थे पर वो रोज़ इतना पल्ला काटते थे, क्योंकि कोई सरोवर के किनारे, किसी तीर्थ के किनारे, किसी तलहटी में किसी वृक्ष की छाया जिसको कोई मौसम असर नहीं कर सकता ऐसे किसी रूखडा की छाया में नागरत्व का जन्म होता है। ये सभी पहलू मेहता में दिखते हैं। ऐसा नागरत्व किसी में भी जन्म ले वो नागर है। कदाचित् हममें नहीं जन्मा हो तो हम ज्ञाति से नागर है। ज्ञाति से नागर होना ये भी खराब नहीं है। ये भी लाभ ही है। तलहटी याद रखें वो नागरत्व। 'एवा रे अमे एवा रे', चाहे जितनी भी ऊंचाई मिले फिर भी कह सकता है ये पंक्ति।

'मानस' की शबरी में नागरत्व नहीं दिखता? प्रत्येक 'रामायण' की शबरी अलग दिखेगी। प्रत्येक व्यक्ति की शबरी अलग है। और सभी को इसका अधिकार है। 'मानस' की शबरी, अन्य ग्रंथों की शबरी, अपने लोककवियों की शबरी, शिष्ट साहित्य की शबरी, सबने अपने-अपने ढंग से रखा है। तुलसी की शबरी में नागरत्व प्रगट हुआ है। जन्मी है भील कुल में; वर्ण के तौर पर वो अधम है, पर 'मैं अधम हूं' ये ब्रह्म के समीप स्वीकारना ये नागरत्व है। मैं ऐसा हूं।

मो सम कौन कुटिल खल कामी।

●

हमारे हरि अवगुन चित्त ना धरो।

यह जो आत्मनिवेदन है वो नागरत्व है। 'अरण्यकांड' का प्रसंग है। 'मानस' की शबरी कहती है; थोड़ी दूर खड़ी है कि ये तो राम हैं, गुणसागर नागर हैं। इनके समक्ष मैं कैसे स्तुति करूं? कौशल्या यही बोली थी। कौशल्या नागरी है; नगरवासिनी है; राजा की पुत्री है; दशरथ की धर्मपत्नी है। नगर में वास करता है, उच्च पद पर बिराजमान हो वो नागर कहलाता है तो कौशल्या नागर है। पर उसने कहा-

कह दुइ कर जोरी अस्तुति तोरी
केहि बिधि करौं अनंता।

भगवान जब जन्में तब कहती हैं, मैं दोनों हाथ जोड़कर आपकी स्तुति नहीं कर सकती। यही बात शबरी करती है, जो जन्म से नागर नहीं है।

केहि बिधि अस्तुति करौं तुम्हारी।
अधम जाति मैं जड़मति भारी।।

प्रभु, मैं कैसे स्तुति करूं? अधम जाति की हूं, मेरी जड़मति है और-

अधम ते अधम अधम अति नारी।
तिन्ह महँ मैं मतिमंद अघारी।।

अधम में भी अधम; उसमें भी भीलनी; उसमें भी स्त्री; फिर मतिमंद हूं। तो कैसे स्तुति करूंगी? और तुरंत भगवान राम उसकी बात काटते हुए कहते हैं-

कह रघुपति सुनु भामिनि बाता।
मानउँ एक भगति कर नाता।।
जाति पाँति कुल धर्म बड़ाई।

शबरी, ये दस-दस वस्तु नहीं गिनता हूं। मैं नव वस्तु को ही स्वीकार करता हूं, और नवधा भक्ति कहते हैं प्रभु। तो शबरी में नागरत्व प्रगट हुआ है।

जटायु परमात्मा की प्रतीक्षा करने के लिए प्राण टिकाये रखता है। जानकी को बचाने के लिए जो शहीद हुआ है और भगवान राम आयें तब तक प्राण टिकाये रखता है उसमें भी नागरत्व प्रगट हुआ है। तुलसी प्रमाणपत्र देते हुए कहते हैं-

गीध अधम खग आमिष भोगी।
गति दीन्हि जो जाचत जोगी।।

बाप! हम अपना नागरत्व प्रगटित कर सकते हैं, श्रेष्ठत्व प्रगटित कर सकते हैं, ऐसी व्यवस्था है। आइए,

कहीं संगम करें, संमिलन करें। जैसा प्रयाग में संगम होता है तीनों नदियों का, वैसे ही हम पांच को इकठ्ठा करें। छोटी-छोटी बात में क्यों सबको तोड़ें? एक तो टूटा हुआ समाज है। जिसको टैगोर 'नेरो डोमेस्टिक वोल्स' कहते हैं। सामाजिक दीवारों से जगत टूटता जा रहा है। कहां से जन्मेगा नागरत्व? गहन चिंतन में। सुख-दु:ख, सन्मान-अपमान, स्वीकार-अस्वीकार, गाली या स्तुति, ऐसी एक भी मौसम जिसको प्रभावित नहीं करती, ऐसे किसी रूखडा के तहत नागरत्व जन्मता है। शिखरस्थ होने पर भी जिसको तलहटी नहीं भूलती ऐसे समय में नागरत्व का जन्म होता है।

भगवान राम को गुणसागर है इसलिए नागर कहा है। ऐसे ही भगवान को दो बार 'नय नागर' कहा है तुलसी ने। 'नय' का सीधा अर्थ है नीति। राम नीति नागर है, नीति में संपूर्ण निपुण है वो राम। जो नीति में निपुण हो, कुशल हो, प्रवीण हो वो नागर है। खोजने बैठें तो नीति का कोई पार नहीं है। स्मृति का, श्रुति का, नीति का कोई पार नहीं है। इन सब में हम उलझ जाएंगे ऐसे हैं।

मुख्यत: चार नीति की बात करें तो एक धर्मनीति, जिसका 'रामायण' में भी उल्लेख है। दूसरी राजनीति, तीसरी समाजनीति और चौथी पारिवारिक नीति। राजनीति अर्थात् आज जो राजनीति है उसके साथ तुलना नहीं की जा सकती। परन्तु भगवान राम के विषय में तुलसीदासजी ऐसा लिख डाले कि स्वार्थ हो तो परमार्थ, नीति हो या प्रीति हो उसको राम के सिवा यथार्थ कोई नहीं जानता।

नीति प्रीति परमारथ स्वारथ।
कोई न राम सम जान जथारथ।।

यथार्थरूप में राम के सिवाय कोई नहीं जानता। राम के पास राजनीति है। उसका नैपुण्य उनका नागरत्व सिद्ध करता है। जब भरत को चित्रकूट से बिदा किया तब कहा कि इसी तरह से प्रजा का ध्यान रखना और फिर भगवान एक शब्द बोले, 'राजधरम सरबसु एतनोई।' भरत, ये राजनीति है। जिसके राज में प्रजा पीड़ित हो वो राजा नरक का अधिकारी बनता है, ऐसा निवेदन राम ने किया।

धर्मनीति; रावण दावा करता है कि मैं धर्मनीति जानता हूं। पर दुर्योधन की तरह-

जानामि धर्मं न च मे प्रवृत्ति:।
जानामि अधर्मं न च मे निवृत्ति:।

प्रत्येक धर्म की अपनी नीति होती है, उसे भी जानना चाहिए। मुझसे कोई पूछेगा कि धर्म की नीति तलगाजरडा की दृष्टि से क्या है? तो मैं इतना ही कहूंगा- सत्य, प्रेम और करुणा। बस, इसके सिवा कुछ नहीं।

समाजनीति; प्रत्येक समाज की अपनी-अपनी नीति होती है। अपने नियम, व्यवस्था, संविधान होते हैं। एक- दूसरे का तोड़े नहीं और देखा करे। अपनाने जैसा हो तो अपना ले इसके अलावा तुम गलत, तुम्हारी नीति गलत, इसमें पड़ना ही नहीं। हमें बहुत जीना है पर ये सब करके हम ज़िंदगी कम कर रहे हैं। मेरी दृष्टि से ईर्ष्या, निंदा और द्वैष मनुष्य का आयुष्य बहुत कम कर देते हैं। मनुष्य ईर्ष्या करता है तब जीवन के आनंद की मात्रा कम हो जाती है। नागरत्व खड़ा नहीं होता पूरे समाज में उसका एक ही कारण है कि ये तीनों वस्तुएं हमें बहुत पकड़े हुए हैं। काम बुरा नहीं। सम्यक् काम तो होना चाहिए। नहीं तो दुनिया ठप हो जाएगी। क्रोध ज़रूरी है। लड़कों को कहे कि बहुत सिरियल न देखें; एक देख लिया, बस अब बंद करो। घड़ी-घड़ी फोन मत लो। भगवान का नाम लेकर सो जाओ। ऐसा माँ-बाप का डर ज़रूरी है। और अपने भविष्य की पीढ़ी के लिए संग्रह करके एफ. डी. कर दें तो ये लोभ भी ज़रूरी है। परन्तु ये ईर्ष्या, निंदा और द्वेष कहां काम आयेगी ऐसी वस्तु है? इसकी कोई ज़रूरत नहीं है। और इससे कोई समाज वंचित नहीं है। फिर धर्मनीति हो या राजनीति हो या समाजनीति हो या पारिवारिक नीति हो, सबको ये रोग लगा है!

बाप! ईर्ष्या अपने उपर ही आकर लगती है। निंदा और द्वेष भी अपने उपर ही आकर पड़ते हैं। 'राम-राम' न जपें तो कोई बात नहीं, इतना छोड़ दो तो बेड़ा पार है। परन्तु बड़ा कठिन है। कबीर साहब कह गये हैं, 'करेगा वो भरेगा।' तू क्यों पंचात कर रहा है? जो करेगा वो भरेगा। ये बातें क्यों हम कर रहे हैं? क्योंकि जीवन का कुछ सत्त्व हम सब पायें मूल वस्तु खो न जाएं इसलिए; मूलवस्तु को भरोसे के साथ जो पकड़ेगा उसे कहीं मुश्किल नहीं होगी।

नागर कोख से जन्मता है परन्तु नागरत्व जहां संगम होता है वहां जन्मता है। नागरत्व पर्वत की गुफ़ा में जन्मता है, नागरत्व किसी अचल पहाड़ की तलहटी में जन्मता है, नागरत्व जिसे कोई वस्तु चलित नहीं करती हो, ऐसे किसी रूखडा के नीचे जन्मता है। ये नागरत्व प्रगट होने के केन्द्र है। गुफ़ा में जन्मता है अर्थात् गहन चिंतन से नागरत्व जन्मता है। सबको इकठ्ठा कीजिए। कौन ऊंचा? कौन नीचा? व्यवहार की दृष्टि से जो भी हो, पर सबका जो संगम करता है उस जगह नागरत्व जन्मता है। ऊंचाई चाहे जितनी मिल जाएं फिर भी तलहटी को नहीं भूलता वहां नागरत्व जन्मता है।

समाज में जो सेतु बांधता है वो नागर है

बाप! सबसे पहले अपनी ये प्रसन्नता व्यक्त करता हूं कि अपने एक विशिष्ट मिजाज के चारण कवि दाद बापू; जय माताजी। उनके साथ अपने चारण समाज के विध-विध क्षेत्र के अग्रणी और उनमें दाद बापू के सुपुत्र भाई जितुदान, उन्होंने पूरा 'हरिरस' गाया है। उन्होंने मुझे थोड़ा-सा कुटिया पर आकर सुनाया था। बहुत बड़ा काम किया है बेटा! इनके साथ संगीत नियोजन जिन्होंने किया है उन सबका भी स्मरण करता हूं। नरसिंह मेहता ने प्रेमरस गाया है, इशरदास बापू ने हरिरस गाया।

प्रेमरस पाने तुं मोरना पिच्छधर,
तत्त्वनुं टूंपणुं तुच्छ लागे।

मेरी बहुत श्रद्धा है 'हरिरस' पर। मैं अक्सर कहता हूं कि मनुष्य 'हरिरस' लेकर ठाकुरजी के समक्ष एक बार बैठे न तो ठाकुरजी को बोलना ही पड़ेगा, ऐसा यह ग्रंथ है। भाई जितु ने बहुत उपकारक कार्य किया है। अभी उसका मनोरथ है; व्यासपीठ पर कहा उसने मुझे कि बापू, माताजी की कृपा से 'महिम्नस्तोत्र' गाना है। जगदंबा मनोरथ पूर्ण करे। मैं बहुत प्रसन्न हुआ हूं। ऐसा होना ही चाहिए। कितनी धरोहर है हमारे पास! फिर भाई दीपक ने 'हूंडी स्वीकारो महाराज' गाया और पूरा मंडप बुलंद हुआ था क्योंकि कहीं न कहीं अपनी हूंडी स्वीकृत हुई होगी न साहब! ये तो मेहतापन नहीं आता, नागरत्व नहीं आता है इसलिए हूंडी स्वीकृत नहीं होती। नहीं तो हमने भी लिख-लिखकर हूंडी रखी ही है! छाया साहब ने कलम के विषय में बात की, 'एक एक ओटला ने घाट बनावी दीधा।' अच्छा निवेदन है। ये टुकड़ा पूरा प्रवचन कह देता हैं। एक-एक चबूतरे को घाट बना देना ये नागरत्व ही कर सकता है। छाया साहब बहुत अच्छा बोले। मुझे ऐसा था कि आप लिखते ही है, पत्रकारित्व ही करते है। परन्तु कितना सुन्दर बोलते है! बहुत प्रसन्न हुआ। आपकी कलम भी चिलम जैसी बने, मलहम जैसी बने और बालम जैसी बने; विश्व में प्रेम प्रगट करती है ऐसी कलम के लिए दुआ करता हूं। और ये सब शीलवंत संचालन के तहत हुआ है।

बहुत प्रसन्नता होती है साहब! एक-एक मिनट का हम सदुपयोग कर रहे हैं। ये मेहता की कृपा है। मेहता ही करवा सकता है; उसकी चेतना ही करवा सकती है और हम उसमें हिल्लोल ले रहे हैं; आनंद कर रहे हैं। मुझे तो ऐसा लगता है कि या तो कथा के दिन बढ़ा दूं या तो आज पूरी कर डालू!

हरि पर अमथुं अमथुं हेत।
हुं अंगूठा जेवडी ने मारी व्हालप बब्बे वेंत।
आ जूनागढ़ पर अमथुं अमथुं हेत।

जूनागढ़ में बहुत आनंद आया। कितने ताल में है सभी! सभी कितने ताल में हैं! कैसी तालियां बजा रहे हैं! अपने यहां गांवों में घर के काम भी ताल के साथ होते हैं। घास काटने जाएं तो 'सवा बसेरनुं मारुं दातरडुं...' गीत गाते हैं और कब घास कट जाती है पता नहीं चलता! ओखली में कूटते-कूटते गीत गाएं जाते हैं। ये सभी ताल में और सूर में हैं। इसमें भी पुराने तो विशेष है। इतने संत-महंत आशीर्वाद देते हुए बिराजमान हैं। 'महंत' शब्द शंकराचार्य ने दिया है। एक सूत्र में

उसकी अद्‌भुत व्याख्या की है। नीतिनभाई एक शब्द ऐसा भी लिखते हैं, 'मननो होय महंत।' कैसा सुन्दर वातावरण उपस्थित है और कल जाना है!

कथा के संदर्भ में बहुत-सी जिज्ञासाएं हैं। लिखा है कि बापू, आपने कल वर्णाश्रम की बात की कि ये भेद नहीं होना चाहिए। व्यवस्था के तौर पर बात अलग है, भेद के रूप में नहीं होना चाहिए। मुझे आपने नौ दिवस के लिए बोलने को कहा है इसलिए मैं ऊपर बैठा हूं, इसका अर्थ मैं महान नहीं। आप जैसा ही आदमी हूं और ऐसा ही रहने दीजिएगा मुझको। मेहरबानीपूर्वक कृपा कीजिएगा मुझ पर, आप जैसा ही आदमी हूं।

अपने अंदर की थोड़ी बातें कर डालूं? मैं कहना चाहता हूं कि मेरे जाने के बाद कोई मेरी प्रतिमा भी मत लगाना। मेरे नाम का कोई मार्ग नहीं होना चाहिए। मेरे नाम का कोई चौक या सोसायटी नहीं होनी चाहिए। मेरे नाम का कोई मंदिर नहीं होना चाहिए। मैं जैसे आया हूं वैसे जाने देना। ये मेरी इच्छा है; भाव है। अभी तो बहुत जीना है, कितनी कथा बाकी है! मरने की कोई जल्दी नहीं है। तो मेरे नाम पर कुछ नहीं होना चाहिए। आनंद कीजिए। और अभी बहुत जीना है। मरने की बात ही क्यों करनी?

तो मुझसे किसी ने पूछा कि वर्णाश्रम से पर रहने की बात करते है। मैंने कल 'रामायण' का दृष्टांत देते हुए कहा था कि रामराज्य में वर्णाश्रम-निरत लोग थे। परन्तु व्यवस्था के रूप में अब स्वीकार कीजिए, भेद के रूप में नहीं। मुझे आपने यहां बैठा दिया है और मुझको बोलना है। आप सभी को मैं देख सकूं इसलिए यहां बैठा हूं। आप बोलते हैं तब मैं नीचे बैठता हूं, जगविख्यात बात है। जैसे बच्चा कंधे पर बैठ जाता है वैसे इन महापुरुषों के कंधे पर बैठा हूं। नरसिंह के कंधे पर बैठकर दत्त का घंटा बजा रहा हूं। दातार की धूपदानी में लोबान डाल रहा हूं। भेद से बाहर निकलिए। व्यवस्था तो होनी चाहिए। यजमान परिवार है; इतनी वित्तजा, तनुजा, मानसी सेवा की है इसलिए स्वाभाविक है कि इस तरह से बैठें। विशिष्ट महानुभाव आयें तो हमारा शील है कि इस तरह से उन्हें बैठाएं। उसका अर्थ कोई भेद नहीं है। परन्तु भेद खड़ा हो तब वो अपराध है। व्यवस्था के तौर पर बात अलग है। वैमनस्य नहीं होना चाहिए।

ये उस समय व्यवस्था के रूप में था; भेद के रूप में था ही नहीं; नहीं तो नागरत्व पाया हुआ मेरा राम शबरी का जूठा बेर खाते ही नहीं। गिरनार तो हम अनेकबार चढ़ जाएंगे पर नागरत्व का मेल कठिन है। इन नौ दिवस में थोड़ी-बहुत उन्नति हुई हो तो अपना फेरा सफ़ल है। ये बहुत ऊंचा शिखर है। शास्त्रों ने जो कहा है वो बात मैं कह रहा हूं। तो व्यवस्था ज़रूरी है। हमारे घर साधु-संत आयें तो वो हमें हल्का गिनते हैं? नहीं। पर हम व्यवस्था करते हैं कि महात्मा आयें है उन्हें बैठाएं, हम चरण में बैठें।

बाप! जिसने वर्ण का विकार त्याग दिया हो, जिन्हें जाति-पाति के पक्षपात नहीं हुए है, ऐसा जो तत्त्व समाज में उभरता है वो नागरत्व है; उसमें कृष्ण, राम, अपने आचार्य ये सभी हमको अद्‌भुत मार्गदर्शन दे गए हैं। बुद्ध के शिष्य भिक्षा लेने निकलते हैं तब कुल या वर्ण नहीं पूछा जाता था। भिक्षा में पूछा ही नहीं जाता। दलित का घर आएं तो भिक्षा लेनी पड़ती है, वापस नहीं जा सकते। अपने यहां ऐसी बात है कि शराबी की दुकान आई और शराब दिया तो उसे भिक्षा में ले लेना पड़ा। और एक आदमी सीसा पिघला रहा था काशी के बाज़ार में; वो लेना पड़ा! इसलिए 'भिक्षा' शब्द बहुत महान है। अच्छा शब्द है 'शिक्षा' पर इससे भी सुन्दर शब्द है 'दीक्षा' और इससे भी सर्वांग सुन्दर शब्द है 'भिक्षा'। जो तमाम भेदों से मुझको और आपको मुक्त करता है।

मेहता ने ये किया है। उन्यासी-अस्सी वर्ष में अपनी बिसात बटोर ली इस आदमी ने! कितना अद्‌भुत काम किया! परन्तु मैं थोड़ी पीड़ा का अनुभव करता हूं कि पुष्पहार का प्रसंग हुआ फिर उसका मन उतर गया। अनंतप्रसाद आदि महापुरुषों ने और दूसरे आख्यानकारों ने ऐसा लिखा है कि दलित लोग नरसिंह मेहता के घर नमन करके कहते हैं कि हमारे घर कीर्तन करने आओ। हमें उलटे मार्ग से छुड़ावो। तो पुष्पहार के प्रसंग के बाद विशेष उदासीनता आई है मेहता को। फिर मुझे रमेश पारेख याद आते हैं-

हवे तारो मेवाड मीरां छोडशे।

एक मत है कि दामोदर की मूर्ति उनके साथ उना गई। और आज भी एक मत है कि वहां भी मूर्ति है। इतिहास में तो बहुत फ़ेरफ़ार हुआ परन्तु हमारे मर्मज्ञ महापुरुषों ने बहुत खोज की हैं। उस खोज को साधुवाद देता हूं। एक वडनगर तो वहां का, पूरा नागरों का गांव है। और एक कोडीनार के पास भी वडनगर बतातें हैं, उसका भी संकेत मिलता है। ये सब इतिहासकारों पर छोड़ दें। अध्यात्म को बहुत इतिहास की ज़रूरत नहीं है। इतिहास तथ्यों पर जीवित है, अध्यात्म सत्य पर जीवित है। प्रमाण आवश्यक है। दामोदरजी का वो स्वरूप गया कि नहीं गया मुझे नहीं मालूम पर मैं इस अर्थ में लेता हूं कि कोई संत निकलता है तब ठाकुरजी उसके साथ ही जाते हैं। तूने मुझे कभी अकेले रहने नहीं दिया, मैं तुझे कैसे अकेला जाने दूंगा? ये है वैष्णवी भक्ति।

चित्रकूट में एक आदमी आया और मुझसे बोला, 'सत्य के मार्ग पर हूं और मुझे मुश्किलें बहुत पड़ती है।' मैंने कहा, तो सत्य के मार्ग पर ही होना चाहिए। क्योंकि सत्य के मार्ग पर होंगे तो ही मुश्किलें पड़ेगी। गलत मार्ग में कहां मुश्किली पड़ती है? भजन में मुश्किलियां आयें तब समझना चाहिए कि मार्ग सही है। लोग उलटा समझते हैं कि भजन करता है उसको मुश्किले आती है? तुझे क्या मालुम? कसौटी सोना की होती है, गिलट की नहीं होती। तो मेहता को केन्द्र में रखकर हम बात कर रहे हैं। नागर ये केवल जाति नहीं है पर एक विचारधारा है; नागरत्व उसका कलश है।

बाँधा सेतु नील नल नागर।
राम कृपाँ जसु भयउ उजागर।।

'रामचरितमानस' में तुलसी ने नल-नील को नागर कहा है। इसमें कोई जातिभेद है? बंदरों को नागर कहा है! नल-नील को 'मानस' में नागर कहा है; जन्म के कारण नहीं परन्तु सेतु बांधा इसलिए। समाज में जो सेतु बांधता है वो नागर है। बंदर हो तो क्या और कोई सुन्दर तत्त्व हो तो क्या हुआ? सबको जोड़ता है, समन्वित करता है वो नागर है। राम की कृपा के कारण नल-नील का यश जगत में उजागर हुआ, क्योंकि नागर है।

मेरी बहुत स्पष्ट व्याख्या है, अपनी बुद्धि के अनुसार, गुरु की आज्ञा अनुसार कि दूसरे को जो हल्का समझता है उसके जैसा हल्का दूसरा कोई नहीं है। नाहक भागदौड़ नहीं करना। शक्ति है तो जोड़िए, सेतु बांधिए।

गुन सागर नागर बर बीरा।
सुंदर स्यामल गौर सरीरा।।

राम-लक्ष्मण इसलिए नागर है कि उन्होंने सेतु बांधा। 'गुन सागर नागर भवसेतु।' राम, आप नागर हैं, आप संसार पर सेतु बांध दीजिए। तो सेतु बनाते हैं इसलिए नल-नील नागर है। राम स्वयं सेतु निर्माण करते है इसलिए नागरत्व प्राप्त किया है। और राम का नाम भी नागर है। 'राम-राम' लिखे पत्थरों ने सेतु निर्माण किया है।

अपने यहां शिल्पकला में पांच विभाग कर सकते हैं और पांचों जो हस्तगत करता हैं, पढ़-लिखकर के, शिक्षा प्राप्त करके, नया-नया सर्जन वैज्ञानिक रूप में खोज करके, इन पांच वस्तु का शिल्पपना प्राप्त कर ले वो नागर है। पाषाणयुग से पूर्वकाल में, खनन कीजिए इतिहास में, अति आदिकाल में मनुष्य नख से शिल्प बनाता था; इतना ही नहीं, नख के द्वारा पत्थर पर जिस-तिस काल की जिस-तिस लिपियों को लिखता था। प्रमाण है हनुमानजी का 'हनुमंत नाटक।' हनुमानजी ने 'हनुमंत नाटक' की रचना किसी कागज़ पर नहीं की, अपने नख द्वारा पत्थर पर भगवान राम का चरित्र अंकित किया। वाल्मीकि को और सबको लगने लगा कि हनुमानजी यदि स्वयं लिखेंगे तो हमारे 'रामायण' का क्या होगा? ये बात फैली और मारुति के कान तक पहुंची। हनुमानजी परम बुद्धपुरुष है; उन्हें लगा कि मेरी किसी रचना से अन्य को पीड़ा होती हो तो बहतर है कि उस रचना को मैं समुद्र में डाल दूं। और संशोधकों ने थोड़ा-थोड़ा खोजा है। विजयभाई पंड्या, संस्कृत के विद्वान, ऐसे बहुत-से विद्वानों ने खोज की भी है।

पाषाणयुग से पूर्व मनुष्य इतना अधिक मज़बूत था; डिस्कवरी में आपको दिखता होगा, गूगल में तलाश करें तो आदिकाल में मनुष्य का शरीर चट्टान जैसा और नख औज़ार जैसा था। रामायणकाल तक के वानरों का बल उनके दांत और नख ही थे। दूसरे किसी हथियार से नहीं लड़ते थे। राक्षसों को दांत से काटते और नख से चीर डालते। राक्षसों ने ऐसा हथियार देखा ही नहीं था। हां, उनकी बहन शूर्पणखा थी, जिसके सूप जैसे नख थे। 'प्रतिमानाटक' इसका सबूत माना जा सकता है।

पाषाणयुग में तीक्ष्ण पत्थर से पत्थर पर शिल्प बनता था। फिर पूरा लोहयुग आया होगा। लोहे की छैनी और औज़ारों द्वारा शिल्प-स्थापत्य शुरू हुआ होगा। धीरे-धीरे अब का विज्ञान है वो किरणों द्वारा शिल्प तैयार करता है। पर मुझको कहना ये है कि पांचवां शिल्प है वो ध्यान द्वारा निर्मित होनेवाला शिल्प है। बुद्धकालीन मूर्तियां सभी कहीं लोहे के औज़ारों से नहीं बनी। मेरे पक्ष में खड़ा होंगे नागार्जुन। दो-तीन ऐसे महापुरुष निकले हैं कि जिन्होंने ध्यान में अपने गुरु की कल्पना की और गुरु की मूर्तियां तैयार हुई। ये सब संभव है। नितांत ध्यान के द्वारा मूर्ति का निर्माण हो सकता है। आत्मा की किरण से जो शिल्प बना सके; कुशाग्र बुद्धि से जो शिल्पनिर्माण कर सके, अपने नख से अर्थात् नख जितना। बापुभाई गढ़वी ने कहा है न कि-

नाजुक ने नख जेवुं अमने लागी आव्युं।

अध्यात्म में नख जितनी अर्थात् थोड़ी-सी शक्ति गुरुकृपा से मिल जाएं तो भी नागरत्व पाया जा सकता है। कुशाग्र बुद्धि से नागरत्व पा सकते हैं। एक अर्थ में ये सब नागरत्व पाने के रास्ते हैं। नल-नील में ऐसा नागरत्व 'मानस' के आधार पर दिखता है। आत्मा की किरणों से शिल्प बन सकता है। कोई समर्थ, साधनाशील गुरु का हाथ पड़ा हो और साधक ध्यान में बैठा हो तब उसे 'ध्यानंमूलं गुरु मूर्तिम्।' उस गुरुमूर्ति का ध्यान उसको होने लगता है। तो शिल्प के पांच प्रकार मेरी नज़र समक्ष आये हैं। ये पांचों कौशल्य नल-नील में हैं, इसलिए 'मानस' उन्हें नागर कहता है।

भगवान राम अनेक तरह से नागर हैं। उसमें भी 'नय नागर' नीति में नागर है प्रभु; ये भी उनका नागरपना है। नगरजनों को भी नागर कहा गया हैं। ये 'नागर' शब्द बहुत ही विशाल है अपने ग्रंथों में; इसको संकीर्ण न करें। कथा सुनें और मैं बोलता हूं तब इतना ध्यान रखें। मैं हमेशा

कहता हूं कि ये संवादी चर्चा है। इसमें विवाद का कोई प्रश्न नहीं है।

कथा सुनें तब मन को प्रसन्न रखें। मन को स्थिर करने का उद्यम न करें। मन स्थिर नहीं रहता। जिसका हुआ है उसका नमन करके आशीर्वाद ले लीजिए; मेरा मन तो अभी नहीं हुआ स्थिर। वैराग्य और अभ्यास से तू इसे पकड़, ऐसा उपाय 'गीता' में बताया है। और कथा सुनते समय मन को स्थिर करने की ज़रूरत नहीं है; मन को प्रसन्न रखने की ज़रूरत है। आपका मन स्थिर हो जाएगा तो मेरा बोला हुआ समाप्त हो जाएगा! मैं यहां होऊंगा और आप दत्त के पास बैठे होंगे! हमारा अंतर बढ़ जाएगा! इसलिए आप स्थिर तो करना ही मत!

मन को प्रसन्न रखना चाहिए। और बुद्धि को थोड़े समय के लिए तर्क से दूर रखकर कथा सुनना चाहिए। फिर उस पर तर्क कीजिए; होमवर्क कीजिए। नारद भक्तिसूत्र में कहते हैं, 'वादो नावलम्ब्यः।' जिसको कथा श्रवण करना हो उसे वादों का अवलंबन नहीं करना चाहिए। संवाद रचना चाहिए। श्रोता-वक्ता के बीच सेतु होना चाहिए। ब्रह्मसूत्र कहता है, तर्क का कोई स्थान नहीं है अध्यात्म में। 'राम अतर्कय बुद्धि मनबानी।' राम तर्क से बाहर है। सुनते समय तर्क करोगे तो आपका सुना हुआ चला जाएगा; आपका रस भी चला जाएगा; ये नुकसान का व्यापार है। आप मुझे चार घंटा देते हैं। आपको नुकसान हो ये मुझे पसंद नहीं। आपको संपूर्ण मिलना चाहिए। जैसे मैं एकदम तह में उतरता हूं। फिर भले तर्क कीजिए, मिले तब पूछे कि बापू, ये नहीं समझ आया; तो बातचीत हो सकती है। चित्तविक्षेप बिना सुनना चाहिए। विक्षेप अर्थात्? अगल-बगल में कौन बैठा है? ये करेंगे तो विक्षेप होगा। व्यासपीठ की तरफ़ देखें। अभी मैं हूं इसलिए यहां देखे। मैं आपकी जगह बैठा होऊं तब यहां जो बैठा होगा उनको देखना; अगल-बगल में देखने जायेंगे तो चित्त का विक्षेप होगा। मन प्रसन्न, बुद्धि तर्कमुक्त और चित्त विक्षेपमुक्त करके सुनना चाहिए। इन तीनों को रखना पर अहंकार बिलकुल नहीं रखना चाहिए सुनने में कि मोरारि बापू की हमने चार सौ कथा सुनी है! इससे कुछ नहीं होगा! अहंकार रखेंगे तो कथा गई!

श्रोताओं के लिए भी, वैसा ही वक्ताओं के लिए भी। वक्ता को भी मन प्रसन्न रखकर कथा कहनी चाहिए। वक्ता जो सूत्र प्रस्तुत करें उसमें स्वयं परिपूर्ण होना चाहिए; उसमें असमंजस नहीं होना चाहिए। थोड़ा बोलना पर परफेक्ट बोलना चाहिए। बहुत कथा बाकी है, जल्दबाजी मत करें। मुझे यहीं निवेदन कर डालना है? जब पक्का हो जाएं तब कहना चाहिए। और तीसरा, वक्ता के चित्त में विक्षेप नहीं होना चाहिए। उसके चित्त में विक्षेप तभी होगा जब कुछ कारण बिना कोई खड़ा होगा। रजोगुणी मनुष्य एक जगह बैठ ही नहीं सकता। तमोगुणी कभी खड़ा ही नहीं होगा। सत्त्वगुणी सम्यक् बैठेगा, सम्यक् खड़ा होगा। बहुत लोग कारण बिना खड़े होते हैं! तो ये वक्ता का विक्षेप है। कोई ज़रूरी व्यवस्था हो, शील हो वहां खड़ा होना चाहिए। यहां तो बहुत अच्छा है। वक्ता को भी अहंकार से नहीं बोलना चाहिए। परमात्मा उसका वाक्थाल स्वीकार नहीं करता। ये सभी शर्ते हैं। हम सब इसको कितना निभा सकते हैं ये तो गुरुकृपा हो और आपका आशीर्वाद होगा तो होगा। बाकी ये सब है तो सही। 'मानस' में लिखा है, 'श्रोता वक्ता ग्याननिधि कथा राम के गूढ।'

बाप! मैं और आप प्रसन्न मन से कथा के दौरान तर्क को एक तरफ़ करके ऐसी अव्यभिचारिणी बुद्धि से कथा सुनें; अपने ही कारण चैतसिक विक्षेप खड़ा न हो इस तरह से कथा सुनें; और अहंकार को दूर कर दे तब कथा कथा नहीं रहती; एक प्रेमयज्ञ बन जाती है। ऐसी रामकथा हम सबको नरसिंह मेहता के निमित्त प्राप्त हुई है। अब थोड़ा कथा का क्रम लेता हूं।

भगवान राम का जन्म हुआ। फिर कैकेयी और सुमित्रा ने भी पुत्रों को जन्म दिया। बहुत बड़ा उत्सव अयोध्या में मनाया गया। 'मानस'कार ने लिखा कि फिर एक महीना तक सूर्यास्त ही नहीं हुआ। एक महीना का दिन हो ऐसा होगा नहीं, परन्तु रामनवमी को राम के जन्म के बाद रात नहीं हुई इसका अर्थ जीवन में अमुक आनंद प्रगट होते है तब काल की गणना रुक जाती है। मनुष्य कालातीत हो जाता है। यह एक आध्यात्मिक सत्य है।

चारों भाईओं का नामकरण संस्कार हुआ। वशिष्ठजी पधारें। वशिष्ठजी नामकरण करते हैं। कौशल्या की गोद में जो निरंतर आनंदवर्धक तत्त्व खेल रहा है उसे देखकर वशिष्ठजी ने कहा, राजन्! ये बालक आनंदसिंधु है, सुख की राशि है; जो त्रैलोकवासी है, जो श्यामवर्ण है; सबको आराम, विराम और विश्राम दे ऐसा उसका जीवन है, इसलिए मैं इसका नाम 'राम' रखता हूं। राम तो आदि-अनादि नाम है, पर दशरथ के पुत्ररूप में राम नाम रखा गया। अनंत युगों से राम है। जब कुछ नहीं था तब भी राम नाम था। जगत का आदि, मध्य और अंत राम है। सब कुछ होता रहता है पर राम अखंड रहता है। जयेष्ठ पुत्र का नाम राम रखा है। फिर गुरु कहते हैं, हे राजन्, कैकेयी महारानी की गोद में खेलता हुआ ये बालक, जिसका वर्ण, चेहरा और शील राम जैसा है; ये बालक पूरे जगत में किसी का

शोषण नहीं करेगा, सबका पोषण करेगा, भर देगा सबको; इस बालक का नाम मैं भरत रखता हूं।

सुमित्रा के दो पुत्र, उसमें लक्ष्मण बड़े हैं, शत्रुघ्न छोटे पर क्रम में इस तरह दिखे इसलिए शत्रुघ्न का नाम पहले रखा। राजन्, जिसका नाम लेने से शत्रु नहीं, परन्तु शत्रुता का नाश होगा; दुश्मन ही नहीं, पर दुश्मनी का नाश होगा; वैरी नहीं, पर वैर का समापन होगा ऐसे बालक का नाम मैं शत्रुघ्न रखता हूं। शत्रु नाम तभी पायेंगे जब शत्रुता नाश पायेगी। वैर से वैर नहीं रुकेगा, ऐसा तथागत ने कहा है। वृत्ति के रूप में शत्रुता मिटनी ही चाहिए; भूमिका नष्ट होनी चाहिए। तमाम लक्षणों के धाम, तमाम दैवी संपदा जिसमें आ गई हैं 'भगवद्गीता' की, राम के प्रिय और पूरे जगत के आधार है उस बालक का नाम लक्ष्मण रखा है। लक्ष्मण को उदार, रामप्रिय, सकल जगत के आधार और लक्षण संपन्न कहा। जागृत मनुष्य हमेशां उदार होता है; बेहोश मनुष्य ही कृपण होता है। जगा वो कभी कृपण नहीं होगा; उसके विचार कृपण नहीं होंगे। नरसैया जगा हुआ है-

जागीने जोऊं तो जगत दीसे नहीं,
ऊंघमां अटपटा भोग भासे।

नरसिंह कहते हैं कि नींद में सब अटपटा भासित होता है, पर जैसे ही जगा तो उदार। 'परम उदार श्री वल्लभनंदन।' पुष्टि मार्ग में वैष्णव गाते रहते हैं। लक्ष्मण रामानुज है। रामानुजाचार्य लक्ष्मण है।

युवान भाईओं-बहनों, आपको यदि 'राम-राम' रटने की रुचि जगी हो अथवा तो कोई भी नाम जिसमें आपकी रुचि है वो कोई भी मंत्र तभी सफल होगा जब राम जपते-जपते भरत के चरित्र को याद करेंगे। भरत अर्थात् किसी का शोषण नहीं करना; सबका पोषण करना। राममंत्र का जप करता है वो रामनाम से किसी का शोषण नहीं करता, जगत का पोषण करता है। दूसरा, प्रभु का नाम जपनेवालों को किसी से दुश्मनी नहीं रखनी चाहिए; शत्रुघ्नभाव रखना चाहिए। सामनेवाला दुश्मनी रखें तो ये उसकी बात है। दुश्मनी रखकर हरिनाम नहीं जपा जाएगा। तीसरा, लक्ष्मण तो शेषनाग के रूप में समस्त धरती को धारण करते हैं। हम हरिनाम जपते-जपते जितने को सहयोग दे सके तो रामनाम सफल।

हम पूरे गिरनार के जंगल की सिंचाई नहीं कर सकते; वो तो बरसात ही कर सकता है, परन्तु अपने घर में जितने पौधे हो उन्हें तो पानी पिला सकते हैं। हम शाला-कोलेज या युनिवर्सिटी नहीं बना सकते परन्तु तेजस्वी गरीब बालक की फी तो भर ही सकते हैं। कल मुझे एक युवक कह रह था कि मेरा जन्मदिन था; मुझे इतने वर्ष हुए; मेरी इच्छा है, मुझे इतने लड़कों को पढ़ाना है। युवान ऐसे संकल्प लेकर मेरे आनंद को बढ़ाते हैं। जगत में संतों ने जो गायों की सेवा करने का, भूखे को रोटी देना का काम किया है; अनाथ को आश्रय देने का काम किया है; ऐसा काम किसने किया है? इसलिए मैं कहता हूं कि मेरे साधुओं ने जो अन्नक्षेत्र खोला है वो अन्नक्षेत्र नहीं, ब्रह्मक्षेत्र है, 'अन्नं ब्रह्मेति व्यजानात्।' अन्न ब्रह्म है।

हम बड़ा अन्नक्षेत्र न खोल सकें पर वहां एक बोरी गेहूं तो दे सकते हैं; जब समय मिले तब वहां परोसने तो जा ही सकते हैं। हम होस्पिटल न बना सकें; जो बनाते हैं वो नमन करने जैसे महान मनुष्य है। हम किसी बिमार की

अपनी कक्षानुसार दवा दिलाएं वो भी सहयोग है। परमतत्त्व को आप जपते हो तो ये तीन वस्तु आपको याद रखनी ही चाहिए। एक, किसी का शोषण नहीं करूंगा; हो सके उतने का पोषण करूंगा। दूसरा, मेरे साथ चाहे जितना विरोध करे, मैं किसी का विरोध नहीं करूंगा। और तीसरा, अपनी क्षमता के अनुसार मैं सबको सहायता दूंगा। रामनाम जपने के ऐसे सविनय नियम है तलगाजरडा की दृष्टि से।

चारों भाईओं का नामकरण हुआ। वशिष्ठजी ने कहा, राजन्! ये आपके पुत्र नहीं है, वेद के सूत्र है; इस संपूर्ण जगत के मित्र है। विश्व का मित्र विश्वामित्र आयें तब राम को अपने आंगन में बांध न रखना। विश्वामित्र के साथ उन्हें वैश्विक बनाने के लिए छोड़ देना। एक के बाद एक संस्कार हुए। प्रभु को यज्ञोपवित संस्कार दिया गया। फिर गुरुगृह पढ़ने के लिए गए। राम भी पढ़ने गए हैं। सभी पढ़ना। आज शिक्षण बढ़ा है इसका मुझे आनंद है। अपने बालकों को पढ़ायें।

राम ने अल्पकाल में विद्या प्राप्त की। जिसके श्वास में चारों वेद हो उसे क्या पढ़ना? पर जगत को गुरुपरंपरा का बोध दिया है कि गुरु के चरण में बैठकर 'समित्पाणिः श्रोत्रियं ब्रह्मनिष्ठापहे।' गुरु का सिखाया, 'मातृदेवो भव', 'पितृदेवो भव', 'अतिथिदेवो भव।' इसे राम पढ़कर घर आएं तब चरितार्थ किया। भगवान उठकर माता और पिता के चरण स्पर्श करते; गुरु का चरण स्पर्श करते है। अब 'अतिथिदेवो भव' शेष था तभी वहां विश्वामित्र अतिथि बनकर आये हैं। लड़कों, स्कूल-कोलेज जाना, होस्टेल जाना, खेत में जाना पर हो सके तो इतना करना कि सुबह उठकर माँ-बाप के चरण स्पर्श करना; उनके नाभि से आशीर्वाद निकलेगा।

स्मृतिकार कहते हैं, अपने जयेष्ठों को वंदन करने से चार वस्तु बढ़ती है, 'आयुर्विद्यायशोबलम्।' आयुष्य, विद्या, बल और कीर्ति बढ़ती है। रात को सोने जाओ उससे पहले माँ-बाप को वंदन करके सोना। इतना करने में क्या बिगड़ जाता है? आपका मोरारि बापू इतना मांगता है आपसे। माँ का चरण स्पर्श करें और माँ आशीर्वाद देती है तब आपके विघ्नों को मार्ग से दूर करती है। वृद्धाश्रम समाज की ज़रूरत होंगे, पर समाज की शोभा तो है ही नहीं। मैंने बहुत-से उद्घाटन किये हैं वृद्धाश्रमों के। वैसे तो वृद्ध हो जाएं तब ही उद्घाटन करना चाहिए। हम खून दे ही नहीं और ब्लड बेंक का उद्घाटन कैसे कर सकते है? मुझे कोई ब्लड बेंक के उद्घाटन में ले जाएं तो मैं कहूंगा, पहले मेरा खून लो। किसी की ज़िंदगी बचे तो ऐसा भी करते रहना। वृद्धाश्रम ये थोड़ी पाश्चात्य असर है। जीवित देवों को पूजो। जिसमें प्रभु ने प्राण प्रतिष्ठा की है उसको पूजो। माता-पिता को पूजो और अपने गुरु, आचार्य, शिक्षक जिसे मानते हो उसका स्मरण कीजिए। राम ने कर दिखाया। समवयस्कों के साथ कुमार अवस्था में क्रीड़ा करते हैं; सरजू के किनारे खेल रहे हैं; असुर छद्मवेश में पशु का रूप लेकर प्रजा को परेशान करते थे उन्हें निर्वाण देने के लिए प्रभु ने मृगया की क्रीडा की। किसी की हिंसा करने के लिए नहीं परन्तु आसुरी वृत्ति का नाश करने के लिए। 'मानस' में लिखा है, जो मृग राम के बाण से मरते थे वो सीधे प्रभु के धाम में जा रहे थे। ये निर्वाण क्रीडा थी।

विश्वामित्र महामुनि और ज्ञानी सिद्धाश्रम में बकसर में रहते हैं; जप, यज्ञ, योग साधते हैं; मारीच और सुबाहु नामके आसुरी तत्त्व उन्हें परेशान करते हैं; अनुष्ठान पूरा नहीं होने देते। विश्वामित्र एक दिन विचारमग्न हुए कि शाप देकर राक्षसों को मैं जला सकता हूं पर अनुष्ठान में क्रोध करूंगा तो अनुष्ठान का फल नहीं मिलेगा। उन्होंने विचार किया राक्षसों को मार तो सकता हूं परन्तु तार नहीं सकता। अब दुनिया को ऐसी ज़रूरत है कि जो मारे भी और उद्धार भी करें; ऐसे व्यक्ति की ज़रूरत है जो निर्वाण प्रदान करे नवनिर्माण के लिए। विश्वामित्र को लगता है, अयोध्या जाऊं और दशरथ के घर है वो ब्रह्म हो तो उसकी मांग करूं। विश्वामित्र पदयात्रा करके अयोध्या आये हैं। सरयू में स्नान करके नगर में गये। राजा के दरबार में आये हैं। विश्वामित्र का स्वागत-पूजन हुआ और भोजन कराया है। तभी राम-लक्ष्मण को सूचना मिलते ही दौड़कर आते हैं। दोनों भाईयों ने प्रणाम किया। राम को देखकर विश्वामित्र स्तंभित हो गये! ये तो मुझको ध्यान में दिखा वही तत्त्व है! ये तो ब्रह्म है!

विश्वामित्र कहते हैं, राजन्, असुरों का समूह हमें सताता है इसलिए याचना करने आया हूं। अब वो ब्राह्मण है इसलिए याचना कर सकते हैं, नहीं तो ये याचना करे ऐसे महापुरुष नहीं है। जो एक नये स्वर्गनिर्माण करने का मनोरथ कर रहा हो वो मनुष्य राजदरबार में जाकर भीख मागेगा ऐसा साधु नहीं है। साधु को अपना गौरव है। विश्वामित्र कहते हैं, लक्ष्मण सहित मुझे राम दे दीजिए। राक्षसों का विनाश होगा और मैं सनाथ होऊंगा। महामुनि एवं ज्ञानी है फिर भी अपने आपको अनाथ महसूस कर रहे हैं। रघुनाथ नहीं मिलते तब तक सभी अनाथ है।

ममता थोड़ी मुखर हुई है कि मैं राम नहीं दे सकता। वशिष्ठजी ने मध्यस्थता की कि राजन्, विश्वामित्र को राम सौंप दीजिए। अपने आंगन में इस परम स्वतंत्र तत्त्व को कब तक बांध रखोगे? उसे समस्त जगत का बनने दीजिए। गुरुदेव ने कहा है और दोनों भाईयों को सौंप दिया।

दोनों भाई माता का आशीर्वाद लेने गए। और विश्वामित्र के साथ यात्रा का आरंभ हुआ है। आगे जाने पर ताड़का नामकी राक्षसी आई। एक ही बाण से उसको निर्वाण दिया। अब विश्वामित्र को पक्का भरोसा हो गया कि ये ब्रह्म है।

दूसरे दिन सुबह यज्ञ आरंभ नहीं करते हैं विश्वामित्र। जिसके लिए राम को लाये वो ही वस्तु भूल गए! राम ने कहा, यज्ञ कीजिए, हम दोनों भाई खड़े हैं। विश्वामित्र कहते है, जिस यज्ञ के बाद आपको प्राप्त करना था वो आप मिल गए हैं। साधन छूट गया; साध्य मिल गया। राम कहते हैं, सभी साधन साध्य मिलने पर छोड़ देना चाहिए परन्तु यज्ञ, दान और तप ये नहीं छोड़ना चाहिए। 'भगवद्गीता' भी यही कहती है कि यज्ञ, दान और तप साधकों को नहीं छोड़ना चाहिए। क्योंकि बुद्धिमानों की बुद्धि को क्रमशः पवित्र करते हैं। यज्ञ का आरंभ हुआ। मारीच को फणरहित बाण मारकर प्रभु ने समुद्र तट पर लंका में फ़ेंक दिया है। सुबाहु को अग्नि का बाण मारकर भस्म कर दिया है। यज्ञ पूरा हुआ। विश्वामित्र धन्य हुए। विश्वामित्र का यज्ञ राम और लक्ष्मण द्वारा पूरा हुआ।

थोड़े दिन प्रभु रुके। फिर विश्वामित्र ने कहा, जिस काम के लिए आपको लाया था वो काम तो संपन्न हो गया पर अभी दो यज्ञ अधूरे हैं। रास्ते में अहल्या के प्रतीक्षा का यज्ञ बाकी है और जनकपुर में धनुषयज्ञ बाकी है। विश्वामित्र के साथ जनकपुर जाने के लिए प्रभु निकलते हैं। रास्ते में एक आश्रम आया। खग, मृग, जीव, जंतु कोई नहीं! बिलकुल सन्नाटा और पत्थर देह में कोई पड़ा हुआ है! प्रभु कहते हैं कि ये किसका आश्रम है? कोई दिखता नहीं। दुर्वा, अंकुर, पशु, पक्षी, मनुष्य भी नहीं है! ये पत्थर-देह कौन है? विश्वामित्रजी राम को लेकर निकले तब से राम के पक्ष में है; राम से स्वयं सनाथ हुए हैं पर अहल्या को देखकर राम के पक्ष में से अहल्या के पक्ष में जाते हैं। मेरे समाज को इसकी ज़रूरत है। जो पतित हो, तिरस्कृत हो; उस समय थोड़ा रामभजन छूट जाता हो तो कोई बाधा नहीं, अनाथ और पतितों के पास जाना चाहिए।

'राघव, ये गौतमनारी है। पत्थर की भांति प्रतीक्षा में बैठी है।' साधु किस तरह पक्ष लेता है! 'ये पापवश नहीं, शापवश है। ऋषि ने शाप दिया है। ये आपकी चरणरज चाहती है। चरण तो उसे गौतम का मिला है पर वो चरण थोड़ी ऐसी बात सुनकर उसे छोड़कर चले गए हैं। आपका चरण नहीं चाहिए, चरणरज चाहिए। रज अर्थात् चरणरज भी और रज अर्थात् छोटी से छोटी कृपा। थोड़ी कृपा दृष्टि कीजिए, इसका उद्धार हो जाएगा। इसके कर्म का हिसाब करेंगे तो नहीं होगा, करुणा करेंगे तो तत्क्षण घटना होगी।' तुलसीदास साधु है इसलिए प्रसन्न होकर छंद लिखते हैं। अपनों का तो सभी उद्धार करते हैं परन्तु प्रभु जो उपेक्षित हुए है उसका उद्धार करते हैं।

परसत पद पावन सोक नसावन प्रगट भई तपपुंज सही।
देखत रघुनायक जन सुखदायक सनमुख होइ कर जोरि रही।।
अतिप्रेम अधीरा पुलक सरीरा मुख नहिं आवइ बचन कही।
अतिसय बड़भागी चरनन्हि लागी जुगल नयन जलधार बही।।

विश्वामित्र के किए गए कार्यों से युवानों सीखना कि जिसको कोई न बुलाता हो उसको बुलाना। आपको ऐसा लगेगा कि ये पतित में पतित है पर वो पश्चात्ताप करके, पश्चात्ताप की गंगा में न्हा-धोकर बैठा है तो दुनिया की टीका की ऐसी-तैसी करके उसके बगल में फ़ोटो पडवाना। ये हिंमत है तो साधना करना।

प्रभु ने अहल्या का उद्धार किया है। इक्कीसवीं सदी में अहल्या का प्रकरण अधिकतर से अधिक सिद्ध करना चाहिए, क्योंकि बहुत ही क्रांतिकारी कदम था राघव का। मर्यादा पुरुषोत्तम राम। मर्यादा जड़ नहीं होनी चाहिए, गंगा की तरह प्रवाही होनी चाहिए। मर्यादा जड़ होगी तो जेल है। भगवान राम ने चरण रखा और रज उड़ी। अहल्या ने दोनों पैर पकड़ लिए और सिर रखा और आंखरूपी हिमालय में से गंगा निकली है।

अहल्या का उद्धार करके भगवान राम गंगास्नान करते हैं। गंगा-अवतरण की कथा विश्वामित्र द्वारा सुनी और भगवान जनकपुर पहुंचे हैं। महाराज जनक के स्वागत किया और जनकपुर में 'सुंदर-सदन' में ठहराया। मुनिगणों के साथ राघव 'सुंदर-सदन' में ठहरे हैं। मुनियों के साथ भोजन किया और विश्राम किया। मैं भी आपसे कहता हूं कि आप भोजन कीजिए और भाग्य में है तो विश्राम कीजिए!

'रामचरितमानस' में तुलसी ने नल-नील को नागर कहा है। इसमें कोई जाति भेद है? बंदरों को नागर कहा है। नल-नील को 'मानस' में नागर कहा है; जन्म के कारण नहीं पर सेतु बांधा इसलिए। समाज में जो सेतु बांधता है वो नागर है। बंदर हो तो भी क्या और कोई सुन्दर तत्त्व हो तो भी क्या? सबको जोड़ता है, समन्वित करता है वो नागर है। राम की कृपा के कारण इस नल-नील का यश जगत में उजागर हुआ, क्योंकि वो नागर है। राम-लक्ष्मण इसलिए नागर है कि उन्होंने सेतु बांधा है। राम स्वयं सेतु निर्माण करते हैं इसलिए नागरत्व पाये हैं।

नरसिंह मेहता ने गृहत्याग, ग्रहत्याग और गिरित्याग किया है

बाप! 'मानस-नागर' के आज के विराम दिवस पर इस परम पावनी तीर्थ पर जहां अभी भी अनेक चेतनाएं साधक को स्पर्श कर रही हैं ऐसी साधकों और सिद्धों की भूमि पर जिसके केन्द्र में नागर नरसिंह मेहता है, ऐसी इस पावन धरा पर प्रतिदिन कथा में उपस्थित सभी पूजनीय चरण, विध-विध विद्या के उपासकों, विध-विध क्षेत्र के आदरणीय महानुभावों, आप सभी मेरे श्रावक भाईओं-बहनों और 'सकल लोकमां सहुने वंदे' इस न्याय से व्यासपीठ पर से, अपनी इस नागरीपीठ से आप सभी को मेरा प्रणाम।

अंत में समय मिलेगा या नहीं पर समग्र अनुष्ठान के आयोजन के लिए अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। ये अनुष्ठानी आयोजन रहा और शीलवंत संचालन के तहत रहा। 'कुळ एकोतेर तार्यां' ये दर्शन स्थान हो; हजारों लोगों ने प्रसाद ग्रहण किया वो ब्रह्मक्षेत्र हो; शुरूआत में रोज़ एक संगीत आराधक मेहताजी का एक पद लेकर सूरज उघाड़ रहे हो उसका आनंद; उसके बाद नई-नई चेतनाएं अपने विचार प्रस्तुत करती हो, थोड़े समय में बहुत सारा प्रदान करते हैं ऐसे वक्तव्यों का आनंद; सरकारी तंत्र और अन्य प्रकार से इस यज्ञ में सम्मिलित आहुत द्रव्यों को नमन; छोटे से छोटे स्वयंसेवक से लेकर परमात्मा ने उनके पूर्वजों के भाग्य से निमित्तमात्र यजमानपद का गौरव दिया है वो चान्द्रा परिवार, उनका भाव; प्रशासन, जिन्होंने इसमें आहुति दी हो; नौ दिन की परिक्रमा करके कह रहा हूं; 'रामचरितमानस' के दो शब्दों का प्रयोग करके कह रहा हूं; जब जनक राजा ने विश्वामित्र को सीता का स्वयंवर रचाना है उस धनुषयज्ञ की भूमि बताई, उस समय विश्वामित्र बोलते हैं, 'हे राजर्षि जनक, भली रचना।' आपकी रचना भली है। मैं भी जूनागढ़ को कहके जाऊंगा कि सम्पूर्ण अनुष्ठानी आयोजन, 'भली रचना।'

इसमें सबने आशीर्वाद दिया है; परोक्ष-अपरोक्ष, दूर-नज़दीक सब जगह से, चारों तरफ़ से आशीर्वाद बरसा है, ऐसे अनुष्ठानी आयोजन के विराम के दिन कथा का आरंभ कर रहा हूं तब, युवा आदमी पार्थ, जिन्होंने समस्त जूनागढ़ की जवानी की तरफ़ से अपने माता-पिता के तरफ़ का अपना आदरभाव व्यक्त करके युवानों को प्रेरित किया कि माँ-बाप के प्रति ये भाव रखना; उन्होंने व्यासपीठ कि ओर भी युवानी का उमंगपूर्ण भाव व्यक्त किया है; मैं भी उसको कहूंगा, 'हवे पार्थने कहो चडावे बाण।' भिन्न-भिन्न क्षेत्र में तुम्हारी गति रहे। प्रसन्न हुआ बाप! बहन ध्वनि ने अपनी शास्त्रीय साधना के शृंगार से मेहता के पद का शृंगार सजाकर गान किया। बाप! इस गान को नमन। बहन राधा, छोटी-सी बिटिया; कितनी समृद्धि है लोगों में! कितनी बड़ी संभावना दिखती है! ये विश्व की इक्कीसवीं सदी के शकुन है। बहुत प्रसन्न होता हूं। भद्रायुभाई, हेमंतभाई, छाया साहब और समग्र टीम ने अनुष्ठानी आयोजन किया है। मैं बहुत प्रसन्नता व्यक्त करता हूं।

जब जा रहा हूं तब लीली परिक्रमा का प्रारंभ हो रहा है। सभी यात्रियों से मेरी प्रार्थना है कि वनविभाग, व्यवस्था विभाग, तंत्र को बाधा न आये और पर्यावरण में तकलीफ़ पैदा न हो इसके लिए हे यात्रालुओं, जंगल में कचरा मत फ़ेंकना; प्लास्टिक की थैलियां, पड़ीका मत फ़ेंकना। जिस रात आप पड़ाव डाले वहां से निकलें तब वनविभाग ने जहां-जहां कचरा पेटी रखी है वहां एकत्रित किया हुआ कचरा डाल देना अथवा सावधानीपूर्वक उस कचरे को जला देना जिससे वन्य प्राणियों को प्लास्टिक से नुकसान न हो। हम लोग यात्राओं को बहुत दूषित कर डालते हैं! इस यात्रा में नागरत्व आना चाहिए। ऐसी स्वच्छता, ऐसी सफ़ाई जो नागर में होती है। इस नागरीभाव से यात्रा कीजिएगा, ऐसी साधु की प्रार्थना है।

मैं दस-ग्यारह वर्ष का था तब से जूनागढ़ आता हूं। कहां पहले के रास्ते और कहां अभी के सुन्दर रास्ते तलहटी तक! इन सबकी सुन्दरता बढ़ाना, मेहता बहुत प्रसन्न होगा। गीध की बस्ती कम होती जा रही है गिरनार में। यह एक चिंता का विषय है। जिस 'रामायण' ने गीधराज जटायु दिया; संपाति नाम के राजभक्त का मार्गदर्शन दिया; ऐसे गीध की बस्ती भी कम न हो; गीधों का रक्षण हो ये ज़रूरी है। लीली परिक्रमा आनंद से कीजिए। मेरा मनोरथ था इसलिए हम पोथी लेकर यात्रा कर आयें और सब कुछ बहुत अच्छा लगता था, पर इतनी भीड़ होती है जब सौ-डेढ़ सौ अन्नक्षेत्र खुलते हैं; चाय की पंगत, पानी का प्याऊ और लोग क्या-क्या नहीं करते है! पर इसके साथ गंदगी न हो इसका खूब ध्यान रखिऐगा। रामकथा के बाद की परिक्रमा कोई उदाहरण पेश करे ऐसी होनी चाहिए।

मेरे मन में ऐसा है कि जूनागढ़ में ये पांच वस्तु नरसिंह के नाम से होनी चाहिए। प्रशासन मुझे सुने; नागर समाज मुझे सुने। इसमें से बहुत कुछ है उसकी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। पर न हो अथवा अन्य नाम से हो तो नरसिंह के नाम से पांच वस्तु होनी चाहिए जो फिर सौ-डेढ़ सौ वर्ष बाद वो इसी तरह से बढ़ती रहे। फिर कोई मेहता की चेतना लेकर आये और हमें मार्गदर्शन दे।

एक, जूनागढ़ में नरसिंह मेहता के नाम की पाठशाला होनी चाहिए। मैं मानता हूं लगभग होगी ही; पर छोटी-बड़ी पाठशाला होनी ही चाहिए, जिसमें संस्कृत केन्द्र में हो। ये नागरी नगर है बाप! गांव से आया हुआ एक घण्टा खरीदारी करने आता है वो नागर बन जाता है। तो नरसिंह मेहता के नाम से 'नरसिंह पाठशाला' होनी चाहिए; न हो तो 'नरसिंह मेहता युनिवर्सिटी' स्थापित हुई है वो एक पाठशाला ही है; इससे मैं संतोष लूंगा परन्तु इसमें कोई विभाग खोला जा सकता हो उसी युनिवर्सिटी के तहत विभाग खोलें जो नरसिंह मेहता के नाम से हो और उसमें युवक संस्कृत पढ़ते हो।

दूसरा, जूनागढ़ में नरसिंह मेहता के नाम से गौशाला होनी चाहिए। होगी भी शायद। मेरे सभी साधु-संत गायों की सेवा करते हैं; संस्थाएं भी गायों की सेवा करती होगी पर नरसिंह मेहता के नाम से एक गौशाला होनी चाहिए। इसमें भी मैं आनंद और संतोष मानता हूं कि यहां कृषि युनिवर्सिटी है। पाठक साहब बैठे हैं। वो निवास देते हैं इसलिए जब आता हूं तब दो-पांच दिन रहता हूं, वो कृषि युनिवर्सिटी की जगह है। वहां गौशाला है, उस विभाग को नरसिंह का नाम दीजिए। साहब ने हां कह दिया। धन्यवाद बाप!

तीसरा, जूनागढ़ में एक 'नरसिंह मेहता व्यायामशाला' होनी चाहिए। युवान सुदृढ़ बने, तन-मन से तंदुरस्त रहे। हमने तो अब नरसिंह को भी जवान कर दिया है। व्यायामशाला भी होगी, अवश्य। इसका भी आनंद और हर्ष व्यक्त करता हूं कि बिलखा जाने के रास्ते पर जाएं तो वहां पुलिस का बड़ा ग्राउन्ड है उसमें प्रशिक्षण दिया जाता है, दाव सिखाया जाता है; उसमें एकाद विभाग बनाएं कि नगर के युवकों को व्यायाम करने की कोई व्यवस्था हो। तो नरसिंह मेहता व्यायामशाला होनी चाहिए।

चौथा, जूनागढ़ में नरसिंह मेहता के नाम से भोजनशाला होनी चाहिए। यहां अन्नक्षेत्र चलते ही है। यहां आता है वो भूखा रहता ही नहीं। जहां जाओ वहां रोटी मिलती है। मेहता के नाम से भी होगी। न हो तो मेहता के नाम से भोजनशाला होनी चाहिए।

पांच, इस नगर में बहुत-सी धर्मशाला है; एक तो रेल्वे स्टेशन के आसपास है। छोटा था तब उसमें सोने जाता था। जगह न मिले तो त्रिकमदास बापू का 'भगवद्गुरु आश्रम' था वहां छत पर गद्दा डालकर सो जाता था। तो नरसिंह मेहता के नाम की धर्मशाला होनी चाहिए, जिसमें सीधी-सादी व्यवस्था हो। स्वच्छ बेड, स्वच्छ रूम, स्नानागार, एक पंखा। अतिथि आये उससे इतना ही मूल्य लेना चाहिए कि सफ़ाई रखना और स्वच्छ रखकर विदाय लेना। तो मेहता के नाम से ऐसी एक धर्मशाला होनी चाहिए। हो सके तो धर्मशाला और भोजनशाला दामाकुंड के आसपास हो; उसके स्वच्छ नीर में मनुष्य नहाये। चाहे कहीं से भी आया हो और धर्मशाला में रुके एवं वहां नरसिंह मेहता भोजनशाला में सात्त्विक भोजन करे।

ऐसी पांच शाला का विचार व्यक्त करता हूं। अपनी व्यासपीठ की मर्यादा में, मैं कर सकता हूं उतने में व्यासपीठ आपके साथ होगी। जब शुरू हो, जैसे भी शुरू हो; हो तो डबल करने की ज़रूरत नहीं है। हमें स्पर्धा नहीं करनी है। मैं इतना तो अवश्य कहूंगा कि विनय करके जा रहा हूं तब इन पांचों शालाओं के लिए तलगाजरडा के हनुमानजी की प्रसादी स्वरूप एक-एक लाख रुपया तुलसीपत्र के रूप में तलगाजरडा देगा। एक-एक लाख गौशाला, पाठशाला, व्यायामशाला, भोजनशाला और धर्मशाला को। ऐसा न होगा तो भी चिंता नहीं। ऐसा मत मानना कि मैं जूनागढ़ नहीं आऊंगा। क्योंकि मैं छोड़कर जा रहा हूं, जूनागढ़ मुझे नहीं छोड़ता।

अब, न करने का भी कह देता हूं। कल एक युवक ने चिठ्ठी लिखी कि बापू, कल आप जो कह रहे थे, ऐसा क्यों बोलते हैं? उसे दुःख हुआ है। मैं समझता हूं कि उसे पीड़ा होगी, मेरा निवेदन थोड़ा ऐसा था। ऐसा क्यों कहा कि मेरे बाद कोई मूर्ति मत रखना। किसी को भी कुछ नहीं बनाना है; रास्ते का नाम नहीं; चौक का नाम नहीं। मुझे कह देना चाहिए न! मुझे अभी बहुत जीना है; अभी

तो बहत्तर ही हुए हैं। मरने का तो सवाल ही नहीं पर मैं यहां थोड़ा कहके रखता हूं। रात को मुझे थोड़ा याद आया किया होगा, उसको गिरनार के बिना अच्छा नहीं लगता होगा। इतना ही दूर पर दूरी तो है ही न! फिर अवस्था भी हो गई है। महापुरुषों की गति तो देखिए! तब ऐसे कुछ पद लिखे होंगे! अभी भी एक बार कह देता हूं कि यह अंतिम पदों में से एक पद है ये निश्चित नहीं है। इसे आप निश्चित करना। लाल गुलाब में लाल रंग कहां से आया? उसकी खुश्बू में कौन-सा केमिकल्स है? वो कितने बजे खीला? इसमें पड़ेंगे तो खुश्बू बिना के रह जाएंगे! हमको तो खुश्बू का आनंद लेना चाहिए। फूल अपनी जगह महान है। इसलिए मेहता की सुगंध उठा लें। पाकिस्तानी शायराना परवीन शाकीर कहती हैं-

तेरी खुश्बू का पता करती है।
मुझ पे एहसान हवा करती है।
मुझको इस राह पे चलना ही नहीं,
जो मुझे तुझसे जुदा करती है।

पहला पद हो तो भी मुझे एतराज नहीं। विवाद तो युवानों को करना ही नहीं चाहिए। विवाद में जितनी शक्ति कम होती है वो आपके व्यापार में भी कमी लाएगी; अध्यात्म में भी कमी लाएगी; आपको वो विघ्न पहुंचाएगी। जबरदस्ती आपको कोई विवाद में घीसेटे तो पैर पकड़कर दूर खड़े रह जाओ। बहुतों को तो विवाद ही करना होता है!

ताहरा दासनी नित्य संगत बिना
भ्रष्ट थाय भूधरा! मंन मारुं।

चाहे कितनी भी उम्र हो जाएं और साधना चाहे कितनी परिपक्व हो जाएं पर मन बहुत धोखा दे जाएगा इसका ध्यान रखना। मेहता भी कहते हैं, तुम्हारे दास की संगत नहीं रहती है तब मेरा मन भ्रष्ट हो जाता है। साधुसंग की महिमा इसलिए ही है कि साधुसंग में मन बहुत सभ्य रहता है पर जैसे ही अलग पड़ते हैं और मन भ्रष्ट होने में देर नहीं लगती। ये मेरा और आपका सबका अनुभव है।

दुष्टनी संगते दुष्ट मति ऊपजे,
श्रवण-कीर्तन नव थाय तारुं।

मेरी विचारधारा में दास का दास पैदा हो इसकी इच्छा है; कोई नागरत्व पाये; कोई नागरी विचार लेकर आएं।

पूर्ण विषपान- पे दुरिजन दोहेलां,
विषपान कीधे तन-तेज हणशे।

दुर्जनों का संग भयंकर है। 'मानस' में लिखा है-

बरु भल बास नरक कर ताता।
दुष्ट संग जनि देइ बिधाता।।

'मानस'कार कहता है कि हे प्रभु, नरक में निवास अच्छा है परन्तु मुझको दुष्ट का संग मत दे। उससे हमारी बुद्धि हर ली जाती है। तो जिसने ज़हर पिया होगा उसका शरीर मरेगा पर जिसने दुर्जन का संग किया होगा उसका क्या होगा यह नहीं मालूम! कितना अलग पड़ गया है नरसिंह! तेरे विरोध में जो है उनका संग करूंगा तो पूर्वजों के पुण्यों का नाश

होगा इसलिए मैं थोड़ा दूर रहना चाहता हूं।

अमृतनी उपमा साधुने नव घटे,
राहुनी दुष्टता न गई रे तेणे।

साधु को अमृत नहीं कहा जाता। वो इससे अधिक है। कोई कहेगा मेहता को कि अंतिम अवस्था में बुद्धि बिगड़ गई है क्या? अमृत की उपमा साधु के लिए योग्य नहीं है, ऐसा क्यों लिखते हो? उसका कारण अद्‌भुत देता है, अमृत अमृत था तो राहु बुद्धि को निवार सका? अभी भी घूमता है राहु। प्रहलाद ने साधु की संगत गर्भ में की, जब हिरण्यकशिपु कारण बिना लड़ता रहता है! और वो बाहर जाता है इसलिए 'श्रीमन् नारायण' कहते हुए नारद आते हैं और कयाधू के पेट में परम वैष्णवी तेज आ गया।

प्रहलादे नारदनी गर्भ-संगत करी,
वश कीधा वैकुंठनाथ जेणे,
चतुर्धा मुक्तिनी जूजवी जुक्ति छे,
तेणे करी ताहरा ते न राचे।
बेउ कर जोडीने नरसैयों वीनवे,
जनमोजनम तारी भक्ति जाचे।

मुझे लगता है कि यह अंतिम पदों का ही पद होगा शायद। मेरी आत्मा मुझे गाने के लिए प्रेरित कर रही थी। अलग ऐसे होना कि परिवार को भी पता न चलने देना। धीरे-धीरे सांप जैसे केंचुल उतार देता है वैसे निकल जाना। कृष्ण ने मुझे और आपको बड़े से बड़ा संन्यास बताया है कि दूसरे तो चौथी अवस्था में संन्यासी-साधु होते हैं पर अर्जुन, तुझे नित्य संन्यासी होना हो तो दो काम करना चाहिए।

ज्ञेयः स नित्यसंन्यासी यो न द्वेष्टि न काङ्क्षति।

जो किसीसे द्वेष नहीं करता और किसीसे अपेक्षा नहीं रखता उसको कायम का संन्यासी समझना चाहिए। बालकों, आपको संन्यासी नहीं होना है, पर ऐसा संन्यासी होना है कि मैं किसी से द्वेष नहीं करूंगा और किसी से याचना नहीं करूंगा; अपने पुरुषार्थ से मैं लडूंगा; खूब कमाऊंगा और उसमें से दसवां हिस्सा जिस जगत में जी रहा हूं उस जगत के वृक्षों, नदियों, पहाड़ों के लिए, पशु-पक्षियों के लिए, अनाथ बालकों के लिए, तिरस्कृत महिलाओं के लिए, वंचितों के लिए, किसी की फीस भरने के लिए, किसी को दवा देने के लिए दूंगा। यही मेरा संन्यास है। हम कहां संन्यास ले सकते हैं? संन्यासी तो महापुरुष हो सकते हैं। जिस कपड़े में है उसमें थोडी-सी गति करें कि पता न चले इस तरह से अलग होना है।

तो मेहता ने तीन 'ग' छोड़ा- गृहत्याग, ग्रहत्याग, गिरित्याग। ये महान चेतना अभी भी विलसित होती दिखती है। इसलिए अपने कवि ने कहा है-

हजो हाथ करताल ने चित्त चानक।
तळेटी समीपे हजो क्यांक थानक।

- राजेन्द्र शुक्ल

ऐसी नरसिंह मेहता की भूमि पर 'मानस-नागर' की कथा का समापन होने जा रहा है तब बाप! एक भी मुद्दा नहीं छोड़ता क्योंकि 'रामचरितमानस' में 'भुशुंडि रामायण' है उसमें इस तरह से पूरा किया है। भगवान का बाल चरित्र; भगवान विश्वामित्र के साथ गए वहां जनकपुर की पुष्पवाटिका में राम-जानकी का प्रथम मिलन। गौरवर्ण की जानकी ने महागौरी की स्तुति की वो प्रसंग। माँ भवानी आशीर्वाद देती है कि तुम्हारे मन में जो बसा है वो सांवरा तुझे प्राप्त होगा। दूसरे दिन गजपंकजनाल की तरह भगवान राम धनुषभंग करते हैं और सीयाजू जयमाला पहनाती है और विवाह हुआ।

भगवान विवाह करके आये उसके बाद राज्याभिषेक की बातें होने लगी पर परमात्मा ने माँ कैकेयी

के वचनों को आदर देते हुए अवध का त्याग करके वन का राज कबूल किया। भगवान चित्रकूट में निवास करते हैं।

भेजा। भगवान हनुमान को मुद्रिका देते हैं।

अभियान आगे बढ़ता है। जंगल में सबको प्यास लगी। स्वयंप्रभा मिली। समुद्र के किनारे संपाति मिला। एक वस्तु निश्चित हुई कि सीताजी समुद्रतट से शतजोजन दूर लंका में अशोकवाटिका में बैठी है। जामवंत के आह्वान से हनुमानजी पर्वताकार बनकर शतजोजन सागर को लांघते हैं। लंका में प्रवेश किया है। विभीषण के साथ मुलाकात हुई; उन्हों ने सीतादर्शन की युक्ति बताई। हनुमानजी जानकी के पास पहुंचे। बीच में रावण आया। जानकीजी बहुत दुःखी है। हनुमानजी ने मुद्रिका फ़ेंकी। माँ और पुत्र का मिलन हुआ। आशीर्वाद दिया है। राक्षसों को निर्वाण दिया। हनुमानजी महाराज प्रपंच को, लंका के उपर की चमक को जलाते हैं। समुद्र में स्नान करके माँ के पास आते हैं, चूडामणि लेकर राम के पास पहुंचे हैं।

प्रभु ने सुग्रीव से कहा, अब तैयारी करो। भगवान की सेना ने प्रस्थान किया। सेना समुद्र के किनारे आई। भगवान राम समुद्र से रास्ता मागतें हैं। विभीषण भगवान की शरण में आता है। प्रभु तीन दिन अनशनव्रत करते हैं। समुद्र के कोई जवाब न देने पर प्रभु ने थोड़ा बल प्रयोग किया। ब्राह्मण का रूप लेकर समुद्र प्रभु के शरण में आया और कहा कि मुझे माफ़ कीजिए; आप सेतु बांधे। सेतु बांधा गया। प्रभु कहते हैं, ये उत्तम धरा है। मेरी इच्छा है कि यहां शंकर की स्थापना हो। ऋषि-मुनियों को बुलवाया। वेदमंत्रों का उच्चारण हुआ। भगवान रामेश्वर की स्थापना हुई। त्रिभुवन में जय जयकार हुआ।

जगत में ऊंचे मंदिर बहुत हैं और बनने चाहिए। इस मंदिरों की ध्वजा को नमन करता हूं पर आडा मंदिर कोई हो तो सेतुबंध है। ध्वजा फरकनी चाहिए। फड़फड़नी नहीं चाहिए। बहुत-से देवस्थानों पर ध्वजा फरकती नहीं, फड़फड़ाती है; जहां प्रसाद बिकता है! जहां मंदिर में सबको आश्रय मिलता हो, आराम मिलता हो, औषधि और आरोग्य मिले वो आड़े मंदिर है, वैचारिक मंदिर है। सेतुबंध रामेश्वर का आशीर्वाद लेकर राम सामने के किनारे गए।

सुबेल पर भगवान का मुकाम। सामने काल आ गया पर रावण को डर ही नहीं! राम के सुबेल के सामने अपने लंका के अखाड़े में जाकर सोने के ज़ंजीरोंवाली खाट पर रावण मंदोदरी के साथ बैठा है। पूर्णिमा का चंद्रोदय हुआ। प्रभु ने बाण चलाकर महारस भंग किया। छत्र उड़ गया! रावण का मुकुट नीचे गिरा! वो समझ गया कि मेरे सिर अब सत्ता सुरक्षित नहीं है। जिसे मैंने नागर कहा है वो वालीपुत्र अंगद; परमचातुर्य उसका नागरत्व है, वो संधि का संदेश लेकर जाता है। संधि सफल नहीं हुई। युद्ध अनिवार्य हो गया है। एक के बाद एक राक्षस निर्वाण पा रहे हैं। कुंभकर्ण, इन्द्रजित वीरगति पाते हैं। अंत में रावण को निर्वाण देने के लिए इकतीस बाण प्रभु ने चढ़ाये। दस मुख,

बीस भुजा और इकतीसवां नाभि में स्थित मूलाधार चक्र का भेदन करता है। रावण की चेतना राम के चेहरे में विलीन हो

इकठ्ठा हुआ है वो एकहत्तर कुल तारनेवाले मेहता नागर के चरणों में समस्त कथा अर्पण करते हैं।

नरसिंह मेहता ने तीन वस्तु का त्याग किया। प्रथम त्याग है गृहत्याग। दूसरा त्याग है ग्रहत्याग। ग्रह अर्थात् प्रारब्ध को इस आदमी ने रासलीला के बाद मिटा दिया। कोई ग्रह विघ्न नहीं उसे। भजनानंदी आदमी का प्रारब्ध बदल जाता है। तीसरा त्याग है गिरित्याग। मांगरोळ गये वहां से गिरि दिखता होगा पर गिरि छोड़ा। तो आदित्याग गृहत्याग; मध्य त्याग है ग्रहत्याग, प्रारब्ध का त्याग; प्रारब्ध पीछे-पीछे चक्कर लगाता है! नरसिंह के प्रारब्ध को धो डाला; भजन क्या नहीं करता? और ये वास्ता था गिरि का, तलहटी का, दामाकुंड का, पर ऐसा लगा कि अंतिम आसक्ति भी छोड़नी चाहिए।

मानस-मुशायरा

कबीरा कुआ एक है, पनिहारी अनेक।
बरतन सब न्यारे भए, पानी सब में एक।।

धीरे धीरे रे मना, धीरे सब कुछ होय।
माली सींचे सो घडा, ऋतु आवे फल होय।
– कबीर

ना कोई गुरु, ना कोई चेला।
मेले में अकेला, अकेले में मेला।
– मजबूर साहब

तेरी खुश्बू का पता करती है।
मुझ पे एहसान हवा करती है।
मुझको इस राह पे चलना ही नहीं,
जो मुझे तुझसे जुदा करती है।
– परवीन शाकीर

मेरे बच्चों, दिल खोलकर तुम खर्च करो,
मैं अकेला ही कमाने के लिए काफ़ी हूं।
– राहत इन्दौरी

हजो हाथ करताल ने चित्त चानक।
तळेटी समीपे हजो क्यांक थानक।
– राजेन्द्र शुक्ल

तळेटी जतां एवुं लाग्या करे छे।
हजी क्यांक करताल वाग्या करे छे।
– मनोज खंडेरिया

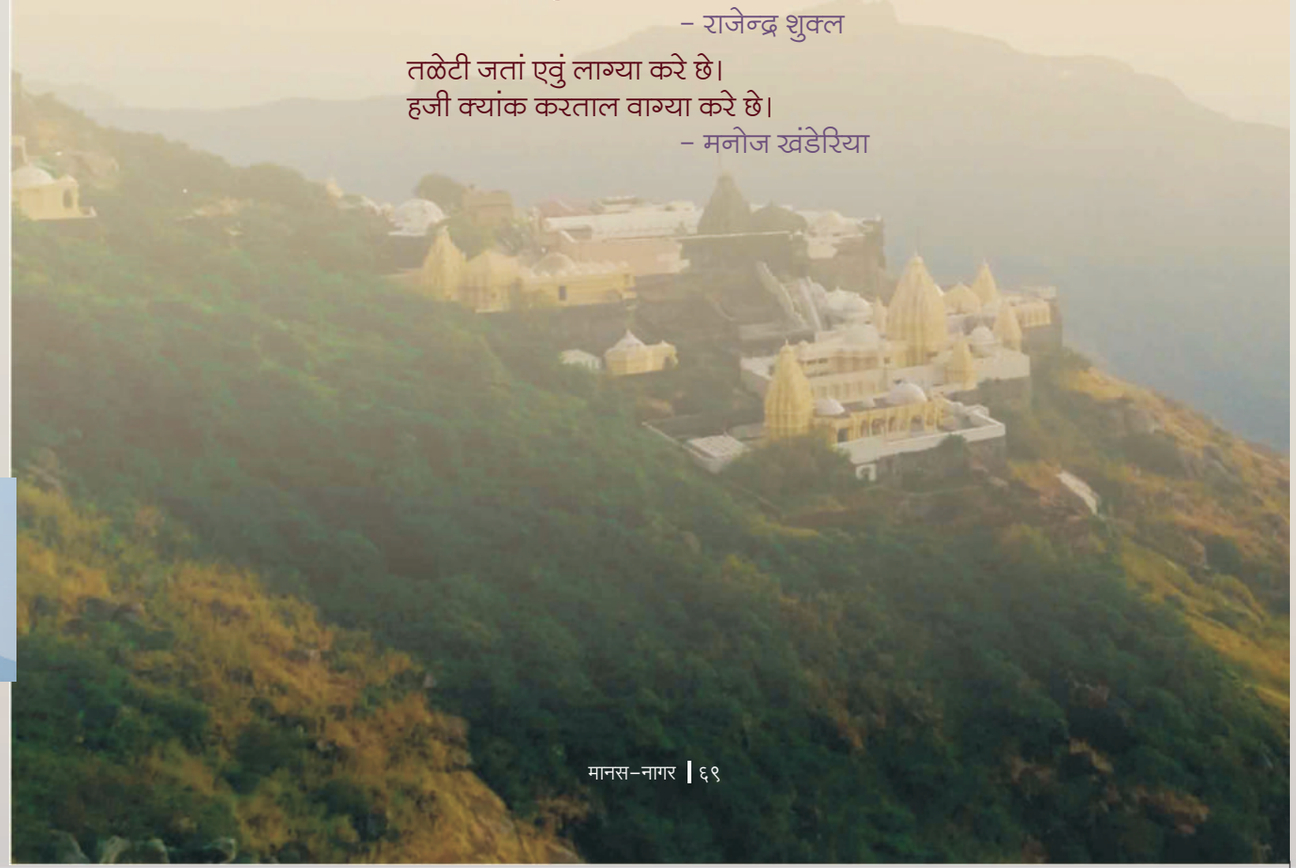

क्वचिदन्यतोऽपि

जो दूसरों को मान देता है और स्वयं अमानी रहता है उसकी वंदना होनी चाहिए

'शिशुविहार' के उपक्रम में आयोजित नागरिक सम्मान समारोह में मोरारि बापू का प्रसंगोचित वक्तव्य

सबसे बहले पुण्यश्लोक मानदादा की प्रसिद्धिमुक्त सेवामय चेतना को प्रणाम करता हूं। नागरिक सम्मान समारंभ प्रतिवर्ष शिशुविहार में इसी तरह से आयोजित होता है। इस समारंभ के वरिष्ठ आदरणीय श्री राजुभाई दवे; वैसे तो सभी के नाम से परिचित हूं, फिर भी किसी का नाम छूट न जाये। इतना अवश्य कहूंगा, जिसकी हमने वंदना की है, मानदादा के स्मरण के साथ; सबके कामों से ज़रूर परिचित हूं। नाम में तो क्या है? ऐसा एक पाश्चात्य विद्वान ने कहा है। वो भी अपनी जगह ठीक है। पर काम बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। हमने जिनकी वंदना की है वो सभी महानुभाव अपने अपने क्षेत्र में, अपनी क्षमता के अनुसार कितना महान काम कर रहे हैं! उसका सम्मान हो ये सभी को पसंद होगा। एक साधु के रूप में मुझे विशेष पसंद होगा।

मानदादा को वर्षों से पूज्य के रूप में जानता हूं। उनसे मिलना होता रहता है। उनके विचारों से, वज्र से कठोर और फूल से भी कोमल स्वभाव से सभी परिचित हैं। दादा के कारण इस संस्था से थोड़ा आत्मीय संबंध रहा है।

और इस संस्था के वर्तमान सभी वरिष्ठ आदरणीय लोग इस संबंध को लेकर प्रतिवर्ष इस कार्यक्रम में याद करते हैं और मैं आ सकता हूं इसका मुझे स्वयं निजी आनंद है। दूसरा यह कि मैं आ सकता हूं इसका कारण संस्था को मैं जो तारीख देता हूं उस तारीख को कार्यक्रम आयोजित करती है और इसी से इस अवसर का लाभ मुझे ये संस्था उदारतापूर्वक देती है। मैं संस्था को नमन करता हूं।

'विष्णुसहस्रनाम' में, उसके श्लोक में एक बहुत ही प्रसिद्ध वचन है, नाम है, 'अनामी मानदो मान्यो।' भगवान विष्णु के हजार नाम में ये बात कही गई है उसमें से तलगाजरडा को गुरुकृपा से ऐसा अर्थ सूझता है कि विधविध क्षेत्र में या अपने जीवन में कितने सारे वर्ष समर्पित करते हैं उसका सन्मान होना ही चाहिए और अपना समाज कर रहा है। परंतु किसका सन्मान होना चाहिए? किसकी वंदना होनी चाहिए? अपना नागर नरसिंह मेहता तो हमें ये समझा गया है कि 'सकल लोकमां सौने वंदे।' वैष्णव तो वो है जो कि प्रत्येक का वंदन करता है। उपनिषद तो ऐसा कहता है, 'सर्वम् खलु इदम् ब्रह्म।' ये समग्र जगत ब्रह्ममय है। हमारे गोस्वामी ऐसा कहते हैं कि 'सीय राममय सब जग जानी।' सभी वंदनीय हैं; अवश्य वंदनीय हैं परमात्मा का अंश होने के कारण। परंतु इसमें से जिन्होंने अपने-अपने क्षेत्र में सेवा का मंत्र लेकर कुछ न कुछ विशेष किया है उनकी वंदना होनी ही चाहिए। परंतु मूल ये स्तोत्र तो 'महाभारत' में है; आप सभी जानते हैं। इसमें से किसकी वंदना करेंगे? जगत संपूर्ण वंदनीय है, निःशंक। अंदर का भाव मेरे और आपके आखिरी व्यक्ति से लेकर परमतत्त्व से प्रारंभ कर सबकी ओर रखना ही पड़ेगा, पर किसका सम्मान होना चाहिए?

दो लक्षण हैं। 'अमानी', जो अपने निजी जीवन में बिल्कुल अमानी है। जिसने किसी दिन स्वयं को मान मिले इसके लिए कोई नेटवर्क नहीं बनाया। किसी से सिफारिशनामा नहीं लिया, जिस-जिस संस्था के वरिष्ठों के साथ संबंध होने के कारण कि ये सिफारिश करेंगे तो ऐसा होगा। इन सभी अनुभवो में से मैं निकला हूं इसलिए कह रहा हूं। बहुत से लोग ऐसा कहते हैं कि बापू, आप एक पत्र लिख दीजिए तो मुझे पद्मश्री मिल जाए। मैंने कहा, इससे अच्छा मैं तुझे पूरा तालाब ही दे दूं तो! तुझे कमल खिलाना आता हो तो अनेक कमल खिला सकेगा। और पूरा ऐसा कमल का सरोवर है वो परमपुरुष भगवान राम। 'नव कंज लोचन कंज मुख कर कंज पद कंजारुणम्।'

नानकभाई, हमारे बुधाभाई मेरे परम स्नेही; उनमें भी थोड़ा मानबापा का स्वभाव है सही! बहुत सुधारें! नहीं तो देते हैं सही पर घघोल कर देते हैं! पक्का करके देते हैं! इन सभी वरिष्ठों के कारण इस संस्था से संबंध रहा है। कदाचित् बामणा की कथा में, अपने स्मर्थ साहित्यकार, शब्द-उपासक उमाशंकरबापा जोशी की भूमि में जब कथा की, या उससे पहले, मुझे मालूम नहीं, मैंने कहा कि मैं सभी समारंभों में न आऊं तो बुरा मत लगाना। निवृत्ति तो नहीं पर 'अब मैं बहुत नाच्यो गोपाल।' इसलिए मैंने कहा था कि अब लग्न और इसमें-उसमें नहीं आऊंगा। और फिर भी मेरी इच्छा होगी तो मैं स्वतंत्र हूं, मैं जाऊंगा। ये संस्था मुझे जब तक बुलायेगी तब तक आऊंगा, क्योंकि मुझे मानभाई दादा के खातिर यहां आना पसंद है। और उनके सभी आदर्शों, विचारों को लेकर ये वरिष्ठ आदरणीय लोग कार्य कर रहे हैं। मानदादा अर्थात् कैसा?

वो सबको कहता है, हम मझे में है।
या तो वो फ़कीर है या वो नशे में है।

ऐसा दो ही हो सकता है। पूछो कि कैसे हो? या तो वो साधुचरित फ़कीर है। वो अखंड आनंद में जी सकता है। दादा एक फ़कीर जैसा जीवन जीये हैं।

बहुत से लोग आते हैं। यहां के लिए भी आते हैं कि बापू, आप बुधाभाई को कहो, बुधाभाई फलाने को कहें। मैं कहता हूं, भाई, मेरा ये काम नहीं है। मैं तो जिसकी वंदना होती हैं उसको वंदन करने जाता रहता हूं। आप गलत जगह आते हो! किसका सम्मान करना? किसी की

सिफ़ारिश से जिसको सन्मानित होना है उसकी अमुक कुशलता के कारण वो जमा लेता है सबकुछ! तो किसका सम्मान करना चाहिए? 'महाभारत'कार व्यास का वचन है कि हृदय में अन्दर के कोने से जो अमानी है, जिसको अपनी सेवा के बदले में किसी सम्मान की भूख नहीं है वो सम्मान के पात्र है। कितना महान पवित्र शब्द है 'अमानी।' हमारे 'रामचरितमानस' में भी 'महाभारत' के इस शब्द को तुलसी ने पकड़ा है-

सबही मानप्रद आपु अमानी।

जो सबको मान देता है, हृदय से मान देता है और स्वयं अमानी रहता है। भगवान व्यास कहते हैं, जो अमानी है; जिसको सन्मान स्वीकारते हुए परमतत्त्व याद आता है कि जिसने मुझको निमित्त बनाया है; अन्दर पूर्णतः संकोच होता है वो सन्मान के योग्य है।

दूसरा, जो स्वयं दूसरे को सम्मान देता रहता है; वो मानद होता है; दूसरे को मान देते रहता है। छोटे-से छोटे व्यक्ति से लेकर प्रत्येक क्षेत्र में जो होता है। हां, अवलोकन अवश्य करता है, निंदा नहीं करता। नरसिंह मेहता ने मना किया है।

निंदा न करे केनी रे।

अवलोकन ज़रूर करता है, अपना दृष्टिकोण अवश्य रखता है पर हृदय में प्रत्येक के प्रति मान का भाव होता है। ये दो ही लक्षण; ये समाज में वंदना के लिए मान्य हैं, योग्य हैं। दूसरी किसी भी आचारसंहिता की ज़रूरत नहीं; दूसरे किसी भी संविधान की ज़रूरत नहीं है कि किसको सम्मान दिया जाये? क्यों दिया जाये? वो भी ज़रूरी है, मैं समझता हूं। पर ऐसी कोई संस्था, साधुचरित संस्था, उसके मूल में एक ऐसा व्यक्ति होता है जो किसी को भी, कभी भी, किसी भी समारंभ में, कैसे भी कड़वे शब्दो में डांट सके! इसका मुझे खुद का अनुभव है। फिर कभी डर लगता है कि इसमें कहीं अपनी भी बारी न आ जाये! पर हृदय में सही दुर्भाव नहीं। ऐसी संस्था में जब अमुक क्षेत्र के सेवाकर्मियों को मान्य गिना जाता है, उनकी वंदना करने का उमंग खड़ा हो रहा हो, वो ऐसी साधुचरित संस्था के लिए बिल्कुल योग्य है।

विशेष कुछ नहीं कहते हुए अपनी प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। वर्ष में दो-तीन बार ये वरिष्ठ आदरणीय मेरे पास आते हैं। किसी भी दिन दबाव नहीं देते कि यही तारीख दीजिए। जब कहता हूं तब फिर आते हैं। ये कोई अच्छा दिखाने के लिए नहीं कहता, इन बुझुर्गो के साथ, साहित्यकारों के साथ बैठ-बैठकर मैं भी थोड़ा सीख गया हूं! पर ऐसी बात नहीं है। मैं 'अवसर' शब्द को मानता हूं। मेरे लिए 'अवसर' शब्द वैष्णवी शब्द है; वल्लभी शब्द है, पुष्टीय शब्द है।

अवसर फरी नहीं आवे आवा।
वल्लभ-गुण गावा ने गावा।

मेरे लिए ये अवसर है। और इसलिए आप इस अवसर में साक्षी बनाने के लिए अनुकूलता कर देते हैं इसके लिए मैं अपनी बहुत प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। निन्याबे प्रतिशत मैं आता रहूंगा; आपको जहां तक अभाव नहीं आयेगा तब तक।

बाप! मैं अपनी बहुत ही प्रसन्नता व्यक्त करता हूं। जिनकी-जिनकी हमने वंदना की उन सबका अपने-अपने क्षेत्र में रहकर लोकजागृति का, लोकसेवा का जो-जो कार्य है उन सबको भी मेरा वंदन है। आप सभी को भी मेरा प्रणाम। 'सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः।' इस भाव के साथ सभी को प्रणाम। बहन हमेशां मंच का संचालन करती हैं, वैसे हमारे गांव की बेटी है; हमारे तलगाजरडा की पुत्रवधू है इसलिए हमारी बेटी है। हमेशां सात्त्विक संचालन करती है। इसको भी में खूबखूब अभिनंदन देता हूं। पुनः आप सभी को प्रणाम। जय सियाराम।

शिशुविहार, भावनगर (गुजरात) में 'नागरिक सन्मान समारोह-२०२१' के प्रसंग में प्रस्तुत वक्तव्यः ता. १७-१-२०२१)

गार्गी वोरा

भद्रायु वछराजानी

धैर्या मांकड

मार्गी हाथी

निधि धोळकिया पोटा

हर्षल मांकड

धर्मेश-हेमल-शीतल नाणावटी

काजल ओझा वैद्य

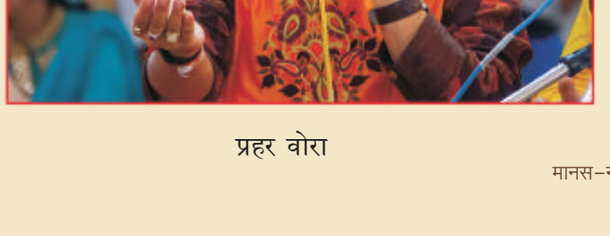

गाथा पोटा

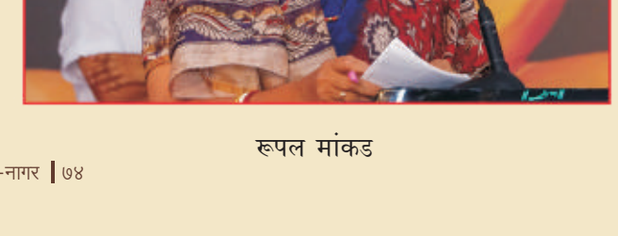

जय वसावडा

प्रहर वोरा

रूपल मांकड

पीषूय दवे

जवाहर बक्षी

दीपक जोशी

ज्वलंत छाया

ध्वनि वछराजानी

राधा मेहता

ग्रंथ–विमोचन

नाट्य–प्रस्तुति : कुंवरबाईनुं मामेरुं

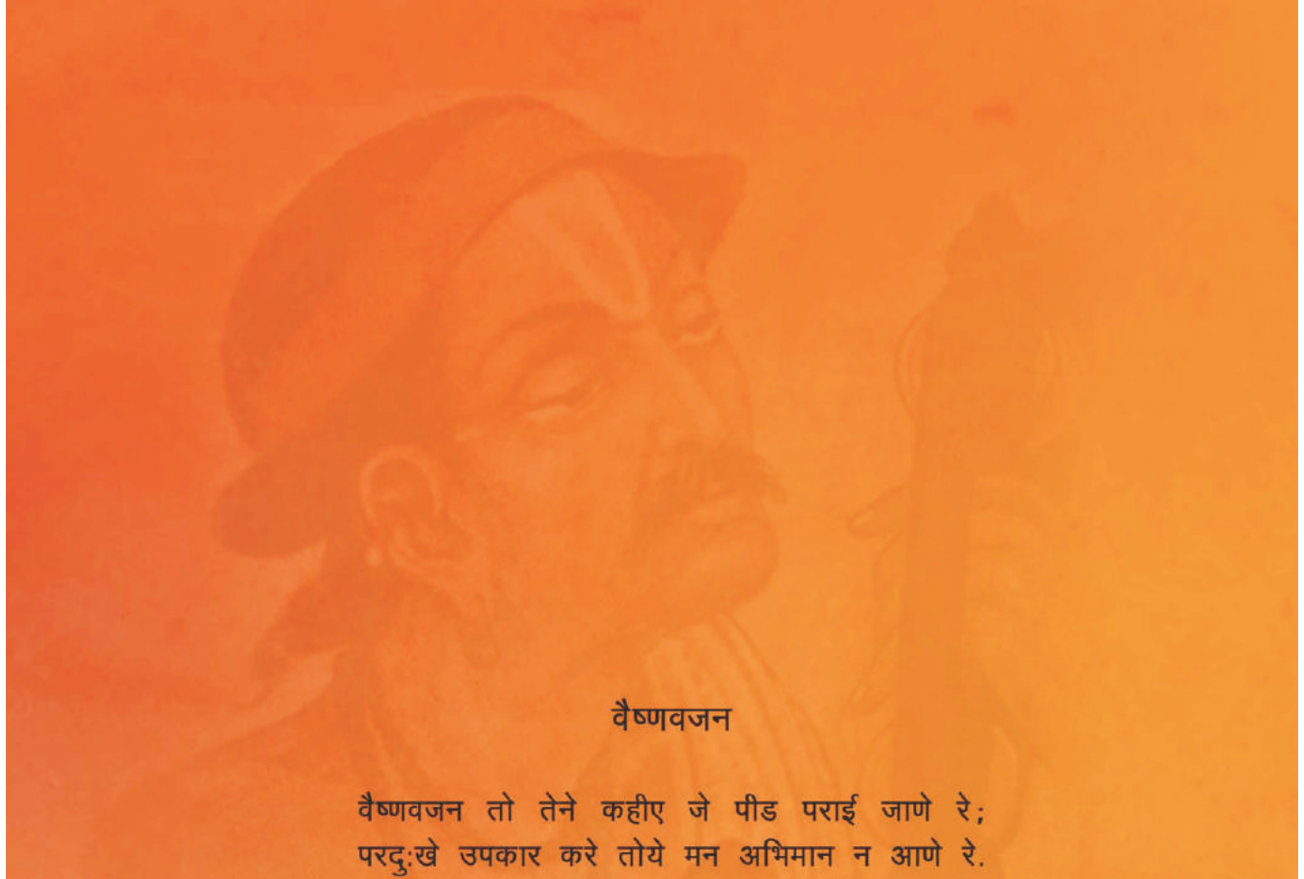

वैष्णवजन

वैष्णवजन तो तेने कहीए जे पीड पराई जाणे रे;
परदुःखे उपकार करे तोये मन अभिमान न आणे रे.

सकळ लोकमां सहुने वंदे, निंदा न करे केनी रे;
वाच-काछ-मन निश्चल राखे, धन्य धन्य जननी तेनी रे.

समदृष्टि ने तृष्णा त्यागी, परस्त्री जेने मात रे;
जिह्वा थकी असत्य न बोले, परधन न झाले हाथ रे.

मोह-माया व्यापे नहि तेने, दृढ वैराग्य तेना मनमां रे;
रामनाम-शुं ताळी लागी, सकळ तीरथ तेना तनमां रे.

वणलोभी ने कपटरहित छे, काम-क्रोध जेणे मार्या रे;
भणे नरसैंयो: तेनुं दर्शन करतां कुळ एकोतेर तार्यां रे.

-नरसिंह मेहता

॥ जय सीयाराम ॥